प्रकाशक
मिरथा प्रकाशन
जहानाबाद (गया)

•

•

प्रथम संस्करण १९६५

•

मूल्य साढ़े सात रुपये
(७·५)

•

मुद्रक :
यूनाइटेड प्रेस, पटना
और
कालिका प्रेस, पटना

प्रातः स्मरणीय आचार्य

भिक्षु श्री जगदीश जी काश्यप

प्रख्यात बौद्ध महापण्डित, त्रिपिटकाचार्य,

संस्कृत-पालि-प्राकृत-हिन्दी भाषाओं के मर्मज्ञ

विद्वान्, मगही-साहित्य-संस्कृति

के मूर्त स्वरूप

के

चरण-कमलों में

सादर सविनय

समर्पित ।

प्राक्कथन

डा० संपत्ति अर्याणी में मेधा और अध्यवसाय का श्लाघ्य समन्वय है। उच्चतर अध्ययन में व्याप्त होकर उन्होंने मगही का भाषाशास्त्रीय अनुशीलन किया और अपने अनेक वर्षों के अनुसंधान के परिणामस्वरूप जो प्रबंध प्रस्तुत किया, उस पर उन्हें पटना विश्वविद्यालय से डी० लिट् की उपाधि मिली। उन्होंने जिस निष्ठा एवं मनोयोग से शोध-कार्य किया है उससे मैं परिचित हूँ। मुझे विश्वास है कि उनका शोध ऐतिहासिक महत्त्व का माना जायगा और भावी अध्येताओं तथा अनुसंधाताओं का मार्ग-निर्देशन करेगा।

अपने अनुसंधान के क्रम में संपत्ति जी ने मगही का गंभीर विवेचन-विश्लेषण किया है और उसके फल स्वरूप मगही का प्रथम वैज्ञानिक व्याकरण प्रस्तुत कर सकी हैं। इसके प्रकाशन से एक चिरत्य अभाव की पूर्ति होगी। मैं संपत्ति जी को, उनके महत्त्वपूर्ण शोध के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और उसके व्याकरणांश के प्रकाशन का हृदय से स्वागत करता हूँ।

पटना—५,
६-६-१९६४

देवेन्द्रनाथ शर्मा
आचार्य तथा अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय

निवेदन

मगही भाषा का प्रथम विस्तृत व्याकरण आप महानुभावों के समक्ष प्रस्तुत है। इसके पूर्व केवल डॉ० ग्रियर्सन ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया, भाग २, जिल्द ५" तथा "सेवन ग्रामरस् ऑफ दी डायलेक्ट ऐण्ड सब डायलेक्ट ऑफ दी बिहारी लैंग्वेज, भाग—३" में मगही भाषा का अत्यन्त संक्षिप्त वैयाकरणिक अध्ययन प्रस्तुत किया था। उन्हें संपूर्ण मगही क्षेत्र के सर्वेक्षण का अवसर सम्भवतः प्राप्त न हो सका था और जितने बड़े क्षेत्र का सर्वेक्षण वे कर पाये थे, उसमें प्रचलित विभिन्न शब्द-रूपों के परस्पर साम्य-रखने वाले प्रतिनिधि उदाहरणों को दृष्टिपथ में रख कर उन्होंने मगही-भाषा के कतिपय वैयाकरणिक नियम सामने रखे थे। अत्यन्त संक्षिप्त एवं अपूर्ण होकर भी डॉ० ग्रियर्सन द्वारा किया गया यह प्रथम प्रयास महत्त्वपूर्ण एवं अभिनन्दनीय था और इसके श्रेयोभागी वे हमेशा बने रहेंगे।

मगही भाषा के व्याकरण का इतने विस्तृत रूप में अध्ययन प्रथम बार ही प्रस्तुत किया जा रहा है। इस व्याकरण की लेखन-पद्धति सामान्य हिन्दी व्याकरण-पुस्तकों की लेखन-पद्धति से भिन्न रही है। व्याकरण में धीरे धीरे वैज्ञानिकता का समावेश होता जा रहा है और उसकी अपनी एक निश्चित शब्दावली (Terminology) हो गई है। इस शब्दावली का ज्ञान प्रस्तुत ग्रंथ के पाठकों को पूर्वार्जित है, ऐसा मान लिया गया है और व्यर्थ के पृष्ठ नहीं रंगे गये हैं।

'मगही ध्वनि-समूह' और 'मगही-व्याकरण' के अन्तर्गत संज्ञा, लिङ्ग, प्रत्यय, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, सहायक क्रिया, वाच्य आदि पर विचार करते समय अधिक से अधिक प्रामाणिक सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है एवं विश्लेषणात्मक निदर्शन प्रस्तुत करते समय अधिकाधिक उदाहरण दे दिये गये हैं। मातृभाषा मगही रहने के कारण श्रम का अवकाश कम ही रहा है।

इस मगही व्याकरण में अनेक नियमों के विश्लेषण में उदाहरण-स्वरूप आये विभिन्न रूप-भेदों से जहाँ मगही भाषा की शब्द-समृद्धि का परिचय मिलेगा, वहाँ वाग्व्यवहार के क्षेत्र में मगही-भाषियों के मुक्ति प्रेम की भी झलक मिल सकेगी।

पूर्वी मगही का व्याकरण अलग से प्रस्तुत किया गया है। इसकी अधिकांश सामग्री का श्रेय डॉ० ग्रियर्सन को ही है। इन पंक्तियों की लेखिका उक्त सामग्री सञ्चयन के लिए उनकी ऋणी है।

मगही-व्याकरण के साथ ही संक्षिप्त मगही-शब्दकोश भी प्रस्तुत है। शब्दों के चयन में इस बात का ध्यान रखा गया है कि मगही-भाषा के वे खास अपने शब्द हों और अन्य भगिनी भाषाओं में मिलते हुए भी मगही में अपनी विशिष्ट व्यंजना रखते हों। दूसरे शब्दों में वे विशाल मगही-शब्द भाण्डार के कतिपय प्रतिनिधि पद हैं और इस भाषा की क्षेत्रीय विशेषताओं से युक्त हैं। यदि प्रत्येक भाषा के ऐसे ही प्रतिनिधि क्षेत्रीय शब्दों

का संकलन प्रस्तुत किया जा सके और उसे राष्ट्रभाषा हिन्दी अपना ले, तो उसके परिणाम-स्वरूप उसकी अभिव्यंजना-सामर्थ्य में अप्रत्याशित वृद्धि दृष्टिगोचर होगी और इसके सम्वेदन के नवीन स्तरों का बोध भी सुलभ हो सकेगा। इस संक्षिप्त मगही शब्दकोश में इस दृष्टि से देखने पर अनेक शब्द ध्यान आकृष्ट करते मालूम पड़ेंगे।

मगही-भाषा के वैयाकरणिक स्वरूप एवं साहित्य पर कार्य करने की प्रेरणा प्रातःस्मरणीय आचार्य डॉ विश्वनाथ प्रसाद (निदेशक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली) से मिली थी। बाद उनका सत्परामर्श एवं निर्देशन भी सर्वदा मिलता रहा। भदन्त आचार्य भिक्षु जगदीश काश्यप, स्व महापंडित राहुल सांकृत्यायन, भाषाचार्य आदरणीय डॉ उदयनारायण तिवारी एवं पं० श्री आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा से जो अपार प्रोत्साहन मुझे मिला है, वह अविस्मरणीय है। अभी आचार्य शर्मा ने प्रस्तुत ग्रंथ का प्राक्कथन लिख कर जो असीम कृपा की है उसके लिए मैं आभारी हूँ। इन सभी महानुभावों को मेरी मौन श्रद्धाञ्जलि समर्पित है।

इस क्रम में डॉ शिवनन्दन प्रसाद (उपनिदेशक केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली), स्व श्री कृष्णदेव प्रसाद (एडवोकेट, पटना), डॉ विन्ध्येश्वरी प्रसाद सिन्हा (अध्यक्ष प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग, पटना विश्वविद्यालय एवं अध्यक्ष मगही मंडल, बिहार) डॉ कामेश्वर प्रसाद अम्बष्ठ (कुल सचिव, पटना विश्वविद्यालय), डॉ राजाराम रस्तोगी (प्राध्यापक, पटना विश्वविद्यालय), स्व ब्रजदेव नारायण (एडवोकेट, पटना हाईकोर्ट), डॉ धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री (भूतपूर्व, अतिरिक्त जन-शिक्षा निदेशक बिहार) डॉ दुखन राम (भूतपूर्व, प्राचार्य पटना मेडिकल कालेज एवं उपकुलपति बिहार विश्वविद्यालय) एवं डॉ सत्येन्द्र से, छोटों को सहज स्नेह के साथ प्राप्त होने वाले, जो सत्परामर्श मुझे मिले हैं उनके लिए, उनके प्रति एवं अन्यान्य सभी महानुभावों के प्रति, जिनसे किसी भी प्रकार की सहायता मुझे मिली है, मैं हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

अन्त में मैं सुधी पाठकों का ध्यान इस ग्रन्थ की कुछ त्रुटियों की ओर आकृष्ट करना चाहती हूँ। यह सच कि पर्याप्त सावधानी के बाद भी इसमें मुद्रण-सम्बन्धी कई अशुद्धियाँ रह गई हैं जिसके लिए मैं क्षमा चाहती हूँ। यों एक लघु शुद्धिपत्र भी ग्रन्थ में संलग्न कर दिया गया है, फिर भी वह अपूर्ण है। अगले संस्करण में इनका परिहार कर दिया जायेगा।

सम्पत्ति अर्याणी

दिसम्बर' ६४
राजेन्द्र नगर, पटना ४।

संकेत-सूची

अ०	=	अकर्मक
अ० क्रि०	=	अकर्मक क्रिया
अति०	=	अतिदीर्घ
अधि०	=	अधिकरण
अना०	=	अनादरवाचक
अ० पु०	=	अन्यपुरुष
आद०	=	आदरवाचक
अपा०	=	अपादान
उ०	=	उत्तर
उ० पु०	=	उत्तमपुरुष
ए०	=	एकवचन
ए० व०	=	एकवचन
कार०	=	कारक
क्रि०	=	क्रिया
द्वि०	=	द्वितीय
दी०	=	दीर्घ
दी० रूप	=	दीर्घ रूप
नि०	=	निर्बल रूप
प्र०	=	प्रश्न
प्र०	=	प्रथम
पृ०	=	पृष्ठ
प०	=	पक्ति
पु०	=	पुल्लिग
पु० रूप	=	पुल्लिग रूप
पूर्व०	=	पूर्वकालिक
पूर्ण०	=	पूर्ण क्रियाद्योतक
व० व०	=	बहुवचन
बहु०	=	बहुवचन
बो० सं० क्रि०	=	बोधक संयुक्त क्रिया
भवि०	=	भविष्यत्काल
भूत०	=	भूतकाल
म० पु०	=	मध्यमपुरुष
व्या०	=	व्याकरण
वर्त्त०	=	वर्त्तमानकाल
वि०	=	विकारी
विका०	=	विकारी
स्त्री०	=	स्त्रीलिग
स्त्री० रूप	=	स्त्रीलिंग रूप
स०	=	सकर्मक
सं० क्रिया	=	संयुक्त क्रिया
सबल	=	सबल
सम्प्र०	=	सम्प्रदान
सम्ब०	=	सम्बन्ध
सम्बो०	=	सम्बोधन
सं०	=	संक्षिप्त
स्तं०	=	स्तम्भ
हि०	=	हिन्दी
ह्र०	=	ह्रस्व
ह्र० रूप	=	ह्रस्व रूप

ध्वनि-संकेत

⊥ (अ)—ह्रस्व विलम्बित अथवा उदासीन स्वर का संकेत-चिह्न। यथा—हमनी। बेलनी। परधा।

ऽ (अऽ)—यह दीर्घ विलम्बित स्वर का लिपि चिह्न है। व्यञ्जनान्त अथवा स्वरान्त शब्दों के अन्त में आकर उनका यह विलम्बित उच्चारण प्रकट करता है। यथा—न ऽ। हैं ऽ। देख ऽ।

ॉ (ऑ) —यह स्वर 'आ' का ह्रस्व रूप है। उच्चारण में प्रायः यह 'अ' की तरह सुनाई पड़ता है। यथा—कॉटलक। लॉरसकर।

ि (इ) —अति ह्रस्व 'इ' स्वर। यथा—रसइ्। मतइ्।

ु (उ) —अति ह्रस्व 'उ' स्वर। यथा—कु्हो। हु्चे।

ॅ (ऍ) —ह्रस्वोच्चरित 'ए' स्वर। यथा—एकहरा। ऍको।

े (ए) —अति ह्रस्व 'ए' स्वर। यथा—ए्करे। से्करे।

ै (ऐ) —ह्रस्वोच्चरित 'ऐ' स्वर। यथा—ऐ ल्नो। मैं नहीं।

ो (ओ) —ह्रस्वोच्चरित 'ओ' स्वर। यथा—ओ हि। मरो रलक।

ौ (औ) —ह्रस्वोच्चरित 'औ' स्वर। यथा—बोलो लक्ष। सुनो सबद।

(अं) —यह अनुस्वार चिह्न है। इसका व्यवहार अपने वर्ग के किसी व्यंजन के पहले आने वाले अनुनासिक व्यंजन के बदले में होता है। यथा—संख (सङ्ख)। संपत (सम्पत)।

ँ (अँ) —यह अनुनासिक स्वर (चन्द्रबिन्दु) का संकेत चिह्न है। यथा—गाँव।

अन्य संकेत

√ —यह धातु का चिह्न है। यथा—मगही √कर्। √कर्।

> —यह शब्दों के रूप-परिवर्तन को बताने वाला चिह्न है। यथा—भीगल> भिगावल। अग्र>आँग।

< —यह व्युत्पन्न होने की स्थिति का सूचक चिह्न है।

= —सम समार्थ अर्थ के लिए प्रयुक्त चिह्न।

× —गुणात्मक स्थिति का बोधक चिह्न।

विषय-सूची

उपोद्घात

आधुनिक भारतीय भाषाओं में मगही का स्थान पृ०— १
मगही का उद्भव और विकास ... २— ८
आधुनिक मगही का उदय . ६—१०
मगही का नामकरण १०—११
मगही के अध्ययन की प्राचीन सामग्रियाँ . ११
मगही 'बोली' या 'भाषा' ११—१२
मगही का स्वतंत्र भाषात्व १२—१७
मगही भाषा की सीमाएँ .... १७—१८
मगही भाषा क्षेत्र १८
'आदर्श' का मानदंड . १८
पूर्वी मगही .. १८
मिश्रित मगही १८
आदर्श मगही क्षेत्र १६
पूर्वी मगही क्षेत्र .... १६—२०
मगही भाषियों की जनसंख्या ... २०—२१
विविध क्षेत्रों की मगही के रूप और उनका वर्गीकरण ... २१—२२
मगही क्रिया-रूपों की विशेषताएँ .. २२—२३
मगही शब्दकोश .. २४—२६

प्रथम खंड

प्रथम अध्याय

मगही के ध्वनि-समूह—१-८।

स्वर १, व्यंजन १, स्वर १-३, संयुक्त स्वर ३ ४, अनुनासिक स्वर ४ ५, व्यंजन ५ ६, संयुक्त व्यंजन ६, उपवर्ती स्वर (Concurrent Vowels) ६; स्वरों का संकोचन (Contraction) ६, उपधापूर्व स्वर का ह्रस्वीकरण (Shortening of antipenultimate Vowel) ७ ८, हलन्त—य् तथा व् ८।

द्वितीय अध्याय

मगही व्याकरण—९—८१।

विकारी शब्द (Declinable words)—

संज्ञा (noun) ९-१०, लिंग (Gender) १०-१३, वचन (Number) १३-१४, कारक (Case) १४–(अ) तद्भव पुलिंग आकारान्त संज्ञा १५· (आ) व्यंजनान्त पुलिंग संज्ञा १६-१८, सम्बन्धवाची प्रत्यय १८-१९।

सर्वनाम (Pronoun) १९-२०, सर्वनाम के रूप (अ) पुरुषवाचक २०-२१ : (आ) निजवाचक २२ (इ) निश्चयवाचक सर्वनाम २२-२३, (ई) सबंधवाचक सर्वनाम २४ (उ) प्रश्नवाचक २५ (ऊ) अनिश्चयवाचक सर्वनाम २६, सर्वनाममूलक विशेषण-रूप २७, सर्वनाममूलक विकारी सबंधकारक २८-२९, विशेषण वाचक सर्वनाम २९।

विशेषण (Adjectives) ३० (१) सार्वनामिक विशेषण ३० . (२) गुणवाचक विशेषण ३१ · विशेषण में लिंग के कारण रूपांतर ३१-३२ विशेषण में वचन के कारण रूपांतर ३२ तुलनात्मक विशेषण ३२-३३ (३) संख्यावाचक विशेषण (Numeral adjectives) ३३—(१) निश्चित-संख्यावाचक विशेषण ३३ (अ) पूर्णांक बोधक (Cardinal) ३४ (आ) अपूर्णांक बोधक (Fractional Numbers) ३४, क्रमवाचक (Ordinal) ३४-३५, आवृत्तिवाचक ३५, समुदायवाचक ३५, प्रत्येकबोधक ३५ · (२) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण (Indefinite Cardinals) ३५-३६ : (३) परिमाण-बोधक विशेषण (Quantitative Adjectives) ३६, गुणात्मक संख्यावाचक (Multiplicatives) ३६, ऋणात्मक संख्यावाचक ३६।

क्रिया (Verb) ३७, सकर्मक ३७, अकर्मक ३७-३८, क्रिया का वाच्य (Voice) ३८-३९, क्रिया का अर्थ (Mood) ३९, क्रिया के काल (Tense) ३९-४०। 'अर्थ' और 'अवस्था' के अनुकूल काल-भेद ४०-४१। क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन ४१। कृदन्त ४२ · विकारी कृदन्त ४२-४३, अविकारी (अव्यय) ४३-४४। क्रिया की काल-रचना ४४ · साधारण काल ४५, सयुक्त काल ४५-४६, साधारण काल ४६ : निश्चयार्थ ४७, सम्भावनार्थ ४८, आज्ञार्थ ४८, सामान्य संकेतार्थ ४९।

सहायक क्रियाएँ (Auxiliary Verbs) ४६; अपूर्णार्थक सहायक क्रिया ४ पूर्णार्थक सहायक-क्रिया ५ –५२; वर्तमानकालिक कृदन्त ५२। कर्तृ वाच्य ५३ सकर्मक क्रिया (अ) साधारणकाल ५३–५५, (आ) संयुक्त काल ५५–५६। कर्तृ वाच्य : अकर्मक क्रिया ५६–६ ।

स्वरान्त धातुएँ ६१; आकारान्त धातु के क्रिया–रूप ६१–६३; √'पा' धातु की रूपावली ६३–६४ ईकारान्त धातु √'पी' की रूपावली ६४–६५; ऊकारान्त धातु √'चू' की रूपावली ६५–६६; आकारान्त धातु √'दा' की रूपावली ६६–६७।

अनियमित क्रियाएँ ६७ √'कर' ६७, √'मर' ६८, √'जा' (जाना) ६९; √'आ', √'ला' √'दे' ६९–७ । कर्मवाच्य ७१–७१।

प्रेरणार्थक क्रिया (Causative) ७३–७४।

संयुक्त क्रिया ७६ : (१) क्रियार्थक संज्ञा के मेल से बनी हुई संयुक्त क्रियाएँ ७६–७६; (२) कृदन्तों के मेल से बनी हुई संयुक्त क्रियाएँ ७९–८ ।

अव्यय (Indeclinable) ८ : (१) क्रिया विशेषण (Adverbs) ८ –८१, (२) संबंध सूचक (Preposition) ८१, (३) समुच्चयबोधक (Conjunction) ८१, (४) विस्मयादि बोधक (Interjection) ८१।

तृतीय अध्याय

पूर्वी मगही का व्याकरण पृ० ८२–८६

उच्चारण ८२ संज्ञा ८२–८३, सर्वनाम ८३–८४; क्रिया ८४–८६।

द्वितीय खंड

मगही शब्दकोश १–६६
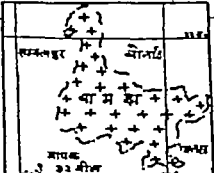
———

उपोद्घात

उपोद्घात

आधुनिक भारतीय भाषाओं में मगही का स्थान

'मगही' भाषाओं के 'भारोपीय परिवार' के भारत ईरानी वर्ग की भारतीय शाखा की एक सदस्या है। भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण डॉ० ग्रियर्सन एव डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी ने यद्यपि परस्पर भिन्न ढग से किया है, तथापि दोनों ही वर्गीकरण में एक वर्ग 'पूर्वी' या 'प्राच्य' है, जिसके अन्तर्गत 'विहारी' का परिगणन किया जाता है। 'विहारी' तीन स्वतत्र भाषाओं का सम्मिलित सज्ञा-बोध है। ये तीन भाषाएँ हैं—मगही, मैथिली और भोजपुरी।

---

१ (क) डॉ० ग्रियसन ने आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण निम्नांकित ढग से प्रस्तुत किया है —

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ।

वाहरी उपशाखा
(उत्तर-पश्चिमी समुदाय)
१ लहदा या पश्चिमी पजावी
२ सिन्धी
(दक्षिणी समुदाय)
३ मराठी
(पूर्वी समुदाय)
४ उड़िया
५ विहारी (मगही, मैथिली, भोजपुरी)
६ वगला
७. असमिया

मध्य-उपशाखा
(मध्य-समुदाय)
८ पूर्वी हिन्दी

भीतरी उपशाखा
(भीतरी समुदाय)
९ पश्चिमी हिन्दी
१० पजावी
११ गुजराती
१२ भीली
१३ खानदेशी
१४ राजस्थानी
(पहाड़ी समुदाय)
१५ पूर्वी पहाड़ी या नेपाली
१६ मध्य या केन्द्रीय पहाड़ी
१७ पश्चिमी पहाड़ी,

—Linguistic survey of India, vol, I, Part I, P 120

(ख) डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी ने ग्रियर्सन के वर्गीकरण की आलोचना करते हुए भाषाओं की विकास-परम्परा के आधार पर "आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं" का निम्नांकित पाँच वर्गों में विभाजन किया है —१ उदीच्य २ प्रतीच्य, ३ मध्यदेशीय ४ प्राच्य (पूर्वी) एव ५ दाक्षिणात्य। विहारी 'प्राच्य वर्ग' के अन्तर्गत आती है।

—Origin and Development of Bengali Language

मगही का उद्भव और विकास

मगही भाषा का विकास मागधी प्राकृत से हुआ। प्राकृतों में मागधी प्राकृत का विशिष्ट स्थान है, क्योंकि प्राच्य प्रदेश की अनेक भाषाओं की यही जननी है। मागधी मगध जनपद की भाषा थी। यह मूलतः उन आर्यों की भाषा थी, जिन्हें डॉ॰ हार्नलि और डॉ॰ ग्रियर्सन ने बाहरी आर्यों के नाम से अभिहित किया है। मगध इन आर्यों का केन्द्रस्थल था। बुद्ध का भ्रमणक्षेत्र काशी, कोशल विदेह और मगध में फैला था। वहाँ मागधी ही लोक-व्यवहार की भाषा थी। विद्वानों का अनुमान है कि बुद्ध ने अपने उपदेश मागधी में ही दिए होंगे, जिनका संग्रह बाद में मागधी में ही मूल त्रिपिटक में हुआ होगा। (बाद में इनका अनुवाद पालि तथा अन्य जनपदों की भाषा में हुआ होगा।[१])

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में ही मगही का अपना क्षेत्र सरयू से काशी तथा कर्म नाशा से कलिंग तक था।[२] बौद्ध तथा जैनमत के प्रचार की सर्वमान्य स्वीकृत भाषा होने के अतिरिक्त यह पूर्वी (मागधी) बोली सम्राट् अशोक की राजभाषा भी थी।[३] राज भाषा होने के कारण मागधी समस्त उत्तर भारत में सम्मानित हुई। इसी मान सम्मान का परिणाम था कि नाटककारों ने राजपुत्रों और अन्य महत्त्वपूर्ण पात्रों की भाषा को मागधी रखना शुरू किया।

मागधी के प्राचीनतम नमूने उड़ीसा बिहार और उत्तर प्रदेश में प्राप्त सम्राट् अशोक के शिलालेखों में मिलते हैं। उपर्युक्त प्रदेशों के शिलालेखों के अतिरिक्त उत्तर पश्चिम में प्राप्त मानसिरा शिलालेख देखा जा सकता है। इसमें भी प्राच्य प्रभाव वर्तमान है। प्राच्य भाषा के इस प्रभाव का कारण विद्वान् यह मानते हैं कि अशोक के ये अभिलेख पहले प्राच्य भाषा में ही लिखे गये होंगे और तब विभिन्न जनपदों में वहाँ की स्थानीय बोलियों में उनका रूपान्तर हुआ होगा। ऐसा स्वाभाविक भी था। अशोक मगध सम्राट् था। मगध की भाषा ही उसकी मातृभाषा थी। उसीमें उसका अपने धर्मोपदेशों को सर्वप्रथम लिखवाना स्वाभाविक था। परन्तु उसका उद्देश्य धर्मप्रचार था। परिणामतः यह मागधी में लिखवाये गये अपने धार्मिक उपदेशों को स्थानीय भाषाओं में

१ इस विषय में डॉ॰ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का कहना है—"बुद्ध भगवान के उपदेशों का संकलन सर्वप्रथम इसी पूर्वी बोली (मागधी) में होकर बाद में उनका अनुवाद पालि भाषा में, जो कि मध्यदेश की प्राचीन भाषा पर आधारित एक प्राचीन भाषा थी, हुआ। इस मत की पुष्टि करते हुए पारिस के स्वर्गीय सिल्वँ लेवी (Syl ain Levi) तथा बर्लिन के प्राध्यापक हाइनरिख ल्यूडर्स (Heinrich Lueders) जैसे ख्याति प्राप्त विद्वानों ने इसकी सत्यता के अनुकूल बलशाली प्रमाण दिए हैं।"

—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, पृ॰ १४१-५।

२ राहुल सांकृत्यायन—पुरातत्त्व निबन्धावली: मागधी का विकास। पृ॰ १८।

३ डा॰ सु॰ चाटुर्ज्या—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी। पृ॰ १४।

रूपान्तरित करवा देता था, जिससे जनसाधारण अपनी ही भाषा में धर्मोपदेश ग्रहण कर सकें।

ईसा की पहली शताब्दी तक की मागधी प्राकृत का रूप रामगढ़ पहाड़ की गुफाओं (सरगुजाराज्य) और बोध गया आदि के प्रकीर्ण लेखों में उपलब्ध होता है। ईसा की दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी तक की मागधी प्राकृत का रूप यत्र तत्र संस्कृत नाटकों में उपलब्ध होता है।

ईसा की दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी तक की साहित्यिक प्राकृतों के अध्ययन से उनमें हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों का पता चलता है। इस काल तक व्यंजन ध्वनियों में बहुत परिवर्तन हो गये थे। शब्द और धातुरूपों में सरलीकरण की प्रक्रिया चल रही थी। कारक और क्रिया का संबंध प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्द के साथ 'कारकाव्यय' एवं 'कृदन्त' रूपों के प्रयोग की प्रवृत्ति भी चल पड़ी थी। इस विकास के कुछ अद्भुत परिणाम देखने में आये। अब "रामाय दत्तम्" न कह कर "रामाए-कए (कृते) दत्तम्" अथवा "रामस्स केरक (कार्यक) घरम" कहा जाने लगा। ये ही कारकाव्यय आगे चल कर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में अनुसर्ग या परसर्ग के रूप में विकसित हुए। इस प्रकार भारतीय आर्यभाषा संश्लेषणात्मक से विश्लेषणात्मक होने लगी। मध्यकाल के द्वितीय पर्व तक आते-आते प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के शब्द और धातुरूपों की विविधता समाप्त हो गई।

प्राकृतों के विकास क्रम में समय पाकर वैयाकरणों ने साहित्यिक प्राकृतों के व्याकरण लिखने आरंभ किए। व्याकरण के नियमों में बंध जाने के कारण प्राकृतों का स्वाभाविक विकास रुक गया। इनकी भी वही अवस्था हुई, जो संस्कृत की हुई थी। इधर तो साहित्यिक प्राकृतों में साहित्य रचा जा रहा था और उधर जन-सामान्य की बोलचाल की भाषाएँ स्वाभाविक रूप से विकसित हो रही थीं। साहित्यिक प्राकृतों के विकास के रुक जाने के बाद ये बोलचाल की भाषाएँ और भी आगे बढ़ीं। इनकी ही संज्ञा "अपभ्रंश" हुई।

"अपभ्रंश" मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा और आधुनिक भा० आर्यभाषाओं के मध्य की कड़ी है। प्रत्येक "आधुनिक आर्यभाषा" अपभ्रंश की कड़ी पार करने के पश्चात् ही वर्त्तमान अवस्था तक पहुँची है।

अपभ्रंशकालीन साहित्य के आधार पर विद्वान् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ईसा की छठी शती में ही अपभ्रंश का प्रारंभ हो गया था। उस समय से ही अपभ्रंश में रचनाएँ उपलब्ध होने लगी थीं और तत्पश्चात् १२ वीं शताब्दी तक वे सर्जित होती रहीं। पर १२ वीं शती के अन्त तक यह 'अपभ्रंश' लोकभाषा न रह कर "साहित्यिक-भाषा" हो गई। लोकभाषा का स्थान देशी भाषा ने ले लिया था।

'अपभ्रंश' का जो साहित्य मिलता है, उसमें भाषागतभेद बहुत कम हैं। यह समस्त साहित्य एक ही परिनिष्ठित भाषा का है। परन्तु वैयाकरणों और विशेषतया

मगही का उद्भव और विकास

मगही भाषा का विकास मागधी प्राकृत से हुआ। प्राकृतों में मागधी प्राकृत का विशिष्ट स्थान है, क्योंकि प्राच्य प्रदेश की अनेक भाषाओं की यही जननी है। मागधी मगध जनपद की भाषा थी। यह मूलतः उन आर्यों की भाषा थी, जिन्हें डॉ० हार्नली और डॉ० ग्रियर्सन ने बाहरी आर्यों के नाम से अभिहित किया है। मगध इन आर्यों का केन्द्रस्थल था। बुद्ध का प्रमणक्षेत्र काशी, कोशल विदेह और मगध में फैला था। यहाँ मागधी ही लोक-व्यवहार की भाषा थी। विद्वानों का अनुमान है कि बुद्ध ने अपने उपदेश मागधी में ही दिए होंगे, जिनका संग्रह बाद में मागधी में ही मूल त्रिपिटक में हुआ होगा। (बाद में इनका अनुवाद पालि तथा अन्य जनपदों की भाषा में हुआ होगा।[1])

ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में ही मगही का क्षेत्र सरयू से कोसी तथा कर्म नाशा से कलिंग तक था।[2] बौद्ध तथा जैनमत के प्रचार की सर्वमान्य स्वीकृत भाषा होने के अतिरिक्त यह पूर्वी (मागधी) बोली सम्राट् अशोक की राजभाषा भी थी।[3] राज-भाषा होने के कारण मागधी समस्त उत्तर-भारत में सम्मानित हुई। इसी प्राप्त सम्मान का परिणाम था कि नाटककारों ने राजपुत्रों और अन्य महत्त्वपूर्ण पात्रों की भाषा को मागधी रखना शुरू किया।

मागधी के प्राचीनतम नमूने उड़ीसा बिहार और उत्तर प्रदेश में प्राप्त सम्राट् अशोक के शिलालेखों में मिलते हैं। उपर्युक्त प्रदेशों के शिलालेखों के अतिरिक्त उत्तर पश्चिम में प्राप्त मानसेरा शिलालेख देखा जा सकता है। इसमें भी प्राच्य प्रभाव वर्तमान है। प्राच्य भाषा के इस प्रभाव का कारण विद्वान् यह मानते हैं कि अशोक के ये अभिलेख पहले प्राच्य भाषा में ही लिखे गये होंगे और तब विभिन्न जनपदों में वहाँ की स्थानीय बोलियों में उनका रूपान्तर हुआ होगा। ऐसा स्वाभाविक भी था। अशोक मगध सम्राट् था। मगध की भाषा ही उसकी मातृभाषा थी। उसीमें उसका अपने धर्मोपदेशों का सर्वप्रथम लिखवाना स्वाभाविक था। परन्तु उसका उद्देश्य धर्मप्रचार था। परिणामतः यह मागधी में लिखवाये गये अपने धार्मिक उपदेशों को स्थानीय भाषाओं में

---

१ इस विषय में डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी का कहना है—"बुद्ध भगवान के उपदेशों का प्रवचन सर्वप्रथम इसी पूर्वी बोली (मागधी) में होकर बाद में उनका अनुवाद पालि भाषा में जो कि मध्यदेश की प्राचीन भाषा पर आधारित एक प्राचीन भाषा थी, हुआ। इस मत की पुष्टि करते हुए पारिस के स्वर्गीय सिल्वें लेवी (Sylvain Levi) तथा बर्लिन के प्राध्यापक हाइनरिख ल्यूडर्स (Heinrich Lueders) जैसे ख्यातिप्राप्त विद्वानों ने इसकी सत्यता के महत्त्वपूर्ण उदाहरण एवं प्रमाण दिए हैं।"

—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, पृ० १७४ । ८ ।

२ राहुल सांकृत्यायन—पुरातत्त्व निबन्धावली: मागधी का विकास। पृ० १८८।

३ डा० सु० चटर्जी—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी। पृ० १७४।

रूपान्तरित करवा देता था, जिससे जनसाधारण अपनी ही भाषा में धर्मोपदेश ग्रहण कर सकें।

ईसा की पहली शताब्दी तक की मागधी प्राकृत का रूप रामगढ पहाड़ की गुफाओं (सरगुजाराज्य) और बोध गया आदि के प्रकीर्ण लेखों मे उपलब्ध होता है। ईसा की दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी तक की मागधी प्राकृत का रूप यत्र-तत्र संस्कृत नाटकों में उपलब्ध होता है।

ईसा की दूसरी शताब्दी से छठी शताब्दी तक की साहित्यिक प्राकृतों के अध्ययन से उनमें हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों का पता चलता है। इस काल तक व्यंजन ध्वनियों में बहुत परिवर्तन हो गये थे। शब्द और धातुरूपों में सरलीकरण की प्रक्रिया चल रही थी। कारक और क्रिया का संबंध प्रकट करने के लिए संज्ञा शब्द के साथ 'कारकाव्यय' एवं 'कृदन्त' रूपों के प्रयोग की प्रवृत्ति भी चल पड़ी थी। इस विकास के कुछ अद्भुत परिणाम देखने में आये। अब "रामाय दत्तम्" न कह कर "रामाए-कए (कृते) दत्तम्" अथवा "रामस्स केरक (कार्यक) धरम" कहा जाने लगा। ये ही कारकाव्यय आगे चल कर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में अनुसर्ग या परसर्ग के रूप में विकसित हुए। इस प्रकार भारतीय आर्यभाषा संश्लेषणात्मक से विश्लेषणात्मक होने लगी। मध्यकाल के द्वितीय पर्व तक आते-आते प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के शब्द और धातुरूपों की विविधता समाप्त हो गई।

प्राकृतों के विकास क्रम में समय पाकर वैयाकरणों ने साहित्यिक प्राकृतों के व्याकरण लिखने आरंभ किए। व्याकरण के नियमों में बंध जाने के कारण प्राकृतों का स्वाभाविक विकास रुक गया। इनकी भी वही अवस्था हुई, जो संस्कृत की हुई थी। इधर तो साहित्यिक प्राकृतों मे साहित्य रचा जा रहा था और उधर जन-सामान्य की बोलचाल की भाषाएँ स्वाभाविक रूप से विकसित हो रही थीं। साहित्यिक प्राकृतों के विकास के रुक जाने के बाद ये बोलचाल की भाषाएँ और भी आगे बढ़ीं। इनकी ही संज्ञा "अपभ्रंश" हुई।

"अपभ्रंश" मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा और आधुनिक भा० आर्यभाषाओं के मध्य की कड़ी है। प्रत्येक "आधुनिक आर्यभाषा" अपभ्रंश की कड़ी पार करने के पश्चात् ही वर्त्तमान अवस्था तक पहुँची है।

अपभ्रंशकालीन साहित्य के आधार पर विद्वान् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ईसा की छठी शती में ही अपभ्रंश का प्रारंभ हो गया था। उस समय से ही अपभ्रंश में रचनाएँ उपलब्ध होने लगी थीं और तत्पश्चात् १२ वीं शताब्दी तक वे सर्जित होती रहीं। पर १२ वीं शती के अन्त तक यह 'अपभ्रंश' लोकभाषा न रह कर "साहित्यिक-भाषा" हो गई। लोकभाषा का स्थान देशी भाषा ने ले लिया था।

'अपभ्रंश' का जो साहित्य मिलता है, उसमें भाषागतभेद बहुत कम हैं। यह समस्त साहित्य एक ही परिनिष्ठित भाषा का है। परन्तु वैयाकरणों और विशेषतया

उत्तरकालीन वैयाकरणों ने अपभ्रंश के, देश भेद से अनेक भेद बताए हैं।[1] डा तगारे[2] ने अपभ्रंश के तीन भेद बताये हैं—दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वी।

यह 'पूर्वी' अथवा 'मागधी' अपभ्रंश "मागधी प्राकृत' का ही विकसित रूप है। इस मान्यता के आधार 'सरह' और 'कण्ह' के "दोहाकोष" हैं। संक्षेप में पूर्वी अपभ्रंश की निम्नांकित विशेषताओं का उल्लेख किया जाता है। ये विशेषताएँ उनके दोहाकोषों में वर्तमान हैं। यथा—

१ कुछ संस्कृत ध्वनियों का पूर्वी अपभ्रंश में परिवर्तन इस प्रकार होता है—

(क) क्ष>ख, क्ख। यथा—क्षण>खण। अक्षर>अक्खर।

(ख) त्थ>तु त। यथा—स्तम्>तुहुँ। तस्व>तत्त।

(ग) द्व>दु। यथा—द्वार>दुआर।

(घ) व>व। यथा—पद्म>पद्म। भेद>भेअ।

२ संस्कृत का 'श' इसमें सुरक्षित रहता है।

३ लिंग-भेदों का विचार इसमें लुप्तप्राय हो गया है। नपुंसक-लिंग तो पूर्णतः अप्रचलित हो गया है। स्त्रीलिंग के रूप भी बहुत कम हो गये हैं। पुल्लिंग रूपों की प्रधानता हो गई है।

४ इसमें विभक्ति-रहित शब्दपदों की प्रधानता मिलती है। विभक्तियों के घिस जाने और लुप्त विभक्तिक पदों के कारण वाक्य में अस्पष्टता आने लगी है। इसको दूर करने के लिए परसर्गों के प्रयोग करने की प्रवृत्ति इसमें अन्य अपभ्रंशों से अधिक दिखाई पड़ने लगी है।

५ अन्य अपभ्रंशों की तरह 'पूर्वकालिक' और 'क्रियार्थक' संज्ञा के प्रत्ययों में मिश्रण नहीं हुआ है। पूर्वकालिक प्रत्यय—"इ" का प्रयोग इसमें क्रियार्थक संज्ञा के लिए भी हुआ है। यथा—करइ=(क) करि (ख) करना।

६ प्राचीन उपसर्गों एवं प्रत्ययों को हटा कर नये उपसर्गों एवं प्रत्ययों के प्रयोग की प्रवृत्ति इसमें सर्वाधिक दिखाई पड़ती है।

७. इसमें "तिङन्त रूपों" के प्रयोग की प्रवृत्ति कम होने लगी है एवं कृदन्तज रूपों के प्रयोग प्रधान पाने लगे हैं। इससे काल-रचना की जटिलता और दुरूहता दूर हो गई है।

८. इसने तत्सम शब्दों के स्थान पर तद्भव और देशज शब्दों को खूब अपनाया। इससे यह प्राकृत से बहुत भिन्न दीख पड़ने लगी है।

---

१ डा उदय नारायण तिवारी। हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास। पृ १२१
Historical Grammar of Apbhransh P 66

२ यह पूर्वी अपभ्रंश ही, जिसकी उपर्युक्त विशेषताएँ बतलायी गई, मगही की जननी है। पूर्वी अपभ्रंश ही "मागधी अपभ्रंश" है।

भारतीय आर्यभाषाओं के विकास क्रम में मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल के पश्चात् आधुनिक काल की देशी भाषाओं का समय आता है। डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने इसकी संज्ञा "नव्य भारतीय आर्य-काल" (New Indo Aryan Period) दी है।[१] अन्य विद्वानों ने इसे 'आधुनिक भारतीय आर्यभाषा काल" कहा है।[२] इस काल में भारत की आधुनिक प्रादेशिक भाषाओं की गणना की गई है।

ये प्रादेशिक भाषाएँ स्व-सम्बद्ध प्रदेशों में प्रचलित अपभ्रंशों से ही विकसित हुई।[३] शौरसेनी अपभ्रंश से ब्रजभाषा, खड़ी बोली आदि भाषाएँ विकसित हुई। अर्द्ध-मागधी से पूर्वी हिन्दी का विकास हुआ। महाराष्ट्री अपभ्रंश से मराठी विकसित हुई। 'व्राचड' अपभ्रंश से सिन्धी का विकास हुआ।

"मागधी अपभ्रंश" से निम्नांकित आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ विकसित हुईं—मगही, मैथिली, भोजपुरी, बंगाली, आसामी और उड़िया।[४]

मागधी अपभ्रंश से विकसित होने के कारण उसकी बहुत सारी विशेषताएँ "आधुनिक मगही" में सुरक्षित हैं। उदाहरणार्थ मागधी अपभ्रंश में संज्ञा शब्द के साथ विभक्ति जुड़ी रहती थी।[५] आधुनिक मगही में भी सविभक्तिक संज्ञापदों[६] का प्रचलन है।

परिनिष्ठित अपभ्रंश में निर्विभक्तिक पदों के व्यवहार का प्रचलन बहुत कम था। जैसे जैसे आधुनिक बोलियों का उदय होता चला गया, वैसे वैसे निर्विभक्तिक पदों के प्रयोग की प्रवृत्ति भी बढ़ती गई। सिद्धों की भाषा में इनका व्यवहार बहुत कम हुआ है, किन्तु आगे चल कर "उक्ति व्यक्ति", "वर्णरत्नाकर" एवं "कीर्तिलता" में निर्विभक्तिक पद-प्रयोगों का बाहुल्य मिलता है। इन ग्रंथों के प्रणयन काल में मगही में भी निर्विभक्तिक पद प्रयोग विकसित हो गये होंगे, ऐसा अनुमान किया जा सकता है। इस अनुमान का

---

१ डा० सुनीति कुमार चटर्जी भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी — पृ० १०४

२ (क) डा० धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास भूमिका — पृ० ४८
(ख) डा० उदय नारायण तिवारी हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास — पृ० १५७

३ डा० सु० कु० च०—भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी — पृ० १०५

४ प्रान्तीय भाषाओं के विकास के बाद भी १३वीं— १४वीं शताब्दी तक अपभ्रंश के ग्रंथों की रचना होती रही। अपने विकास के पूर्वकाल में प्रान्तीय भाषाएँ भिन्न-भिन्न अपभ्रंशों से बहुत प्रभावित दिखाई पड़ती हैं। इसी प्रकार उत्तरकालीन अपभ्रंश भाषाएँ भी इन प्रान्तीय भाषाओं से पर्याप्त प्रभावित दिखाई पड़ती हैं।

५ (क) जत्त' वि पइसइ जलहि जलु तत्तइ समरस होइ। —सरह दोहाकोष
(ख) सायरु उप्परि तणु धरइ। —हेमचन्द्र
(ग) तबहु पिआज़ु पिआज़ु पढ। —कीर्तिलता

६ रामु अप्पन घरे हइ। —आधुनिक मगही

का[1] एव करणकारक के 'से' परसर्ग का [2] निकास अपभ्रंश से ही हुआ है।

मगही में मूलतः निम्नांकित सर्वनाम व्यवहृत होते हैं —हम, तूँ, अपने, इ, उ, जे, से, कोई, कोउ, कुछ, कौन, कउन, और का या कि।

इनमें 'हम' का अपभ्रंश 'आम्हे' (आम्हे>अम्हे>अम्ह>हम्ह>हम्म>हम) से [3], 'तूँ' का अपभ्रंश 'तूँ' (तुहुँ>तुँउ>तूँ) से [4], 'अपने' का अप्पण (अप्पण>अप्पन>आपन>अपना>अपने) से[5], 'ई' का 'ई' से[6], 'उ' का 'ओइ' से[7], 'जे' का 'जो' से', 'से' का 'सो' से,[8] कोई का 'कोवि' से[9], 'कोउ' का 'कोउ' से,[10]

---

१ (क) जनि एहि अलिगए लागि एक कृष्ण चतुर्भुज भए गेलाह। —वर्ण०
(ख) हमरा लागि तूँ बहुत कयलऽ। —आ० म०

२ (क) जइ पवसन्ते सहुँ न गय। —हेम०
(ख) दूजने सउँ सब काहु तूट। —उक्ति०
(ग) मृत्यु सओं कलकल करइतें अछ। —वर्ण०
(घ) ओ विनती पडितन्ह सों भजा। पद्मा०
(ङ) फूल से देओता के सिंगार कैल जाहे।

३ (क) भणइ लुइ आम्हे भाणे दिट्ठा। —लुईपा—चर्यापद
(ख) भणइ गुन्डरी अम्हे कुन्दुरे वीरा।—गुडरीपा —चर्यागीत
(ग) हम मन्दिल में पूजा करे जइला। —आधुनिक मगही

४ (क) मइँ भणिय तुहुं। —हेम०
(ख) तुँउ करमि। —उक्ति०
(ग) तूँ लो डोम्बी हाँउ कपाली। —कण्हपा-चर्यापद
(घ) तूँ हमरा किताव दे दऽ। —आ० म०

५ (क) अप्पन माँसे हरिणा वइरी। —भूसुकुपा— चर्यापद
(ख) अप्पन रूप निरेख ऽ। — आ० म०
(ग) अपने किताव पढ़थिन। —आ० म०

६ (क) ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ। —कीर्तिलता
(ख) ई वगीचा के फूल सुन्दर हइ। —आ० म०

७ (क) वड्डा घर ओइ। —हेम०
(ख) उ महल बहुत पुरान हइ। —आ० म०

८ (क) जो एथु वुझइ सो एथु वीरा। —कुक्कुरीपा—चर्यापद
(ख) जे सेवा करी, से फल पाइ। —आ० म०

९ (क) गुरु-प्पसाएँ पुराण जइ, विरला जाणइ कोवि। —सरहपा-दोहाकोष
(ख) कोइ नहिं होइ विचारक। —कीर्ति०
(ग) कोई के मन के वात हम का जानीं। —आ० म०

१० (क) राजा जइ कोउ। —उक्ति०
(ख) कोउ कुच्छो कहइ, वकि वात हइ सच। —आ० म०

आधुनिक मगही का उदय

यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि मगही भाषा कब अपने वर्त्तमान रूप को प्राप्त कर सकी। वैसे मागधी-प्रसूत भाषाओं की प्राचीन सामग्रियों के अध्ययन से विद्वान् इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि पूर्ववर्ती मागधी अपभ्रंश के प्रत्येक स्थानीय रूपों— मगही, मैथिली, भोजपुरी, बंगला, उड़िया और आसामी ने ८वीं से ११वीं शती तक अल्पाधिक स्वतंत्र रूप से अपनी आवश्यकताओं की पूर्त्ति कर ली होगी। यद्यपि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि किस शताब्दी में यह अलगाव सम्पन्न हुआ।[1]

यह ऐसा युग था, जिसमें समस्त आधुनिक भारतीय आर्यभाषाएँ अपनी आरंभिक स्थिति में थीं। इन भाषाओं की परस्पर भिन्नताएँ लक्षित हो रही थीं। भाषाओं की अपनी अपनी विशेषताएँ भी अपना स्वरूप गढ़ती जा रही थीं। पर अभी इन विशेषताओं की पूर्ण स्थापना नहीं हो पाई थी। यह ऐसा काल था, जब आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएं पीछे मुड़कर मध्यकालीन भा० आर्यभाषाओं की ओर सहारे के लिए देख लिया करती थीं।

बारहवीं शती के अन्त तक अपभ्रंश का चरम विकास हो गया था। परिनिष्ठित अपभ्रंश में आधुनिक देशी भाषाओं के मिश्रण का आभास हेमचन्द्र के "प्राकृत व्याकरण" के रचना काल (११४२ ई०) से ही मिलने लगा था। हेमचन्द्र ने अपनी "देशीन ममाला" में अनेक ऐसे देशी शब्दों का संग्रह किया है, जो प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में व्यवहृत नहीं हुए हैं।

परवर्ती अपभ्रंश में स्थानीय विशेषताओं का खूब उभार दिखायी पड़ता है। स्थानीय भेदों की वृद्धि १३वीं शती तक जाते-जाते इतनी हो गई कि पूर्व और पश्चिम के प्रदेशों ने अपभ्रंश के ही सहारे अपनी-अपनी बोलियों के स्वतंत्र रूप प्रकट कर दिए।

१४वीं शताब्दी के आरंभ से ही गुजराती, मराठी, बंगला, आसामी, उड़िया, मैथिली आदि आ० भा० आर्यभाषाओं की स्वतंत्र सत्ता उनके साहित्यिक ग्रन्थों में दिखाई पड़ने लगती है। १४वीं शताब्दी की मैथिली का नमूना ज्योतिरीश्वर ठाकुर के "वर्णरत्नाकर" में मिलता है। "वर्णरत्नाकर" का रचनाकाल १४वीं शती का पूर्वार्द्ध है। विद्यापति का काल (१३६० ई० से १४४८ ई०)[2] १४वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और १५वीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध पड़ता है। उन्होंने अपनी रचनाएँ "अवहट्ठ" और "विशुद्ध मैथिली" दोनों ही में की हैं। "कीर्तिलता" (१४वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध) की रचना "अवहट्ठ" में हुई है और पदों की रचना विशुद्ध मैथिली में। १४वीं शताब्दी की बंगला का नमूना "श्रीकृष्ण कीर्तन" में मिलता है। उड़िया का नमूना पुरी के अभिलेखों (१५वीं शता०) में उपलब्ध होता है। इन भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट

---

१ Orig. and Dev of Beng Lang, Introduction (53) Page 96–97

२ Dr Jaykant Mishra, Maithili literature पृ०१३६–१४५

पता चलता है कि ये एक दूसरे से बहुत भिन्न हो चुकी हैं और विकास की लगभग उस स्थिति तक पहुँच गई हैं, जहाँ ये वर्तमान समय में हैं।[१]

भारतीय आर्यभाषाओं में घटित होने वाला यह क्षेत्रीय भेद प्राकृत काल के क्षेत्रीय भेद से निश्चय ही भिन्न प्रतीत होता है। वैयाकरणों द्वारा निरूपित महाराष्ट्री, शौरसेनी मागधी, पैशाची आदि प्राकृतों में मुख्य भेद उच्चारण-सम्बन्धी ही है। व्याकरण भेद नाममात्र के लिए ही है। लेकिन यही बात बंगला, उड़िया, आसामी, मगही, मैथिली, राजस्थानी खड़ी बोली आदि के विषय में नहीं कही जा सकती। इन भाषाओं में परस्पर ध्वनि-रूप और व्याकरण-सम्बन्धी भिन्नताएँ पूर्णरूप में वर्तमान हैं।

जिस काल में (१४वीं शताब्दी) मगही की भगिनी भाषाएँ अपने साहित्य-कोष को समृद्ध और अभिवृद्ध कर रही थीं उस काल में मगध साम्राज्य अनेक बाह्य और आन्तरिक कारणों से छिन्न भिन्न हो चुका था। उसकी प्राचीन गरिमा, बौद्धिक और साहित्यिक परम्पराएँ विनष्ट हो चुकी थीं। विद्वान् पुरुष मारे जा चुके थे और जो बचे थे वे नेपाल में अपने साथ ले जा सकने वाली पाण्डुलिपियों (Manuscript) के साथ भाग चुके थे। इस कारण उस काल का मगही-साहित्य अनुपलब्ध है।[२] परन्तु अन्य पूर्वी बोलियों से मगही का जो सादृश्य है उसके आधार पर यह अवश्य ही अनुमेय है कि समानान्तर रूप से १४–१५वीं शताब्दी तक मगही में भाषा-तत्त्व-सम्बन्धी वे समस्त विशेषताएँ आ गई होंगी जो आधुनिक मगही में वर्तमान हैं। इस प्रकार आधुनिक मगही के उदय का भी यही काल ठहरता है, जो उपर्युक्त अन्य भारतीय आर्यभाषाओं का है।

मगही का नामकरण

ध्वनियों शब्दरूपों एवं धातु रूपों में प्रविष्ट परिवर्तनों ने प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं को आधुनिक आर्यभाषाओं का रूप दे दिया। ध्वनिविकार का ही परिणाम हुआ कि "मागधी" का नाम-रूप परिवर्तित होकर 'मगही' हो गया।

संस्कृत के अनुकरण पर अपभ्रंश में लोप आगम और विकारादि का विधान होता था। इसी के नियमानुसार मा>म में परिवर्तित हो गया। 'ग' ध्वनि सुरक्षित रह गई। वर्ण विकार के कारण 'ध' ध्वनि 'ह' में परिवर्तित हो गई। 'ध' का 'ह' में परिवर्तन कदाचित् प्राकृत काल से ही होने लगा था। अपभ्रंश काल में तो आरंभ से ही ऐसे वर्णविकार मिलते हैं।[३] 'ध' का 'ह' में परिवर्तन सरहपा के पदों में भी मिलता है।[४] अपभ्रंशकाल के पुष्पदन्त कवि

---

१. Orig and Dev of Beng Lang, Introduction (53) Page 96 97 –

२. Orig & Dev of Beng Lang. Page 100-103

३ यथा—(सं) लाभ>(अप) लाह। (सं) विविध>(अप) विविह।

४ यथा—(क) जिम जाण तर वेण पि साहिउ (साधेउ)।
(ख) जिम मण कम्मे सोहिअ (शोधित) अम्ह।
सरह : दोहाकोश

(६५६–६७२ ई०) ने 'मगध' के लिए 'मगह' पद का ही प्रयोग किया है।[1] 'ध' के साथ 'ई' ध्वनि सुरक्षित रह गई। इस प्रकार मागधी>मगही हो गई।

उद्भव की दृष्टि से मगही, मैथिली, भोजपुरी, आसामी, उड़िया और बंगला भाषाएँ, मागधी प्राकृत और मागधी अपभ्रंश से समान रूप से सम्बद्ध हैं। परन्तु उत्तराधिकार के रूप में केवल मगही को ही अपनी जननी का नाम किंचित् ध्वनि परिवर्तनों के साथ प्राप्त हुआ है।

मगही के अध्ययन की प्राचीन सामग्रियाँ

पूर्वी भारत में "मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा" के अध्ययन की जो सामग्रियाँ उपलब्ध होती हैं, वे ही मगही के अध्ययन की भी हैं। ये निम्नांकित हैं :—

(क) वेदों, ब्राह्मणों एवं अन्य प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में वर्त्तमान छिटपुट शब्द और रूप, जो ध्वनि-विज्ञान की दृष्टि से प्राच्य माने जा सकते हैं। यथा—ऋग्वेद के दशम—मंडल की भाषा अन्य मंडलों की भाषा से कुछ बातों में भिन्न हैं। यथा—यहाँ 'र' के स्थान पर 'ल' का प्रयोग प्राच्य भाषाओं की विभेदक विशेषता है।

(ख) पूर्वी क्षेत्रों में पाये जाने वाले प्राचीनतम अभिलेख। उदाहरणार्थ—अशोक के तथा अन्य ब्राह्मी अभिलेख।

(ग) "पालि त्रिपिटक" में वर्त्तमान मागधी के अनेक शब्द और ध्वनि-रूप। यथा—

भिक्खवे, सुवे, पुरिसकारे आदि।

(घ) ईसा की पहली शताब्दी के बौद्ध नाटकों में प्राप्त प्राचीनतम अर्द्धमागधी और मागधी के नमूने।

(ङ) संस्कृत नाटकों में उपलब्ध मागधी प्राकृत की विभाषाएँ। यथा—"शाकारी," "चाण्डाली" आदि के अवतरण। इस सम्बन्ध में "मृच्छकटिकम्" एवं "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" उल्लेख्य हैं।

(च) वररुचि (५वीं शताब्दी) से लेकर मार्कण्डेय (१७वीं शताब्दी) तक के प्राकृत वैयाकरणों की रचनाओं के वे स्थल, जहाँ वे पूर्वी बोलियों (मागधी प्रसूत भाषाओं) का विवेचन करते हैं।

(छ) वस्तुओं, स्थानों और मनुष्यों के प्राचीनतम देशी नाम, जो प्रारंभिक विवरण पुस्तिकाओं में उपलब्ध होते हैं।

मगही 'बोली' या 'भाषा'

मगही पर कुछ आगे कहने के पूर्व इसका स्पष्टीकरण हो जाना आवश्यक है कि मगही 'बोली' है या 'भाषा' ? भाषा विज्ञान के विद्वानों के मतानुसार 'भाषा' उसे कहते

१. तहिं मगह-देसु सुपसिद्ध अत्थि।
—णायकुमार—चरिउ।

है, जिसके द्वारा मनुष्य-समाज के सदस्य परस्पर भावों और विचारों का आदान-प्रदान लिख कर या बोल कर करते हैं। इस दृष्टि से विचार करने पर मगही भाषा ही सिद्ध होती है, कारण मनुष्य समाज का एक विशिष्ट भाग इसके माध्यम से अपने भावों एवं विचारों का आदान प्रदान लिख कर या बोल कर करता है।

जहाँ तक 'हिन्दी' के साथ 'मगही' के संबंध का प्रश्न है, व्यापक स्तर पर 'हिन्दी' वह 'भाषा' है, जिसकी विभाषा के रूप में मैथिली, भोजपुरी आदि के समान मगही भी मान्य है। विभाषा मान्य होने से 'मगही' 'बोली' नहीं मान ली जा सकती, कारण 'बोली' घर की बोलचाल तक ही सीमित होती है जब कि मगही घर की बोलचाल तक ही सीमित नहीं है। इसका क्षेत्र पर्याप्त विस्तृत है। इसके बोलने वालों की संख्या काफी बड़ी है और सभ्य सम्मेलनों में विचारों के आदान प्रदान के सांस्कृतिक माध्यम का कार्य भी यह सफलता के साथ कर रही है।

हिन्दी के साथ इसके संबंध को यों समझा जा सकता है। पहाड़ और पहाड़ी के सारभूत तत्त्व एक ही होते हैं पर क्षेत्र-विस्तार एवं स्थिति की भिन्नता के कारण उनका नाम पहाड़—पहाड़ी पुकारा जाता है। इसी प्रकार मगही में 'भाषा' कहलाने के आधारभूत सभी तत्त्व विद्यमान हैं, पर क्षेत्रविस्तार एवं स्थिति के अनुसार यह हिन्दी की विभाषा मान्य होती है।

क्षेत्र विस्तार, तद्भाषी जन-समुदाय अभिव्यक्ति क्षमता, समृद्ध लोक-साहित्य, सांस्कृतिक साहित्य, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सामर्थ्य व्याकरणिक संगठन, उच्चारण पद्धति साहित्यिक अभिव्यक्ति की सुगमता एवं अपनी लिपि—इन सभी दृष्टियों से मगही के 'भाषात्व' में किसी को संदेह नहीं हो सकता।

मगही का स्वतंत्र भाषात्व

इससे सम्बद्ध एक दूसरा प्रश्न मगही के स्वतंत्र भाषात्व का है। एक ही मागधी प्राकृत से प्रसूत होने के कारण "बिहारी (मगही, मैथिली और भोजपुरी) में पर्याप्त आन्तरिक साम्य मिलता है। इन तीनों में व्याकरण वाक्य-संगठन एवं शब्द प्रयोग-संबंधी बहुत कुछ समानताएँ प्राप्त हैं।

पर 'बिहारी' में प्राप्त इन आन्तरिक समानताओं की भिन्न व्याख्या कर कतिपय मैथिली-विद्वानों ने 'मगही' के स्वतंत्र अस्तित्व को ही अस्वीकृत कर देना चाहा है। ऐसे विद्वानों में सर्वश्री जयकान्त मिश्र[1] डॉ सुभद्र झा[2] एवं श्री कृष्णकान्त मिश्र[3] के नाम सादर उल्लेख्य हैं। उनके विचारों का सारांश निम्नांकित है :—

१ बिहार की तीनों बोलियों—मगही, मैथिली और भोजपुरी—को एक ही बिहारी वर्ग में रखना उचित नहीं है।

1 A History of Maithili literature, Vol. I, P 57-59

2 The Formation of the Maithili Language: Introduction.

३ मैथिली साहित्यक इतिहास।

२. भोजपुरी हिन्दी के अधिक निकट है। मैथिली, मगही एवं भोजपुरी के बीच गहरी विषमताएँ वर्त्तमान हैं।

३. मगही का स्वतन्त्र अस्तित्व अमान्य है। वह मैथिली की उपबोली है।

अपने विचारों के समर्थन के लिए इन विद्वानों ने डॉ० ग्रियर्सन का आश्रय लिया है। डॉ० ग्रियर्सन[1] ने भाषा और जातीय दृष्टि से "बिहारी" की तीन बोलियों—मैथिली, मगही और भोजपुरी—का दो वर्गों में विभाजन किया है :—

पूर्वी वर्ग—मगही, मैथिली एवं

पश्चिमी वर्ग—भोजपुरी।

इस प्रकार के वर्गीकरण के लिए उन्होंने आधारभूत निम्नांकित तर्क दिये हैं —

१. उच्चारण—मैथिली और (कुछ ही अंश कम) मगही का उच्चारण वर्तुलाकार है। भोजपुरी का उच्चारण वर्तुलाकार नहीं है।

२. संज्ञा—संज्ञा के रूपों में, भोजपुरी में संबंध कारक का एक तिर्यक रूप भी मिलता है। इसका अन्य दोनों बोलियों में अभाव है।

३. मध्यमपुरुष आदरवाचक सर्वनाम का वह रूप, जो दैनंदिन वाग्व्यवहार में आता है, मैथिली तथा मगही में "अपने" है, परन्तु 'भोजपुरी' में आदर वाचक सर्वनाम पद "रऊरे' है।

४. मैथिली में सहायक क्रिया 'है' के लिए 'छै' तथा 'अछि' रूप आता है। मगही में 'है' का परिवर्तित रूप 'हइ' है। परन्तु भोजपुरी में इसके रूप 'बाटे', 'बाड़े' या 'होवे' होते हैं।

५. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं की भाँति ही इन तीनों बोलियों में भी वर्त्तमान काल बनाने के लिए सहायक क्रिया में वर्त्तमानकालिक कृदन्त का रूप संयुक्त करना पड़ता है। यथा—

मैथिली—देखैत अछ।

मगही—देखइत है या हइ।

भोजपुरी—देखत बाटे।

६. मैथिली और मगही के क्रियापदों की रूप-रचना की पद्धति बड़ी जटिल है, पर भोजपुरी की क्रियाओं के रूप बंगला और हिन्दी की तरह बिल्कुल सरल हैं।

७ व्याकरण रचना की दृष्टि से भी मैथिली और मगही में बहुत साम्य है।

८. मैथिली और मगही ऐसी जातियों की बोलियाँ हैं, जो रूढ़िवादिता की चरम सीमा पर पहुँच चुकी हैं।

९ मगही और मैथिली भाषाओं के बोलने वाले परस्पर बहुत सम्बद्ध हैं। भोजपुरी बोलने वालों से इन दोनों की पर्याप्त भिन्नता देखी जाती है।

---

1 Linguistic Survey of India Vol. V Part II

१० भोजपुरी, मगही और मैथिली बोलने वालों में जातीय भिन्नताएँ स्पष्ट हैं। लेकिन मैथिली और मगही और इनके बोलने वाले लोगों में भोजपुरी की तुलना में पारस्परिक साम्य बहुत अधिक है।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर मगही-मैथिली के साम्य को सिद्ध करते हुए डॉ॰ ग्रियर्सन ने मगही के सम्बन्ध में निम्नांकित निष्कर्ष दिया है :—

"मगही को एक स्वतंत्र बोली मानने की अपेक्षा आसानी से मैथिली की एक उपबोली के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।"[1]

डॉ॰ ग्रियर्सन के उपर्युक्त वक्तव्य से दो चीजें सामने आती हैं :—

(क) 'भोजपुरी' के स्वरूप में मगही-मैथिली से पर्याप्त भिन्नता है। इसलिए उसे दोनों से अलग पश्चिमी वर्ग में रखा जा सकता है।

(ख) मगही' का मैथिली की एक उपबोली के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसा कि उनके निष्कर्ष वाक्य से स्पष्ट है।

इनमें पहले का सटीक उत्तर डॉ॰ उदय नारायण तिवारी ने अपने शोध-प्रबन्ध "भोजपुरी भाषा और साहित्य"[2] में दिया है। जहाँ तक दूसरे निष्कर्ष का प्रश्न है, उसे आधार मान कर डॉ॰ जयकान्त मिश्र[3] एवं प्रो॰ श्री कृष्ण कान्त मिश्र[4] ने मगही को 'मैथिली' की एक उपबोली सिद्ध करने का प्रयास किया है।

डॉ॰ जयकान्त मिश्र एवं प्रो॰ श्री कृष्ण कान्त मिश्र के इस संबंध में दिए गये संपूर्ण तर्कों का सारांश निम्नांकित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है :—

१ मगही-मैथिली के व्याकरण-रूपों में बहुत अधिक समानता दीखती है।

२ दोनों की जातीय परम्पराएँ बहुत कुछ समान हैं।

३ मगही-भाषी एवं मैथिली भाषी जनता अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण संबंध सूत्रों से संयुक्त है।

४ भोजपुरी के व्याकरण-रूपों से मैथिली-मगही के व्याकरण रूपों में पर्याप्त भिन्नता दीख पड़ती है।

---

१ Magahi indeed might very easily be classed as a Subdialect of Maithili rather than as a separate dialect."

—L. S. I. Vol. V Part II Page : 4

२ "बिहारी बोलियों की आन्तरिक एकता" शीर्षक निबंध।

३ A History of Maithili literature Vol. I.

४ मगही भाषा जो एक समय प्राचीन मगध साम्राज्य के केन्द्र स्थान में बोली जाती रही है।———बहुत कुछ भर रहते हुए भी भारतीय-आर्यभाषाओं के (विशेष कर मागधी के) इतिहास, मैथिली के साथ इसके व्याकरण साम्य एवं आधुनिक काल में इसके बोलने वालों के स्वतंत्र मूल नस्ल व स्वभाव को देख कर यही उचित मालूम होता है कि मगही भाषी लोगों को हिन्दी भाषी प्रान्त (भोजपुरी) के साथ मिलाने की अपेक्षा मैथिली भाषा भाषी के संग मिलाने में अधिक सुविधा रहती है।"

—मैथिली साहित्यक इतिहास

५. मगही-मैथिली में जो थोड़ी बहुत व्याकरणगत विभिन्नताएँ मिलती हैं, वे विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। कारण वे "सामान्य ध्वनि परिवर्तनों" का परिणाम मात्र हैं।

६. जहाँ तक इन ध्वन्यात्मक परिवर्तनों का प्रश्न है, इनके पीछे कोई विशिष्ट विभेदक कारण नहीं है, अपितु वह सहज प्रवृत्ति है, जो प्रायः अशिक्षित जन-समुदाय के मध्य पायी जाती है।

७. इस सभावना का आधार यह भी है कि मैथिली विद्वानों की भाषा रही है, जब कि मगही आरंभ से ही गर्हित, अशिक्षित एवं जंगली लोगों की।

८. वर्त्तमान में भी 'मगही' का अपना स्वतंत्र अस्तित्व नहीं दीखता है।

९. मगही-मैथिली में जो सामान्य विभिन्नताएँ प्राप्य हैं, उस स्तर की विभिन्नताएँ किसी भी भाषा एवं उसकी 'उपभाषा' के मध्य प्राप्य होती हैं।

१०. मिथिला के केन्द्र में जैसी परिशुद्ध मैथिली उच्च जाति के लोग बोलते हैं, वैसी शूद्रादि नीच जातियों के लोग नहीं। वैसे डा० ग्रियर्सन के अनुसार (मैथिली विद्वानों का यह मत है कि) मैथिली पंडित समाज के अधीन रही है, इसीसे परिशुद्ध है, किन्तु मगही जाति एवं उसकी भाषा प्रारंभ से ही गर्हित एवं उपेक्षितप्राय रही है। अतः दोनों (मगही-मैथिली) में जो अन्तर मिलते हैं, वे उपर्युक्त दृष्टिभेद एवं स्थिति-भेद के ही फलस्वरूप हैं और उक्त रहस्य के खुलते ही 'मगही' का आसानी से 'मैथिली' का एक प्रभेद मान लिया जा सकता है।

उपर्युक्त तर्कों का समाधान बड़ी ही सरलता से प्रस्तुत किया जा सकता है :—

१ व्याकरण रूपों की समानता न केवल मगही-मैथिली के बीच है, अपितु भोजपुरी के बीच भी वर्त्तमान है।[१] सच तो यह है कि मागधी प्रसूत सभी बोलियों में कुछ न कुछ व्याकरण साम्य है। डा० सुनीति कुमार चटर्जी का कथन है कि मागधी प्रसूत सभी भाषाओं की तुलना करने पर पता चलता है कि 'बंगाली' और 'आसामी' व्यवहारत एक ही भाषा है तथा 'उड़िया' भी बंगाली और आसामी से घनिष्ट रूप से सम्बद्ध है। इतना ही नहीं, मैथिली तथा बंगाली-आसामी-उड़िया में भी कुछ अंशों में सादृश्य है।[२] जहाँ तक मैथिली और बंगला के सम्बन्ध का प्रश्न है, इस पर उपर्युक्त सभी विद्वान सहमत हैं कि मैथिली और बंगला का परस्पर व्याकरणगत साम्य बहुत अधिक है। दोनों की लिपि में भी बड़ी समानता है। मैथिली और बंगला के मध्य बहुत अधिक साम्य का एक बड़ा प्रमाण यह भी है कि विद्यापति और गोविन्ददास मैथिली के कवि होते हुए भी बंगला के कवि के रूप में माने जाते रहे हैं। दोनों भाषा-भाषियों में इन दोनों कवियों को लेकर बहुत दिनों तक पर्याप्त खींचातानी भी चलती रही है।

तो क्या उपर्युक्त आधार पर ही हम बंगला को मैथिली या मैथिली को बंगला की 'उपभाषा' कह सकते हैं ? क्या उपर्युक्त अन्य भाषाएँ एक दूसरे की उपभाषाएँ कहला सकती हैं। वस्तुत मागधी-प्रसूत सभी भाषाओं में साम्य है। इस क्रम में हम जितना

१ "भोजपुरी भाषा और साहित्य". "बिहारी बोलियों की आन्तरिक एकता।"
२ Orig and Dev of Beng lang. Introduction P 91-92

ही पीछे (प्राचीनयुग) की ओर बढ़ते चले जायेंगे, सभी भारतीय आर्यभाषाओं में अधिकाधिक समानताएँ मिलती चली जायेंगी। भोजपुरी जिसे डॉ॰ ग्रियर्सन ने 'पश्चिमी वर्ग' में एवं डॉ॰ चटर्जी ने 'पश्चिमी मागधी' के अन्तर्गत रखा है, भी मागधी प्रसूत होने के कारण उच्चारण, संज्ञा क्रियापद आदि की दृष्टि से मैथिली और मगही से पर्याप्त साम्य रखती है। अतः इस प्रकार का साम्य कोई ऐसा आधार नहीं कि जिसके कारण मगही को मैथिली की 'उपबोली' मान लिया जाए।

२ जातीय परम्पराएँ न केवल मगही-मैथिली की, अपितु मागधी-प्राकृत प्रसूत सभी भाषाओं की बहुत दूर तक मिलती जुलती-सी हैं। शौरसेनी-प्रसूत हिन्दी से भी उपयुक्त भाषाओं की जातीय परम्पराएँ बहुत कुछ मिलती जुलती हैं। पर क्या इसी आधार पर उन सभी भाषाओं को इनमें से किसी एक भाषा की उपभाषाओं के रूप में स्वीकार किया जा सकता है?

३ मगही भाषी एवं मैथिली भाषी जनसमुदाय में अन्य दृष्टियों से जो अनेक महत्त्वपूर्ण संबंध-सूत्र प्राप्त होते हैं, उनका कारण दोनों की भौगोलिक स्थिति है। सामान्यतया गंगा के उस पार (उत्तर में) मैथिली-भाषी क्षेत्र पड़ता है और इस पार (दक्षिण में) मगही-भाषी क्षेत्र। पर यह कोई ऐसा आधार नहीं, जो दोनों भाषाओं के पृथक् अस्तित्व का विघातक हो।

४ इसका बड़ा ही सटीक उत्तर डॉ॰ उदय नारायण तिवारी ने "बिहारी बोलियों की आन्तरिक एकता' में दिया है।[1]

५ मैथिली और मगही में भी व्याकरणगत कतिपय स्पष्ट-भिन्नताएँ मिलती हैं जिनकी हम अवहेलना नहीं कर सकते। ये भिन्नताएँ महत्त्वपूर्ण इसलिए हैं कि इनके ही कारण मगही और मैथिली अलग अलग भूमि पर खड़ी होती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि तटस्थ दृष्टि से इन विभिन्नताओं का तुलनात्मक अध्ययन[2] किया जाय।

६ मैथिली और मगही में सबसे बड़ी भिन्नता उनके ध्वन्यात्मक स्वरूपों में परिलक्षित होती है। एक मैथिली वक्ता के उच्चारण से ही झलक जाता है कि वह गंगा पार (उत्तर में) रहने वाला मैथिल है और मगही-वक्ता के उच्चारण से स्पष्ट ज्ञात होगा कि वह मगध का रहने वाला है। यह ठीक है कि सभी का मूल (Root) एक ही है तथापि प्रत्येक भाषा में जो अपनी क्षेत्रीय विशेषताएँ विकसित हो जाती हैं, उनकी हम अवहेलना नहीं कर सकते। जब तक ये विशेषताएँ किसी भाषा में जीवित हैं, तब तक उसके किसी अन्य भाषा की उपभाषा बनने का प्रश्न ही नहीं उठता। यही दृष्टिकोण मगही के स्वतंत्र एवं मान्य अस्तित्व का आधार भी है।

७ यह सम्भावना अपने आप में बड़ी दिलचस्प है। कारण जिस समय तक मगही, मैथिली आदि भाषाएँ अपने अपने पृथक् अस्तित्व में प्रकट हुईं, उनके शताब्दियों पूर्व ही मगध क्षेत्र बौद्ध धर्म एवं बौद्ध संस्कृति जैसी उत्कृष्ट एवं क्रांतिपूर्ण विचारधारा से आप्लावित

---

1 भोजपुरी भाषा और साहित्य। पृ॰ १७८।

2 प्रस्तुत पंक्तियों की लेखिका ने इन विभिन्नताओं का अध्ययन अपने शोध प्रबन्ध "मगही भाषा और साहित्य का अध्ययन" में किया है।

हो रहा था। फिर मैथिली, भोजपुरी एव मगही की जननी भी तो 'मागधी' ही थी, जो राजभाषा थी, साथ ही राष्ट्रभाषा थी। विद्वानों का अनुमान है कि मूल बौद्ध साहित्य "मागधी" में ही रहा होगा, फिर बाद में पालि में उसका अनुवाद हुआ होगा। उस मागधी की ज्येष्ट पुत्री 'मगही' ही है। इसे स्वय डॉ० जयकान्त मिश्र भी स्वीकार करते दीखते हैं।[1] मगही ने अपनी जननी की गरिमा सर्वाधिक पायी है। अत. इसके गर्हित और जंगली लोगों की भाषा होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

८ वर्त्तमान समय में मगही के स्वतत्र अस्तित्व का अस्वीकरण अपनी अनभिज्ञता का ही परिचय देना होगा। महापंडित राहुल साकृत्यायन एव डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के सम्पादन में निकले "हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास" भाग १६" के अवलोकन से यह भ्रान्त धारणा सहज ही निर्मूल हो जाती है।[2]

९. यह तर्क सारहीन है। उपर्युक्त विवेचन के आलोक में इसके उत्तर देने की अपेक्षा नहीं रह जाती।

१०. अंतिम तर्क-संदर्भ में प्रथम वक्तव्य का उत्तर ऊपर दिया जा चुका है। जहाँ तक डॉ० ग्रियर्सन के वक्तव्य एव उसके आधार पर निष्कर्ष निकालने का प्रश्न है, कतिपय तथ्य ध्यातव्य हैं—

(क) मैथिल विद्वान् डॉ० ग्रियर्सन द्वारा भोजपुरी को "बिहारी" वर्ग में सम्मिलित करना अप्रामाणिक एव अनौचित्यपूर्ण मानते हैं, पर स्वानुकूल वक्तव्य (कि 'मगही' को 'मैथिली' की उपभाषा मान लिया जा सकता है) को अपने अभीप्सित अधिकार का घोषणा पत्र, ऐसा क्यों? क्या प्रथम की तरह डॉ० ग्रियर्सन का यह वक्तव्य भी विचारणीय एव अन्ततः असगत नहीं माना जा सकता?

(ख) इस सभावना का पुष्ट आधार यह भी है कि उस समय डॉ० ग्रियर्सन को जो सूचनाएं प्राप्त हुई थीं, वे वैसा निष्कर्ष देने के लिए पर्याप्त नहीं थीं। मगही भाषा एवं साहित्य की दिशा में हुए नवीन अन्वेषणों से कम से कम वर्त्तमान में तो ऐसा ही प्रतीत होता है।

(ग) यदि मगही-मैथिली में किसी एक को शेष का प्रभेद मानने की आवश्यकता अनुभूत भी हो, तो मागधी प्राकृत से सीधा सबध रखने के कारण मगही को उपभाषा के रूप में स्वीकृत करने का प्रस्ताव औचित्यपूर्ण नहीं होगा।

मगही भाषा की सीमाएँ

'मगही' की उत्तरी सीमा पर गगा के उस पार तिरहुत में विभिन्न रूपों में मैथिली बोली जाती है। इसकी पश्चिमी सीमा पर शाहाबाद और पलामू में भोजपुरी बोली जाती

1 "Magahi is in a way the most direct remnant of the Ancient Magadhi Prakrit" —*A History of Maithili literature: Vol I, P. 58.*

२ देखिए "मगही लोक-साहित्य" वाला प्रकरण।

है। उत्तरपूर्वी सीमा पर मुंगेर भागलपुर और संथाल परगना में 'छिकाछिकी'[1] (अंगिका) बोली जाती है। दक्षिण-पूर्वी सीमा पर मानभूम[2] और पूर्वी सिंहभूम में बंगला बोली जाती है। मगही की दक्षिणी सीमा पर राँची में 'सदानी' भोजपुरी बोली जाती है।

मगही-भाषा-क्षेत्र

उपर्युक्त सीमाओं के अन्तर्गत आये हुए क्षेत्र में 'मगही' अपने विशुद्ध रूप में बोली जाती है। इसको 'आदर्श मगही' की संज्ञा दी गई है।

'आदर्श' का मानदंड

'आदर्श मगही' से तात्पर्य 'मगही के स्टैण्डर्ड (Standard) रूप से है। किसी भाषा का आदर्श स्वरूप उसकी विशुद्धता ही है। जब वह अन्य भाषाओं से मिल कर अथवा प्रभावित होकर विकृत हो जाती है, तब उसका निजी स्वरूप आदर्श' नहीं रह जाता। प्रश्न है, कहाँ की मगही आदर्श मानी जाय और कहाँ की नहीं ? इस सम्बन्ध में लेखिका ने पद्धति यह अपनायी है कि जो क्षेत्र मगही भाषियों के गढ़ से हैं एवं अन्य भाषा क्षेत्रों एवं भाषा भाषियों के प्रभाव से अलग रहे हैं, उन्हीं क्षेत्रों की मगही को आदर्श' माना जाए। 'आदर्श मगही-क्षेत्र' का निरूपण आगे किया गया है।

पूर्वी मगही

मगही का विस्तार "आदर्श मगही" के उपर्युक्त क्षेत्र की सीमाओं के बाहर भी है। परन्तु अन्य भाषाओं, जैसे 'बंगला' और 'उड़िया' के संपर्क में आने के कारण इन अतिरिक्त स्थानों में बोली जाने वाली आदर्श मगही के विशुद्ध स्वरूप में स्थानीय विशेषताएँ आ गई हैं। आदर्श मगही के इन किंचित् परिवर्तित रूपों को "पूर्वी मगही" की एक व्यापक संज्ञा दी गई है। पूर्वी मगही का कोई नैरन्तरिक (Continuous)[1] क्षेत्र नहीं है इसलिए इसकी सीमाओं का निर्धारण संभव नहीं है।

मिश्रित मगही

आदर्श मगही अपनी अन्य सीमाओं पर अन्य विविध-भगिनी भाषाओं—जैसे भोजपुरी मैथिली आदि से मिल कर अपने विशुद्ध रूप को खो बैठी है। मगही और इन भगिनी भाषाओं के मिश्रण के परिणाम स्वरूप कई एक सीमावर्ती बोलियाँ निकल आयी हैं, जिन्हें मिश्रित मगही की एक व्यापक संज्ञा दी जा सकती है।

---

१ 'छिकाछिकी' मैथिली दक्षिणी भागलपुर, उत्तरी संथाल परगना और गंगा के किनारे किनारे दक्षिणी मुंगेर में बोली जाती है। 'छिकाछिकी' मैथिली पर मगही का बहुत प्रभाव है। इसी कारण आदर्श मैथिली और इसमें बहुत अंतर है।

—डॉ उदय नारायण तिवारी भोजपुरी भाषा और साहित्य : पृ १ ३।

२ आधुनिक धनबाद और पुरुलिया जिले।

आदर्श मगही-क्षेत्र

आदर्श मगही क्षेत्र प्राचीन मगध प्रदेश[1] तक ही सीमित नहीं है। यह प्राचीन मगध-प्रदेश के अतिरिक्त दक्षिण की ओर गया जिले के शेषांश एवं हजारीबाग तक फैला है। पश्चिम में पलामू जिले के उत्तरपूर्व में भी जहाँ पलामू जिला की सीमा गया और हजारीबाग से मिलती है, "आदर्श मगही" ही बोली जाती है। पूर्व में गंगा के दक्षिण में स्थित मुंगेर के हिस्से के पश्चिमी भाग में और भागलपुर के दक्षिण-पश्चिम कोने के एक छोटे हिस्से में भी आदर्श मगही बोली जाती है।

'आदर्श मगही' राँची, सिंहभूम, सरायकेला और खारसवाँ के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती है। यह राँची जिले के दक्षिण हिस्से तक फैलती चली गई है। यह राँची जिले के दक्षिणपूर्व स्थित सिंहभूम जिले के उत्तरी हिस्से सरायकलाँ एवं खारसवाँ में उड़िया के साथ-साथ बोली जाती है। सिंहभूम जिले के 'धालभूम' का इलाका भी इसका क्षेत्र है।

हजारीबाग और राँची जिले के पूर्व में स्थित मानभूम जिले के सदर सबडिवीजन में भी इसका विस्तार है। पुरुलिया (मानभूम) भी इसके क्षेत्र में पड़ता है। इस ओर 'आदर्श मगही' बंगला के साथ-साथ बोली जाती है।

गया के दक्षिण और दक्षिण पूर्व में पठार की ओर बढते हुए हजारीबाग जिला मिलता है। यहाँ भी गया की ही 'भाषा' बोली जाती है, जो मगही है। परन्तु इस जिले में जो मुंडा और द्रविड़ जातियों के लोग हैं, वे अपनी-अपनी भाषाएँ बोलते हैं। हजारीबाग के पश्चिम में पलामू जिला है। उसकी पूर्वी सीमा पर 'मगही' बोली जाती है।

दक्षिण में हजारीबाग जिला राँची जिले के छोटानागपुर पठार से निकलने वाली दमुदा और इसकी सहायक नदियों से विभाजित है। छोटानागपुर पठार के इस हिस्से की बोली मगही नहीं है, बल्कि भोजपुरी का एक रूप है। यद्यपि इस क्षेत्र के उत्तर में मगही उन लोगों के द्वारा बोली जाती है, जो हजारीबाग से आकर बसे हैं। सामान्यरूप से यह कहा जा सकता है कि छोटानागपुर के इन दो पठारों में उत्तर पठार या हजारीबाग पठार की भाषा मगही है तथा दक्षिण पठार या राँची पठार की भाषा भोजपुरी।

राँची की दक्षिणी सीमा से आदर्श मगही "पूर्वी मगही" के रूप में राँची के पठार के पूर्वी किनारे किनारे बंगला भाषा-भाषी मानभूम जिले के बीच से होकर गुजरती है। अन्त में यह पश्चिम की ओर मुड़ती है और उसी पठार के दक्षिणी किनारे के नीचे-नीचे उड़िया भाषी सिंहभूम जिले के उत्तर में फिर आदर्श मगही के रूप में प्रकट होती है।

पूर्वी मगही-क्षेत्र

पूर्वी मगही का कोई शृंखलित क्षेत्र-नहीं है। वैसे यह बोली हजारीबाग के दक्षिणपूर्व भाग, मानभूम, राँची जिले के दक्षिणपूर्व भाग, खारसवाँ और दक्षिण में

---

[1] प्राचीन मगध प्रदेश का विस्तार वर्त्तमान पटना जिला और गया जिला के उत्तरार्द्ध तक सीमित था।

मयूरभंज तथा बामरा तक बोली-जाती है। दूसरे भाषा-क्षेत्र में अवस्थित मालदा जिले के पश्चिम भाग में भी पूर्वी मगही बोली जाती है।

मगही भाषियों की जनसंख्या

मगही भाषी जन-समुदाय मगही क्षेत्रों के अतिरिक्त अमगही क्षेत्रों में भी बसा है। डॉ० ग्रियर्सन ने १९ १ की जनगणना के आधार पर मगही भाषियों के आँकड़े दिए हैं। वे आँकड़े निम्न हैं :—

मगही भाषी क्षेत्रों में मगही भाषियों की जनसंख्या	६२,३६,६६७
अन्य अमगही क्षेत्रों में	२,३१ ४८५
आसाम के निचले भागों में	६३, ६६५
कुल योग—	६६ ५४,८१७

अंतिम जनगणना सन् १९५१ में हुई थी। इसमें कुछ एक लाख मनुष्यों ने ही अपनी मातृभाषा के रूप में बिहारी बोलिया के नाम लिए, जिनमें 'मगही बोलने वालों की संख्या सिर्फ १०१८ दी गई है एवं करीब-करीब उन सब' लोगों ने जिनकी मातृभाषा भोजपुरी, मगही या मैथिली है अपने को हिन्दी भाषी घोषित किया। इसका यह अभिप्राय नहीं कि बिहार में अब बिहारी बोलियाँ लुप्तप्राय हो चुकी हैं। वास्तविकता यह है कि आज भी बिहार में जनसंख्या का अधिकतम भाग घरेलू बोली ही बोलता है। अत: १९ १ के मगही भाषियों के आँकड़ों के आधार पर १९५१ के आँकड़े जनगणना के आधार पर आनुमानिक रूप में दिए जाते हैं।

सन् १९ १ की जनगणना के अनुसार कुल बिहारी बोलने वालों की संख्या लगभग २१ , (भोजपुरी ६७ मैथिली—१, , , एवं मगही ६२,) थी। १९५१ की जनगणना के अनुसार बिहार में कुल हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग १५ , (इसके अन्तर्गत हिन्दी बिहारी एवं उर्दू बोलने वालों की भी संख्या सम्मिलित है) है। इस तरह स्पष्ट है कि पचास वर्षों में बिहारी बोलने वालों (सन् १९५१ की गणना में बिहारी भाषा-भाषियों ने अपने को हिन्दी भाषा भाषी घोषित किया था। बिहार में मातृभाषा के रूप में हिन्दी भाषा बोलने वालों की संख्या बहुत कम है। यहाँ के उर्दू भाषी भी अपने घरों में प्रायः बिहारी बोलियों का ही प्रयोग करते हैं) की संख्या २१ , से बढ़ कर १५ हो गई। यदि यह मान लिया जाये कि यह वृद्धि जनसंख्या की आनुपातिक वृद्धि के कारण हुई है तो यह आँकड़ा निकलता है कि मगही क्षेत्रों में मगही बोलने वालों की संख्या ६१ से बढ़ कर १९५१ में करीब ९४ ६५, हो गई होगी। इसी हिसाब से कुल मगही बोलने वालों की संख्या करीब ६५, से बढ़ कर १९५१ में ९८,९ , हो गई होगी।

यदि उपर्युक्त गणना को सही माना जाए, तो बिहार की कुल जनसंख्या में मगही बोलने वालों की सख्या २३·४ प्रतिशत[1], मगही क्षेत्र में कुल हिन्दी बोलने वालों में मगही-बोलने वालों की सख्या ६५.२ प्रतिशत और मगही क्षेत्र में कुल जनसख्या में मगही बोलने वालों की सख्या ५१.२ प्रतिशत होती है।

ऊपर की सारी गणनाएँ सन् १९५१ की जनगणना पर आधारित हैं। सन् १९०१ की जनगणना के अनुसार कुल बिहारी बोलने वालों में मगही बोलने वालों की सख्या २७.१ प्रतिशत होती है। सन् १९५१ की आनुमानिक गणना से यह सख्या २३.४ प्रतिशत आती है। इससे ऊपर की गणना को ठोस आधार मिलता है।

विविध क्षेत्रों की मगही के रूप और उनका वर्गीकरण

विविध क्षेत्रों में बोली जाने वाली आदर्श मगही के रूपों में बहुत समानताएँ हैं। यद्यपि कहीं कहीं व्याकरण रूपों की भिन्नताएँ[2] भी मिलती हैं, तथापि वे इतनी व्यापक एव महत्त्वपूर्ण नहीं हैं कि उनके आधार पर आदर्श मगही को भिन्न भिन्न वर्गों मे विभक्त किया जाये। भाषा के सम्बन्ध में एक कहावत प्रचलित है —

तीन कोस पर पानी बदले, सात कोस पर बानी।

अर्थात् तीन कोस पर जलवायु में परिवर्तन हो जाता है और सात कोस पर भाषा में। इससे एक ही भाषा-क्षेत्र में कुछ-कुछ दूरी पर कई स्थानीय विशेषताएँ परिलक्षित होने लगती हैं। ये विशेषताएँ उच्चारण संबंधी, शब्द-समूह सबधी अथवा व्याकरण-संबधी हो सकती हैं। यथा—पटना जिले के देहातों और पटना नगर की भाषा में ही

---

१ हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास भाग-१६ पृ० ३६-८१।

२ मगही भाषा और साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान स्वर्गीय श्री कृष्णदेव प्रसाद ने लेखिका से वार्त्ताक्रम में मगही के निम्नाकित भेदों की ओर सकेत किया था —

(क) आदर्श मगही—यह गया जिले में बोली जाती है।

(ख) शुद्ध मगही—यह राजगृह से लेकर बिहारशरीफ के उत्तर चार कोस बयना स्टेशन तक एव पटना जिले के अन्य हिस्सों मे बोली जाती है।

(ग) टलहा मगही—पूर्ण मोकामा, बड़हिया थाना, बाढ सबडिवीजन के गगा के इस पार के कुछ पूर्वी भाग, लक्खीसराय थाना के कुछ उत्तरी भाग, गिद्धौर और पूर्व म फतुहाँ मे बोली जाती है।

(घ) सोनतटिया मगही—सोन के किनारे-किनारे पटने और गया जिले में बोली जाती है।

(ङ) जंगली मगही—राजगीर, गया और छोटा नागपुर के जगलो में बोली जाती है।

अन्यत्र "मगही भाषा और साहित्य" शीर्षक अपने निबन्ध में उन्होंने मगही के अवान्तर भेदों का उल्लेख किया है।

स्पष्ट भेद दीख पड़ता है। पटना नगर के आसपास की मगही में उत्तर-पश्चिम मागधी के मुहावरों का मिश्रण है जब कि पटना जिले के ग्रामों की मगही इन बाह्य प्रभावों से बहुत अंशों तक बची है।[1] गया जिले की मगही की शुद्धता भी बहुत अधिक सुरक्षित है।[2]

आदर्श मगही क्षेत्र में कुछ कुछ दूरी पर परिलक्षित होने वाली इन अनति महत्त्वपूर्ण स्थानीय विशेषताओं के आधार पर उनके अवान्तर भेदों की कल्पना लाभप्रद नहीं मानी जा सकती, कारण ये भेद प्रायः वैकल्पिक ही प्रमाणित होंगे। फिर ये स्थानीय विशेषताएँ मगही भाषा के परस्पर भिन्न होने वाले व्यवहार में यदि कहीं परिलक्षित भी होती हैं तो उसके क्रिया रूपों में ही। शब्द रूप सर्वनाम, विशेषण पदादि में परिलक्षित होने वाली विभेदक विशेषताएँ अत्यल्प एवं अनुल्लेख्य हैं।[3]

मगही-क्रिया-रूपों की विशेषताएँ

मगही में क्रिया के रूप कर्ता एवं कर्म के वाच्यरूप पर आधारित होते हैं। प्रत्येक पुरुष में कर्ता एवं कर्म के लिए अभिव्यक्त आदर अथवा अनादर से संबंधित भाव के अनुसार क्रिया-रूपों में अन्तर हो जाता है। इसीलिए तीनों पुरुषों में भिन्न-भिन्न निम्नांकित क्रिया-रूप होते हैं। यथा—

१ उत्तम पुरुष

कर्म के प्रति आदर और अनादर भाव के अनुसार उत्तम पुरुष में क्रिया के दो रूप होते हैं—

१ अनादर वाचक कर्म—हम ओकरा[4] देखलिऐ, देखलिअइ।

२ आदर वाचक कर्म—हम उनका[5] देखलिन, देखलिअइन।

२ मध्यम पुरुष

कर्ता एवं कर्म के प्रति सम्मान असम्मान भाव के अनुकूल मध्यमपुरुष में क्रिया के चार रूप होते हैं:—

१ अनादर वाचक कर्ता—अनादर वाचक कर्म—तूँ ओकरवा के देखलें देखलहीं।

२ अनादरवाचक कर्ता—आदर वाचक कर्म—तूँ राजा के देखलहिन।

---

१ मुगल कालीन नवाबों एवं पश्चिम के सिपाही सैनिकों और व्यापारियों के पटना नगर में बस जाने के कारण यहाँ की मगही इन की भाषा से प्रभावित हो गई है। एक ओर इस पर उर्दू का प्रभाव पड़ गया है, दूसरी ओर खड़ी बोली का। पर पटना जिले के ग्राम इन बाह्य प्रभावों से प्रायः अछूते रह गए हैं। इनमें यहाँ की भाषा में मिश्रण आदि का अभाव है।

२ गया जिला हिन्दू धर्म का सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। इस पर बाह्य प्रभाव नहीं के बराबर पड़ा है। फिर इसकी स्थिति मगही क्षेत्र में केन्द्रवर्ती है।

३ मगही-व्याकरण में यथा संभव वे सभी रूप दिए गए हैं, जो आदर्श मगही-क्षेत्र में व्यवहृत होते हैं।

४ उसको। ५. उनको।

३. आदरवाचक कर्त्ता—अनादरवा० कर्म—तूँ नौकरवा के देखलहु, अपने नौकरवा के देखलथी।

४. आदरवाचक कर्त्ता—आदरवा० कर्म—तूँ राजा के देखलहुन; अपने राजा के देखलथिन।

३. अन्य पुरुष

कर्त्ता एव कर्म के प्रति आदर और अनादर भाव के अनुसार अन्य पुरुष में क्रिया के चार रूप होते हैं—

१ अनादरवा० कर्त्ता—अनादरवा० कर्म—ऊ नौकरवा के देखलकइ।

२ अनादरवा० कर्त्ता—आदरवा० कर्म—ऊ राजा के देखलकइन।

३ आदरवा० कर्त्ता—अनादरवा० कर्म—ऊ नौकरवा के देखलकथिन।

४ आदरवा० कर्त्ता—आदरवा० कर्म—राजा उनका देखलथिन।

प्रत्येक पुरुष में आदर वाचक कर्म की विशेषता यह है कि इससे सम्बन्धित क्रिया का अन्त सर्वदा 'न' से होता है। 'न' का पूर्ववर्त्ती स्वर प्राय. 'इ' या 'उ' रहता है।

उपर्युक्त क्रिया रूपों के अतिरिक्त मगही में ध्वन्यात्मक स्तर पर अर्थ-व्यजना करने की विशेषता से युक्त कुछ ऐसी क्रियाएँ भी हैं, जिनसे न केवल कर्त्ता और कर्म के प्रति सम्मान-असम्मान भाव की सूचना मिलती है, अपितु उस व्यक्ति के प्रति भी आदर-अनादर-भाव की व्यजना हो जाती है, जिसको कोई सूचना दी जाती है। यथा—

१. उत्तम पुरुष

१. अनादर वाचक कर्म के विषय में अनादरवा० व्यक्ति से कथन—
हम नौकर के देखलुक, देखलिअउ।

२ आदरवाचक कर्म के विषय में, अनादरवाचक व्यक्ति से कथन—
हम राजा के देखलिअउन।

३ अना०वा० कर्म के विषय में, आदरवाचक व्यक्ति से कथन.—
हम नौकर के देखलिवऽ।

४ आदरवाचक कर्म के विषय में, आदर वा० व्यक्ति से कथन—
हम राजा के देखलियो।

२. अन्य पुरुष

१. अना०वा० कर्त्ता—कर्म के विषय में, अना०वा० व्यक्ति से कथन—
उ नौकर के देखलकउ।

२. आदरवा० कर्त्ता—कर्म के विषय में, अना०वा० व्यक्ति से कथन.—
उ राजा के देखलकउन।

३ अनादरवा० कर्त्ता—कर्म के विषय मे, आदरवा० व्यक्ति से कथन—
उ नौकर के देखलकवऽ, देखलको।

४. आदरवा० कर्त्ता—कर्म के विषय में, आदरवा० व्यक्ति से कथन—
उ राजा के देखकथुन, देखलकथुन।

—०—

मगही शब्दकोश

मगही शब्द समूह का प्रधान भाग भारतीय आर्य-भाषा के शब्द-समूह से निर्मित हुआ है।[1] यों इसमें अन्य स्रोतों से आये अनेक शब्द भी विद्यमान हैं। मगही में बहुत से ऐसे शब्द भी मिलते हैं जिनके मूल का अभी तक पता नहीं चल सका है। शताब्दियों तक विदेशी शासन के अन्तर्गत रहने के कारण इसमें बहुत से विदेशी शब्द भी समाविष्ट हो गये हैं। इन्हें ध्यान में रखते हुए, मगही शब्द-समूह का अध्ययन निम्नांकित शीर्षकों में किया जा सकता है:—

१ तद्भव
२ तत्सम
३ देशज
४ भारतीय अनार्य भाषाओं से आये शब्द
५ अन्य प्रान्तीय भाषाओं से आये शब्द
६ विदेशी भाषाओं के शब्द
७ अन्यान्य

१ तद्भव

मगही के शब्द-समूह में ऐसे शब्द सर्वाधिक हैं, जो प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं से चल कर मध्य-कालीन भा आ भाषाओं में प्रयुक्त होते अद्यावधि चले आ रहे हैं। इन्हें 'तद्भव' की संज्ञा दी जाती है कारण ये संस्कृत से ही उत्पन्न हैं। यथा —

प्राण>परान पर्ण>पापक; राजा>राय; गल>गर आदि।

हिन्दी के तद्भव शब्दों में अकारान्त शब्दों का प्रायः हलन्त उच्चारण होता है। मगही भाषी कुछ क्षेत्रों[2] में हिन्दी की ही परम्परा अपनाई जाती है परन्तु कुछ क्षेत्रों[3] में अकारान्त शब्दों के अन्त्य स्वर का दीर्घीकरण हो जाता है। यथा:—

सं०	हि०	गया जिला और पश्चिमी पटना	पूर्वी पटना और मुंगेर
—	—		
हस्त	हाथ्	हाँथ्	हँत्था
भक्त	भात्	भात्	भत्ता
घर्म	घाम्	घाँम्	घामा
कर्म	काम्	काँम	काना

मगही में व्यवहृत तद्भव शब्दों में बहुत से ऐसे शब्द भी हैं, जिनका संबंध प्राचीन भारतीय आर्यभाषा के साहित्यिक रूप (संस्कृत) से जोड़ना कठिन है। इस कोटि के

---

१ देखिए टर्नर नेपाली डिक्शनरी की भूमिका।
२ गया जिला और पश्चिमी पटना।
३ पूर्वी पटना और मुंगेर।

शब्द प्राय: मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं में से होकर मगही में आये हैं। यथा —

पेट, ऊँघना आदि।

२. तत्सम

मगही में तत्सम अर्थात् संस्कृत के विशुद्ध शब्दों की संख्या बहुत कम है। तत्सम शब्दों का व्यवहार प्रायः शिक्षित वर्ग के लोगों में ही सीमित है। सामान्य जनता केवल कुछ प्रचलित तत्सम शब्दों का व्यवहार करती है। यथा—

दिन, राजा आदि।

३. देशज

मगही में देशज अर्थात् "स्थानीय" शब्दों की संख्या बहुत है। सामाजिक रीति-रिवाजों, कृषि-मजदूरी, कल-कारखानों, यातायात के साधनों, पशुओं, घरों के भागों, औजारों, व्यावसायिक साधनों आदि से सम्बद्ध ऐसे अनेक स्वतंत्र शब्द मिलते हैं, जिनका संबंध संस्कृत या प्राकृत से नहीं जुड़ पाता और वे पूर्णरूपेण क्षेत्रीय हैं।

मगही के देशज शब्दों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :—

१ सामान्य देशज शब्द, जो प्राय: सम्पूर्ण मगहीक्षेत्र में प्रचलित हैं। यथा— पाटा[1], रूसा[2], चाक्ल[3], टोना[4] आदि।

२. स्थानीय देशज शब्द, जो क्षेत्र-विशेष के मगही भाषियों में प्रचलित हैं। यथा—

बुतरू[5], लड़का[6], बाबू[7], चिलोई[8] आदि।

४. भारतीय अनार्य भाषाओं के शब्द

मगही में कुछ ऐसे शब्द भी वर्त्तमान हैं, जो अनार्य भाषाओं से आये हैं। यथा—

द्राविड़—पिल्ला[9]

मुंडा —कोड़ी[10]

---

१ लकड़ी का एक औजार, जो जमीन या दीवार समतल करने के काम में आता है।

२. लकड़ी का एक समतल टुकड़ा, जिसकी पीठ पर हैंडल लगा रहता है, और जिसे पकड़ कर पलास्तर चिकना किया जाता है। इस चिकनाने के काम को "रुसियाना" कहते हैं।

३ लकड़ी का चीरा तख्ता, जो वालिफ करने के काम आता है।

४. बाँस का छोटा-छोटा टुकड़ा, जो भाड़ा बाँधने में काम आता है। इसे "डगरना" भी कहते हैं।

५ नालदा-राजगीर में "लड़के" के लिए प्रयुक्त।

६ दानापुर—मनेर में "लड़के" के अर्थ में प्रयुक्त।

७ गया जिला में "लड़के" के अर्थ में प्रयुक्त।

८ गया जिले में "हँसुए" के अर्थ में प्रयुक।

९ कुत्ते का बच्चा। द्राविड़ में "पिल्ला" पुत्र के लिए आता है।

१० "बीस" संख्या-बोधक।

५ प्रान्तीय भाषाओं के शब्द

कुछ ऐसे शब्द भी मगही में प्रविष्ट हो गये हैं, जो भारत के अन्य प्रान्तों की भाषाओं के हैं। यथा—

बासा, माछा, रसगुल्ला, सन्देस, मूढ़ी आदि। ये शब्द बंगला के हैं।

इनके अतिरिक्त निम्नांकित मराठी शब्द भी मगही में मिलते हैं। यथा—

चखत्, ठिकाऊ, पधारू, लागू आदि।

६ विदेशी भाषाओं के शब्द

मगही शब्द-समूह में ऐसे अनेक शब्द हैं, जो देशान्तर की भाषाओं से आकर घुलमिल गये हैं। ये प्रधानतः दो स्रोतों से प्राप्त प्रतीत होते हैं:—

१ इस्लामी। यथा—

सहीसोपुर[1] खिरपीसिया[2], कोमाकोह[3] आदि।

२ यूरोपीय। यथा—

लोसन टैन बंक, सस्टेम डब्बर आदि।

प्रायः सभी विदेशी शब्द मगही में "तद्भव" रूप में ही अपनाये जाते हैं।

७. अन्यान्य

कुछ ऐसे शब्द भी मगही में प्राप्त होते हैं जिनकी अपनी विशेषताएँ हैं। इन शब्दों में भिन्नवाचक अर्थ की गंभीर व्यंजनाएँ निहित हैं। इनमें कुछ तो देशज हैं और कुछ तद्भव। यथा—

टहकार इंजोरिया[4] पपरकद्दू रपता[5] भून्स सेंका[6] छवेर[7], तगेन[8] आदि।

---

१ सैयद यूसुफपुर। २ तुरन्त मौकिया। ३ दैनों सिपोह।
४ शुभ चाँदनी।
५ बदली फटने पर निकली कड़ी धूप।
६ वर्षा कम आने पर पके हुए धानों को निकाल लाने का अवकाश।
७ बदली के बाद निकली धूप वाला दिन।
८ बदली फटने के बाद का स्वच्छ दिन।

प्रथम खंड

व्याकरण

प्रथम अध्याय

मगही के ध्वनि-समूह

मगही-भाषी-क्षेत्रो मे निम्नांकित ध्वनियो का व्यवहार होता है। 'विहारी' वर्ग की अन्य वोलियो के ध्वनि-समूहो से इनकी समानता है।

स्वर

सामान्य स्वर-ध्वनियाँ—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ,
ए, ऐ, ओ, औ, अॅ, अ।

विशेष स्वर-ध्वनियाँ—अॅ, अऽ, ऑ,
इ्, उ् —,
एँ, ए् —,
ऐँ — —,
ओँ, औँ —।

ये सभी स्वर अननुनासिक तथा सानुनासिक दोनो ही हो सकते हैं।

व्यंजन

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्।	
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्।	
ट्	ठ्	ड्	ढ्	—।	
त्	थ्	द्	ध्	न्,	न्ह्।
प्	फ्	व्	भ्	,	म्ह्।
य्	र्	र्ह्,	ल्,	ल्ह्।	
व्	स्	ह्,	ड्	ढ्।	

स्वर

सस्कृत की तरह खडी हिन्दी मे दो ध्वनियों का व्यवहार होता है— अ तथा आ। मगही मे इन दोनो के अतिरिक्त तीन विशेष ध्वनियाँ वर्तमान हैं—अॅ, अऽ तथा ऑ।

अ—'अ' ह्रस्व ध्वनि है, जिसका व्यवहार शब्द के आदि, मध्य और अत मे होता है। यथा—

अमोट, अरसूद, खरवूज, रस, खर।

अॅ—यह ह्रस्व विलम्बित ध्वनि है। इसका व्यवहार खडी हिन्दी मे नहीं होता। यह अति ह्रस्व ध्वनि है, जिसका उच्चारण अगरेजी शब्द 'ब्राइट्न' (Brighton-Bright'n) की 'ओ' (O) ध्वनि की तरह होता है। इस ध्वनि से शब्द का आरम नही हो सकता। यह प्राय शब्द के मध्य मे आती है। यथा—

एँकॅरा, किसनॅमा, हमॅनी, दुसॅमन, कहॅतकइ।

अऽ—यह दीर्घ विलम्बित ध्वनि है, जो प्रायः शब्द के अन्त में स्थित रहती है। जब यह क्रिया के अन्त में आती है, तब आदरवाचक भाव-व्यंजना होती है। यथा—

दऽ, नऽ हँऽ होहऽ, लिखऽ, रहयऽ।

आ—यह दीर्घ ध्वनि है जिसका व्यवहार शब्द के आदि मध्य और अंत में होता है। यथा—

आम, लाम थारी अमावट हमार तोरा, हमरा।

ऑ—यह ह्रस्व स्वर है, जो शब्द के आरंभ और मध्य में आता है। यथा—

ऑटखक ऑंदलकइ, पॉटवइ वोरॉवलक लगॉवलक।

इ, इ़ ई—

इ—ह्रस्व 'इ' का व्यवहार शब्द के आदि मध्य और अंत में होता है। यथा—

गिरल चिड़िया, दहिया गोआरिन आगि आति, देहिं।

इ़—यह अति ह्रस्व ध्वनि है, जिसे हम कठिनाई से सुन सकते हैं। आश्चर्य अंगही के कुछ क्षेत्रों में (बरबीघा मुंगेर तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में) 'इ़' से अन्त होने वाले शब्दों का उच्चारण इस प्रकार होता है कि 'इ़' का पूर्ववर्ती सम्वांश दीर्घ हो जाता है और 'इ़' ध्वनि बहुत ह्रस्व हो जाती है। यथा—हलऽइ़ गेलऽइ़। 'इ' से अन्त होने वाले क्रियापदों में जब प्रश्न निहित रहता है तब इ कुछ दीर्घ हो जाती है, किन्तु जब उसमें उत्तर निहित रहता है तब यह अत्यन्त ह्रस्व हो जाती है। यथा—

प्र —काम भेलइ-इइ ? उ —भेलऽइ़।

प्र०—राम हलइ-इइ ? उ —हलऽइ़।

ई—दीर्घ 'ई' का प्रयोग शब्द के आरंभ मध्य और अंत में होता है। यथा—

खीर, चीलह, फकीर, छकीर, आदमी[1] नहीं।

उ उ़, ऊ—

उ तथा ऊ—ह्रस्व 'उ' तथा दीर्घ 'ऊ' का व्यवहार शब्द के आरंभ मध्य और अन्त में होता है। यथा—

उकरो कुछ, झींगुर, ससुर मुँहलगु डुड-डुड।

ऊख, ऊँसट बेकूफ, सरूप भीखू हमई।

उ़—यह अति ह्रस्व ध्वनि है, जो प्रायः अमत रहती है। यह शब्द के आदि मध्य और अंत में आती है। यथा—

कुछ़, सु़खे, टिकु़लियवा अबऽउ़ गेलऽउ़।

'उ' से अन्त होनेवाले क्रियापदों में जब प्रश्नवाचक भाव रहता है तब 'उ' कुछ दीर्घ हो जाता है, पर जब उसमें उत्तर निहित रहता है तब यह अत्यन्त ह्रस्व हो जाता है। यथा—

प्र —राम आलउ-उउ ? उ०—आलऽउ़।

प्र —मोहन भालउ उउ ? उ —भालऽउ़।

---

१. [illegible] २. [illegible]

ऍ, ए, ए॒—

ऍ तथा ए—ह्रस्व 'ऍ' तथा दीर्घ 'ए' शब्द के आदि, मध्य और अतमे आते हैं। यथा—

ऍकइगो, ऍको, जिऍला,[१] कनेंयाई[२], ऍके।

एगो, हे, कतेक, मोरे।

ए॒—यह अति ह्रस्व ध्वनि है, जो अनेक बार सहायक ध्वनि के रूप मे व्यवहृत होती है। इसका प्रयोग शब्द के अन्त मे नही होता। यथा—

ए॒करे, से॒करे, ढके॒ललइ।

ऑ, ओ—

ऑ तथा ओ—ह्रस्व 'ऑ' ध्वनि शब्द के आदि और मध्य मे तथा दीर्घ 'ओ' ध्वनि शब्द के आरभ, मध्य और अन्त मे आती है। यथा—

ऑहि, सॉहि, मरॉरलक, छिलकॉइया।

तोर, मोर, खटोली, घटलोही, एगो, गइओ[३]।

संयुक्त स्वर

सस्कृत मे चार सयुक्त स्वर हैं, जिनकी उत्पत्ति दो भिन्न-भिन्न स्वरो के मेल से हुई है। यथा—

अ + इ, ई = ए

अ + ए = ऐ

अ + उ, ऊ = ओ

अ + ओ = औ

हिन्दी मे केवल दो सयुक्त स्वर हैं—ऐ और औ। सयुक्त स्वरो को सध्यक्षर (Diphthong) भी कहा जाता है, क्योकि इनमे दो स्वर ध्वनियाँ मिलकर एक अक्षर बन जाती हैं। इन स्वर-ध्वनियो का पृथक् अस्तित्व नही रहता। इसके विपरीत दो, तीन या इससे अधिक स्वरो का भी सयोग होता है, जिसमे प्रत्येक स्वर का पृथक अस्तित्व बना रहता है। इसे हम कई स्वरो का सयुक्त रूप कह सकते हैं। यथा—

ओआ : छोआ, ओइआ : लोइआ, आउर : चाउर।

मगही मे 'ऐ' और 'औ' सध्यक्षर हैं। यथा—ऐसन, जैसन, वौधा, कौराहा[४]। इन दोनो सध्यक्षरो के ह्रस्व रूप भी वर्तमान हैं—ऐं, औं। उदा०—ऐंसनो, जैंसहीं, बौलौंलकइ, सुनौंलकइ। 'ऐ' तथा 'औ' (ह्रस्व तथा दीर्घ दोनों) मे प्रयुक्त भिन्न-भिन्न स्वर, अलग-अलग आकर अपनी स्वतत्र सत्ता भी प्रदर्शित करते हैं। यथा—अए : अएसन, कएसन, चएत, अओ. मओनी, कओर। मगही मे पाये जाने वाले दो और उससे अधिक स्वरो के सयोग के निम्नाकित उदाहरण हैं—

अइ : गइया, अइसन, कइसन।

अउ : मउगी, मउनी, दिअउ।

---

१ जीवन के लिये। २ बहू। ३ गाय को भी। ४ अधिक रोने वाला।

ऐ॑—ऐ॑ठा, गै॑ता[१]।

ओ॑॑—धो॑॑कड़ी[२], लो॑॑दवा[३]।

ओ॑—धो॑छा, खो॑धा[४], दो॑गा[५]।

औ॑॑—नौ॑॑चिया[६]।

औ॑—धौ॑कड़ी, सौ॑गा।

व्यंजन

ङ्—यह अनुनासिक व्यजन प्राय स्ववर्गीय व्यजनो के पहले आता है। इससे शब्द का आरभ नही होता। यथा—

तंङ् सङ्ग, गङ्गा, सङ्ख।

ञ्—यह अनुनासिक व्यजन है। इसका व्यवहार शब्द के मध्य और अत मे होता है। यथा—

चुनिञायल, चुइञा, टुइञा, सइञा, घटिञा।

न् और म्—इन दोनो अनुनासिक व्यजनो का व्यवहार शब्द के आदि, मध्य और अन्त मे होता है। यथा—

नाम, ननकी[७], मान, मार, कमर, दाम।

न्ह और म्ह—ये शब्द के मध्य और अत मे व्यवहृत होते हैं। यथा—

चिन्हना, चिन्हा, सेन्हा, कुम्हार, कुम्हरार, तुम्हीं[८]।

ण्—यह ध्वनि मगही मे नही मिलती। इसके स्थान पर 'न्' का ही प्रयोग होता है। यथा—

पन्डित, टन्टा, डन्ड,[९]।

र्ह और ल्ह—ये ध्वनियाँ शब्द के मध्य और अन्त मे आती हैं। यथा—

गरिह्या,[१०] वरही,[११] मुरही[१२], चुल्हवा, टिल्हा कल्ह।

ड़ और ढ—शब्द के आरभ मे इनका व्यवहार नही होता। यथा—

कुलबोड़न, तोढा[१३], भुंजड़ी, पढ़ल, बाढ, बूढा।

स्—आदर्श मगही मे केवल 'स्' ध्वनि प्रयुक्त होती है। पूर्वी-मगही मे, बगला के प्रभाव के कारण, 'श्' ध्वनि का भी व्यवहार होता है। 'स्' का प्रयोग शब्द के आदि, मध्य और अत मे होता है। यथा—

सब, सगौड़ा[१४], घसल, घाँस।

---

१. मिट्टी खोदने का एक औजार। २. जेब। ३ गीली मिट्टी का पिंड। ४. खोंता। ५ गौना के बाद पतिगृह यात्रा। ६ सोटनी। ७ छोटी या बेटी। ८. एक बाजा। ९ सजा। १० रचा हुआ। ११ बढई या बच्चे के जन्म के १२वें दिन पर होने वाला सस्कार विशेष। १२ चावल का भूँजा। १३ पेटी। १४ साग का पतौरा।

य्—मगही बोली में शब्द के आरंभ में 'य्' का उच्चारण 'ज्' हो जाता है। यथा—यमुना>जमुना यश>जस। लिखने में प्राय 'य' के स्थान पर ज का विकल्प से व्यवहार होता है। इसका प्रयोग शब्द के आदि मध्य और अंत में होता है। यथा—येयार (जेयार) जिया (जिजा) गइया (गइजा) समइया (समइजा)।

व्—यह शब्द के मध्य और अन्त में आता है। 'व्' के स्थान पर विकल्प से 'ब' लिखा और उच्चरित किया जाता है। यथा—

पावल (पाबल), पुवार (पुबार) आवऽ हियऽ (आबऽ हियऽ)।

मगही के शेष व्यंजनों का व्यवहार सामान्यतः हिन्दी के व्यंजनों की भाँति होता है। अतः उनका वर्णन यहाँ नहीं किया जा रहा है।

संयुक्त व्यंजन

मगही में संयुक्त व्यंजनों का व्यवहार अनेक स्थलों पर होता है। यथा—

कुट्ठा, भिच्छा, सत्ता मन्तर, लम्मा लिस्सा आदि।

उपवर्ती स्वर (Concurrent vowels)

य् तथा व् की श्रुति

अन्य बिहारी बोलियों की तरह, मगही में जब 'इ' के बाद 'अ' अथवा 'आ' आता है तब 'अ' अथवा 'आ' के स्थान पर 'य' की श्रुति होती है। यथा—

भरिअल—भरियल; सड़िअल—सड़ियल, मरिअल—मरियल; मछिआ—मछिया; बुढ़िआ—बुढ़िया, पढ़िआ—पढ़िया लठिआ—लठिया।

इसी प्रकार जब 'उ' के बाद 'अ' अथवा 'आ' आता है, तब 'अ' या 'आ' के स्थान पर 'व' की श्रुति होती है। यथा—

गोबअन—गोबवन मेहरूअन—मेहरूवन,

अँसुआ—अँसुवा; हँसुआ—हँसुवा।

ये दोनों श्रुतियाँ विकल्प से लिखित और उच्चरित होती हैं।

स्वरों का संकोचन (Contraction)

जब 'अ' स्वर के तुरंत बाद 'इ' आती है तब विकल्प से 'अ' और 'इ' दोनों मिल कर 'ऐ' हो जाते हैं (अ+इ=ऐ+)। यथा—'दइ' का 'दै'।

इसी प्रकार जब 'अ' के तुरंत बाद 'उ' आता है, तब विकल्प से दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं (अ+उ=औ+)। यथा—'दउ' का 'दौ'।

+ स्वर-संधीकरण के समय यद्यपि संधि के नियमानुसार 'अ+इ' को 'ए' हो जाना चाहिए, पर 'ऐ' हो जाता है। इसी प्रकार 'अ+उ' को 'ओ' हो जाना चाहिए पर 'औ' हो जाता है। [illegible] में 'ऐ' तथा 'औ' का भी संकेत प्रयोग मिलता है।

उपधापूर्व-स्वर का ह्रस्वीकरण
(Shortening of antipenultimate vowel.)

मगही के सज्ञा-रूपो और क्रिया-रूपो के अध्ययन के लिए उपधापूर्व-स्वरो के ह्रस्वीकरण के नियमो की जानकारी आवश्यक है। ये नियम विहारी बोलियो मे व्यवहृत होते हैं, खडी वोली हिन्दी मे नही। इन नियमो का उल्लेख सर्वप्रथम डा० हार्नले ने अपने 'गॉडियन ग्रामर'[१] मे किया था। पुन डा० ग्रियर्सन ने मैथिली व्याकरण तथा 'सेवन ग्रामर्स ऑफ दी डायलेक्ट्स ऐन्ड सवडायलेक्ट्स ऑफ दी विहारी लैंग्वेज,[२] मे इसका उल्लेख किया है।

स्वरो के ह्रस्वीकरण के सम्बन्ध मे शब्दाशो (Syllables) की गिनती की जायेगी। अत' यह जान लेना चाहिये कि अन्तिम हलन्त व्यजन को एक शब्दाश नही माना जाता। उसकी गिनती ही नहीं होती। यथा, घर्' शब्द एक शब्दाश से वना है, किन्तु 'देखब्' दो शब्दाशो से वना शब्द है—जैसे, 'दे', 'खब्'। इसके विपरीत देखबऽ' तीन शब्दाशो से वना शब्द है। यथा—'दे', 'ख', 'बऽ'। 'बऽ' को एक शब्दाश माना गया है, क्योकि अतिम व्यजन होते हुए भी यह हलन्त नही है।

स्वरो के ह्रस्वीकरण के नियम निम्नाकित हैं :—

१. जव कभी स्वर 'आ' शब्द के अन्त की ओर से दूसरे शब्दाश (Syllable) के पहले आता है, तव यह ह्रस्व हो जाता है। यथा—'नाऊ' शब्द लें। इसमे 'आ' दीर्घ ही रह जाता है, क्योकि यह अन्त की ओर से दूसरे शब्दाश मे आता है। 'नाऊ' के ही दीर्घ रूप 'नउवा' मे 'नाऊ' का 'आ' ह्रस्व हो जाता है, क्योकि यहाँ 'आ' अन्त की ओर से दूसरे शब्दाश के पहले आता है। इसी प्रकार 'माली' का दीर्घ रूप 'मलिया' हो जाता है, और 'पाव', जिसकी क्रियार्थक सज्ञा 'पावल' है, निश्चयवाचक, भूतकाल, मध्यमपुरुष मे 'पाउलऽ' न होकर, पउलऽ' हो जाता है।

२. इसी तरह कोई स्वर या सयुक्त स्वर जव अन्त की ओर से तीसरे शब्दाश मे आता है, तव वह ह्रस्व हो जाता है, यदि 'य' अथवा 'व'[३] के अतिरिक्त दूसरा 'कोई व्यजन उसके वाद आवे। यथा—'देख' का 'ए' दे॑खलूॅ' मे ह्रस्व हो जाता है, क्योकि यह अन्त की ओर से तीसरे शब्दाश मे आता है और इसके तुरत वाद व्यजन की स्थिति है। इसके विपरीत √चू, निश्चयवाचक, भूतकाल, उत्तमपुरुष मे 'चूअलूॅ' या 'चूवलूॅ' होता है, न कि 'चुअलूॅ' या 'चुवलूॅ'। 'ऊ' दीर्घ ही रह जाता है, क्योकि यह अन्त की ओर से तीसरे शब्दाश मे तो आता है, किन्तु इसके वाद स्वर 'अ' या अर्द्धस्वर 'व' की स्थिति है।

३. तीसरा नियम यह है कि कोई भी स्वर, जो शब्द के अन्त की ओर से तीसरे शब्दाश के पहले आता है, अवश्य ही ह्रस्व हो जाता है, चाहे उसके वाद व्यजन रहे या नहीं। 'इसलिए 'चू' का 'ऊ' भूतकाल उत्तमपुरुष चूइलूॅ' मे तो दूसरे नियम से

---

१. Gaudian Grammar २ Seven Grammars of the dialects and subdialects of the Bihari language, Part I—by Dr. Grierson
३. देखिए—उपवर्ती स्वर, पृ० ६

दीर्घ ही रह जाता है किन्तु मध्यमपुरुष 'चुरहु' में ह्रस्व रूप में आता है क्योंकि यहाँ यह अन्त की ओर से चौथे शब्दांश में है।

इसी तरह 'हो' के संभावनार्थ वर्तमानकाल उत्तमपुरुष के क्रियारूप 'हो ँइअइ' में 'ओ' का ह्रस्व रूप 'ओ ँ' हो जाता है। किन्तु जब स्वरों के संकोचन के नियमानुसार 'अइ' का 'ऐ' में संकोचन हो जाता है तब 'ओ' अन्त की ओर से तीसरे ही शब्दांश में आता है और इसलिये ह्रस्व नहीं होता है। इसीलिए पूर्वरूप 'होइऐ' है न कि 'हो ँइऐ'।

४ पिछले उदाहरण के सम्बन्ध में स्मरणीय यह है कि जो स्वर किसी भी उपर्युक्त नियम से ह्रस्व हो गया है, वह फिर दीर्घ हो जाता है यदि उसके बाद आनेवाले शब्दांशों की संख्या संकोचन के किसी नियम विशेष से घट जाये। इसीलिए 'दे ँखइत' में 'ए' ह्रस्व है। किन्तु जब 'अ' और 'इ' का 'ऐ' में संकोचन हो जाता है तब 'देखैत' में 'ए' दीर्घरूप में ही रह जाता है। यदि संकोचन के बाद भी स्वर के बाद आनेवाले शब्दांशों की संख्या इतनी अधिक है कि स्वर अपने ह्रस्व रूप में रहे तो अवश्य ही वह ह्रस्व रूप में रहेगा। उदाहरणार्थ हम √देख् के संभावनार्थ भूतकाल उत्तमपुरुष के क्रिया रूप को लें। इसका एक रूप छः शब्दांशों का है। यथा—'दे ँखइतिअउ'। यहाँ स्वरों के संकोचन के नियम से 'खइ' 'खै' हो जायेगा और 'अउ' 'औ' हो जायेगा। इस प्रकार हम 'दे ँखै तिऔ' भी लिख सकते हैं। यहाँ 'ए' अब भी अन्त से तीसरे शब्दांश के पहले है इसलिए ह्रस्व रहता है। ध्यान रहे कि 'ऐ' का भी ह्रस्व रूप 'ऐ ँ' हो गया है, क्योंकि यह अन्त की ओर से दूसरे शब्दांश के पहले आया है और इसके तुरत बाद व्यञ्जन 'त' की स्थिति है, जो य अथवा 'व' की तरह अर्द्धस्वर नहीं है।

अपवाद—उपर्युक्त नियमों का एक महत्त्वपूर्ण अपवाद यह है कि प्रेरणार्थक क्रियाओं के दीर्घस्वर कभी ह्रस्व नहीं होते हैं। इस तरह 'मरब' की प्रेरणार्थक क्रिया 'मारब' है और इसकी क्रियार्थक संज्ञा का विकारी रूप 'मारेबा' है, न कि 'मरबा'।

हलन्त—य् तथा व्

जब 'य' और 'व' के बाद ह्रस्व विलम्बित स्वर आता है, तब 'य' तथा 'व' दब के दोनों हलन्त हो जाते हैं। जैसे—'य्' और 'व्'।

जब शब्द के मध्य में स्थित 'य' और 'व' के बाद ह्रस्व विलम्बित स्वर आता है, तब 'य' और 'व' बदल कर क्रमशः 'इ' या 'उ' हो जाते हैं।

[1] यह 'इ' या 'उ' विकल्प से पूर्ववर्ती 'अ' के साथ जुड़ कर क्रमशः 'ऐ' या 'औ' हो जाता है। यथा—

निश्चयार्थ भूतकाल उत्तमपुरुष—'उठयलौं'। 'य' के बाद ह्रस्व विलम्बित स्वर आने के कारण इसका रूप 'उठइलौं' हो जाता है। 'इ' का पूर्ववर्ती व्यंजन 'ठ' अकारान्त है, अतः इसका रूप 'उठैलौं' हो जाता है।

इसी प्रकार निश्चयार्थ भूतकाल उत्तमपुरुष—'उठवलौं'[1] लें। 'व' के बाद ह्रस्व विलम्बित स्वर आने के कारण इसका रूप 'उठउलौं' हो जाता है। 'उ' का पूर्ववर्ती व्यंजन 'ठ' अकारान्त है अतः इसका रूप 'उठौलौं' हो जाता है।

---

१ देखिए—स्वर संकोचन १।

द्वितीय अध्याय

मगही-व्याकरण

विकारी शब्द[1] (Declinable words)

संज्ञा[2] (Noun

मगही मे सज्ञा के चार रूप मिलते हैं —

१. (क) ह्रस्व-निर्बल (Weak), (ख) ह्रस्व-सबल (Strong), २. दीर्घ (Long) तथा ३. अतिरिक्त (Redundant)।

१. (क) ह्रस्व-निर्बल रूप—यह प्राय ह्रस्व स्वरान्त या व्यंजनान्त होता है। यथा—ह्रस्व स्वरान्त—लोह, घोड, मीठ, तोड़, जोड आदि। व्यजनान्त—लोह्, घोड़्, मीठ्, तोड, जोड आदि।

(ख) ह्रस्व-सबल रूप—इसे संज्ञा के अन्तिम स्वर को दीर्घ करके बनाया जाता है। यथा—लोहा, घोड़ा, मीठा, तोडा, जोड़ा[3] आदि।

२. दीर्घ रूप—सज्ञा के ह्रस्व-निर्बल रूप मे 'या' अथवा 'वा' प्रत्यय जोड़कर, दीर्घ रूप बनाया जाता है। यथा—ह्र०— घर, दी०— घरवा; नट—नटवा, फर—फरवा; लोर—लोरवा। यदि सज्ञा का ह्रस्व सबल रूप हो, तो पहले उसका ह्रस्व-निर्बल रूप बना कर फिर उसमे 'या' अथवा 'वा' प्रत्यय जोड कर, दीर्घ रूप बनाया जाता है। यथा— घोड़ा—घोँड़वा, पोथी—पोँथिया, माली—मलिया आदि।

३. अतिरिक्त रूप—इसकी रचना, सज्ञा के दीर्घ रूप के अतिम प्रत्यय की पुनरावृत्ति करके होती है। यथा—दी०—मलिया, अति०—मलियवा, आँसू— अँसुअवा, घोड़वा— घोड़ववा, आदि। अतिरिक्त रूपो का व्यवहार ग्रामीणो मे अधिक प्रचलित है।

मगही की सज्ञाओ के सबध मे निम्नांकित बातें उल्लेखनीय हैं :—

१. मगही बोली मे व्यवहृत, सज्ञा के उपर्युक्त चारो रूप, अन्य बिहारी बोलियों मे भी मिलते हैं। २. मगही में सभी सज्ञाओ के ये चारों रूप सर्वदा नही मिलते, प्राय तीन ही रूप मिलते हैं। किस विशेष सज्ञा मे कौन-सा रूप व्यवहृत हो रहा है, यह केवल प्रयोग से ही जाना जा सकता है। बहुत-सी सज्ञाओ मे प्रथम दो ही रूप गृहीत होते हैं। वैकल्पिक रूप से, सभी सज्ञाएँ पिछले दोनो रूप (दीर्घ और अतिरिक्त) ग्रहण कर सकती हैं। ३. सज्ञा का निर्बल रूप, उसका सरलतम रूप है, क्योंकि इसमे कोई प्रत्यय नही जुडता।

---

१. "जिन शब्दों का रूप, अर्थ के कारण अथवा दूसरे शब्दों के सम्बन्ध से बदल जाता है, उन्हें 'विकार शब्द' कहते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विकारी-शब्द भेद हैं।"

सं० हि० व्या०—का० गु

२ "संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी वस्तु का नाम प्रकट हो।"

व्या० मर्य०—सु० वि

३. सबल रूप में, संज्ञा का रूप हिन्दी के ही समान रहता है।

बिना प्रत्यय के सहयोग के ही उसकी रचना होती है। ४ मगही में कुछ संज्ञाएँ सर्वदा ह्रस्व स्वरान्त रहती हैं। यथा—भात रात या राति, कोर आदि। इसके विपरीत कुछ संज्ञाएँ सर्वदा दीर्घ स्वरान्त रहती हैं। यथा—माछी पोथी माऊ आदि। ५ कुछ संज्ञाओं के निर्बल और सबल दोनों रूप व्यवहृत होते हैं। यथा—मि०—घोड़ घ — घोड़ा घर—घरा खोह—खोहा आदि। ६ मगही में संज्ञा का ह्रस्व रूप ही स्वाभाविक रूप होता है। दीर्घ-रूप का व्यवहार, अनादर सूचक और निश्चय बोधक भाव-व्यंजना के लिये किया जाता है। अतिरिक्त संज्ञा-रूपों का व्यवहार भी इसी प्रयोजन से किया जाता है। पर उसमें अनादर और निश्चय की मात्रा अधिक रहती है। यथा—ह्र — घोड़ा के ले ले आवऽ। दी —ओकर घुरुआ[1] के खोलौले ऐहऽ अति —ओकर घुरुअवा के खोलौले ऐहऽ। उपर्युक्त वाक्यों में 'घोड़ा' शब्द संज्ञा के स्वाभाविक रूप का बोधक है और 'घुरुआ' या 'घुरुअवा' शब्द अनादर सूचक और निश्चय बोधक भावों का द्योतक है।

लिंग[2] (Gender)

'बिहारी' की अन्य बोलियों (भोजपुरी और मैथिली) की भाँति मगही में भी दो लिंग होते हैं—स्त्रीलिंग और पुंलिंग। इस बोली में बहुत-सी ऐसी संज्ञाएँ हैं जो या तो पुंलिंग होती हैं या स्त्रीलिंग। यथा—

पु	स्त्री०
मटपर	बोरसी
खड लँढ़[3]	मौना[4]
बगा हुग्गा[5]	मइनी
चूहा	बोखदी
बैल	पहेरी
मसा, मच्छा	मइर
ढेरा	चिरई
भागू	मइमों

मगही में ऐसी अनेक संज्ञाएँ हैं, जिनके स्त्रीलिंग और पुंलिंग दोनों ही रूप होते हैं। ऐसी संज्ञाओं में निम्नांकित प्रत्ययों को जोड़ कर, पुंलिंग से स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं—

'आइन'

कुछ पुंलिंग संज्ञाओं में 'आइन' प्रत्यय जोड़ कर स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं। पर

---

१ बछड़ा।

२. "प्राणियों का बोध अथवा पदार्थों की जाति बताने के लिये शब्दों में जो रूपांतर होता है उसे लिंग कहते हैं।"—हि० वि० व्या०—का० गु०।

३ घर के पिछले भाग में स्थित मैदान, जहाँ साग-सब्जी बोयी जाती है।

४ छोटी पेटारी।

५ साथी।

वैसा करते समय यदि मूल शब्द मे दीर्घ स्वर का प्रयोग हुआ हो, तो उनका ह्रस्वीकरण हो जाता है। यथा—

पु०-रूप	ह्रस्वीकरण	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
गुरू		आइन	गुरुआइन
बाबू	बबु	,,	बबुआइन
लाला	लल्	,,	ललाइन
दूबे	दुब्	,,	दुबाइन

'इन'

कुछ पुलिंग सज्ञाओ मे 'इन' प्रत्यय जोडकर स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं। ऐसी सज्ञाओ का अत्यक्षर यदि अकारान्त हुआ, तो उससे स्वर 'अ' निकाल कर प्रत्यय लगाया जाता है। आकारान्त होने पर सीधे प्रत्यय जुड़ जाता है। यथा—

पु० रूप	'अ' स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्री० रूप
मलाह	मलाह्	इन	मलाहिन
सियार	सियार्	,,	सियारिन
जाट	जाट्	,,	जाटिन
मछुआ		,,	मछुआइन[1]
बनिया		,,	बनियाइन[1]

'ई'

प्राणीवाचक आकारान्त पुलिंग संज्ञाओ में 'ई' प्रत्यय जोड़ कर स्त्रीलिंग-रूप बनाये जाते हैं। प्रत्यय लगाने के पूर्व स्वर 'आ' हटा दिया जाता है। यथा—

पु० रूप	'आ' स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
साला	साल्	ई	साली
महरा	महर्	,,	महरी
मौगा	मौग्	,,	मौगी
बभना	बभन्	,,	बभनी

'इया'

आकारान्त पुलिंग सज्ञाओं मे 'इया' प्रत्यय जोडकर स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं, पर वैसा करते समय उन्हें ह्रस्व-निर्बल रूप मे ले आया जाता है। यथा—

पु० रूप	ह्रस्व-निर्बल रूप	पु०	स्त्री० रूप
घोड़ा	घोड़्	इया	घोड़िया
बूढ़ा	बूढ़्	,,	बुढ़िया

१. गया जिले में मछुअइन और बनियइन जैसे रूपों का भी व्यवहार होता है।

अपवाद—१ उन आकारान्त पुंलिंग संज्ञाओं जिनके ह्रस्व-निर्बल रूप नहीं होते के अन्त्यस्वर से स्वर हटा कर, 'इया' प्रत्यय जोड़ कर स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं—

पु रूप	स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्री० रूप
बकरा	बकर्	इया	बकरिया
गदहा	गदह्	,	गदहिया

२ कुछ पुंलिंग संज्ञाओं के दीर्घ रूपों से अन्त्य 'वा' का लोप कर दिया जाता है और उसकी जगह 'न्' रख कर 'इया' प्रत्यय जोड़ स्त्रीलिंग-रूप बनाये जाते हैं—

पु रूप	प्रत्यय	स्त्री रूप
सोनरवा	इया	सोनरनिया
कुंबड़वा	,,	कुंबड़निया
कहरवा	,,	कहरनिया
कुम्हरवा	,,	कुम्हरनिया

'नी'

कुछ पुंलिंग संज्ञाओं में नी प्रत्यय लगा कर स्त्रीलिंग-रूप बनाये जाते हैं। यथा—

पु० रूप	पु०	स्त्री रूप
मुसहर	नी	मुसहरनी
मेहतर	नी	मेहतरनी

'ऐनी'

कुछ पुंलिंग संज्ञाओं के अंत्यस्वर में आने वाले स्वर को लुप्त करके 'ऐनी' प्रत्यय जोड़ते हुए स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं। यथा—

पु रूप	स्वरहीन रूप	प्र	स्त्री रूप
खत्री	खत्र्	ऐनी	खत्रैनी
चौधरी	चौधर्	,	चौधरैनी
कुंबड़ा	कुंबड़्	,,	कुंबड़ैनी
पंडित	पंडित्	,,	पंडितैनी

कई स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द सिर्फ स्त्रीलिंग के लिए ही प्रयुक्त होते हैं। यथा—सती, गाभिन, बाँझिन, सोहागिन, अहिवात, डाइन, देनी, चुड़ैल आदि।

कुछ अन्यान्य ज्ञातव्य बातें ये हैं—

१ मगही में संज्ञाओं का लिंग-ज्ञान क्रियाओं द्वारा नहीं होता क्योंकि क्रिया में लिंग भेद नहीं होता है। यथा—

मोहन आ रहल, गौरी आ रहल।

२ मगही में लिंग के कारण सम्बन्ध कारक के चिह्न में भी कोई परिवर्तन नहीं होता। यथा—

राम के घर राम के बहिन।

३ मगही शब्दो के विशेषणो मे भी लिंग के कारण कोई रूपगत परिवर्तन नहीं होता। यथा—

मुक्खल गइया, मुक्खल बैला, या
जेठवा बैसखवा के तपलइ भुमरिया[१]
सुन्नर[२] तिरियवा पानी भरि लइ हो राम।

वचन[३] (Number)

बिहारी की अन्य बोलियो के समान, मगही मे संज्ञाओ के दो वचन होते हैं—एकवचन और बहुवचन। बहुवचन के दो भेद होते हैं—साधारण और यौगिक।

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम—

१. एकवचन संज्ञा के अन्त्य दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके, 'न' जोडने से बहुवचन के रूप बनते हैं। यथा—

ए०	बहु०
घोडा	घोड़न
घोँड़वा*	घोड़वन*
बेटा	बेटन
बेँटवा*	बेँटवन*

२. एकवचन संज्ञा के मूल रूप मे ही 'न' जोड कर बहुवचन के रूप बनाये जाते हैं—

ए०	बहु०
बैल	बैलन
घर	घरन

३. एकवचन से बहुवचन के रूप बनाने के लिये, एकवचन संज्ञा के ह्रस्व स्वरान्त अथवा व्यजनान्त रूप को दीर्घ रूप मे परिणत करके तथा उस दीर्घ रूप के अन्त्य दीर्घस्वर को ह्रस्व करके 'न' जोडा जाता है। यथा—

ए० व० (ह्रस्वरूप)	ए० व० (दी० रूप)	बहु०
औरत	औरतिया	औरतियन
बैल	बैलवा	बैलवन
आँम	अँमवा	अँमवन
माला	मलवा	मलवन
रानी	रनियाँ	रनियन

---

१ धरती की धूल।
२ सुन्दर।
३. "एक वस्तु सूचित करनेवाली संज्ञा एकवचन और एक से अधिक वस्तुओं का बोध कराने वाली संज्ञा बहुवचन कहाती है।" - सं० हि० व्या०—का० गु०
* ये, संज्ञा के दीर्घ रूप के एकवचन और बहुवचन के रूप हैं।

४ एकवचन में समूह निर्देशक संज्ञा (Noun of Multitude) 'सब' अथवा प्राणवारियों के लिए 'लोग' संयुक्त करके 'यौगिक बहुवचन' (Periphrastic plural) का रूप बनाया जाता है। यथा—घरसब मालीलोग आदि। इस प्रकार 'घर सब' का व्यवहार 'घरन' के स्थान में होता है और मालीलोग केर' का प्रयोग मलियन केर के स्थान में होता है। बहुवचन का रूप बनाने का यह सरलतम उपाय है।

५ कभी-कभी बहुवचन-ज्ञापक प्रत्यय 'सब' या 'लोग' हटा दिया जाता है। इससे बहुवचन संज्ञा एकवचन सी दीख पड़ती है। यथा—सोहनो क बेटा के के (कौन) समझवे। यहाँ 'बेटा सब' या 'बेटालोग' के स्थान में 'बेटा' का व्यवहार हुआ है।

जब संज्ञा के पहले संख्यावाचक विशेषण आता है तब यह एक साधारण नियम बन जाता है। यथा—

> अनेक तरह के जनावर[1] देखल गेलइ—पटना।
> बहुत तरह के जनावर देखल गेल—गया।
> लोहा के चार फाटक टूट गेलइ—पटना।
> लोहा के चार गो फाटक टूट गेल—गया।

कारक[2] (Case)

मगही में आठ कारक होते हैं। कर्त्ता छोड़ कर अन्य कारकों में परसर्गों[3] को जोड़ने से कारक-रूप सम्पन्न होते हैं। निम्नलिखित परसर्गों को जोड़ कर संज्ञा के रूप बनाये जाते हैं —

कर्त्ता— कर्त्ता में परसर्ग व्यवहृत नहीं होता है।
कर्म[4]—के, (कर्म कारक बिना परसर्ग के भी व्यवहार में आता है।)
करण—के (का)[5] से लेल लागी खागी, खातिर, बदे वास्ते, ए[6]।
अपादान—से से[7] सेती, सती[7]।

---

१ जानवर।

२ "संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध क्रिया या दूसरे शब्द के साथ सूचित किया जाता है उसे कारक कहते हैं।" [illegible]

३. संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध क्रिया या दूसरे शब्द से बतलाने के लिए, उनके साथ, जो प्रत्यय अथवा चिह्न लगाया जाता है उसे परसर्ग या अनुसर्ग कहते हैं। यथा—के, से, का, से, केर, में।

४. अनेक क्रियाएँ एक साथ ही दो कर्म लेती हैं जिन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। यथा—सिखाना, पढ़ाना, देना, देखा, दिखलाना आदि। दो कर्म जब एक साथ आते हैं, तब मुख्य कर्म पीछे रहता है और किया चिह्न से [illegible] है। यथा—सोहन हमर लइकवा के पानी पढ़ाव हथी। इसमें 'लइकवा' [illegible] और 'पानी' प्रधान कर्म है।

५. 'सा' 'सागी' का संक्षिप्त रूप है। यह सम्प्रदान कारक के अन्य चिह्नों से अधिक प्रचलित है।

६ वस्तु के अभाव [illegible] वाली क्रियार्थक संज्ञा में 'ए' प्रत्यय जोड़ कर सम्प्रदान कारक का रूप बनाया जाता है। यथा—तोरा बैठ [illegible] हमुख। क्रियार्थक संज्ञा 'बैठ' में 'ए' प्रत्यय जोड़ा गया है (बैठ+ए)। [illegible]

सम्बन्व—क,[1] के, केर, केरा, केरी[2]।
अधिकरण—मे, में, मों, ने[3]
सम्बोधन—अहो, एहो, अगे (गे) अजो (जी) एवे (ए,वे) अवे, अरे, रे।
अगे, गे और अहे का व्यवहार स्त्रियो के सम्बोधन के लिये होता है। अरे, अहो आदि का व्यवहार पुरुषों के सम्बोधन के लिए होता है।

सम्बन्ध कारक के कुछ रूपो को छोड कर, अन्य सर्वनामो मे भी ये परसर्ग लगाये जातेहैं। एकवचन, सम्बन्ध कारक मे व्यवहृत बहुत से सर्वनामो मे इन परसर्गों का व्यवहार नही होता।

निम्नाकित संज्ञाओ मे, उपर्युक्त परसर्गो का व्यवहार हुआ है। सभी संज्ञाओ मे, इसी प्रकार इनका व्यवहार होगा :—

(अ) तद्भव पुलिंग आकारान्त संज्ञा

घोड़ा[4]

ह्र० रूप	निर्बल—घोड़	दी०[5]—घोँड़वा, घोँड़न्वा
	सबल—घोडा	अति[6]—घोँड़वा, घोड़ौववा

	ए० व०	ब० व०
कर्त्ता—	घोड़ा[6]	घोडन[7]
कर्म—	घोड़ा, घोड़ा के	घोड़न, घोड़न के
करण—	घोडा से	„ से
सम्प्र०—	घोड़ा ला	„ ला
आपा०—	„ से	„ से
सम्ब०—	घोड़क, घोड़ा के	घोडनक, घोड़न के
अधि०—	घोड़ा में	घोड़न में
सम्बो०—	ए घोड़ा	ए घोड़न

१ शब्दों के विकारी रूप के अन्तिम दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर, केवल 'क' जोड़ कर भी सम्बन्ध दिखाया जाता है। घोड़ा का विकारी रूप 'घोँड़वा' है। 'वा' के दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर उसमें 'क' जोड़ दिया जाता है। यथा—घोड़वक, घोड़ियक, घरवक आदि।

२. 'केरा' और 'केरी' का प्रयोग पटना सिटी में मिलता है। इन रूपों का अत्यल्प प्रचलन है। 'केरा' और 'केरी' 'केर के' पुलिंग और स्त्रीलिंग रूप हैं। 'क' 'के' तथा 'केर' लिंग के कारण परिवर्तित नहीं होते। 'केरा' का प्रयोग किसी भी पुलिंग संज्ञा के पूर्व, बिना वचन के प्रतिबन्ध के होता है, किंतु 'केरी' का व्यवहार केवल स्त्रीलिंग में होता है। लोकगीतों में 'केरा' 'केरी' का अधिक व्यवहार देखने में आता है। यथा—

सोने केरा नैया रे मलहा, रूपे करूवार। फूलवा लोढन गेल, राजा केरी बेटिया।

३ अधिकरण कारक में 'ने' चिह्न का व्यवहार पूर्व पटना-(बिहार शरीफ और उसके आगे) क्षेत्र में होता है। यथा—हमनी पानी ने भींज गेली। यहाँ 'ने' का व्यवहार 'में' के अर्थ में हुआ है।

४ पूर्वोल्लिखित सभी परसर्गों का व्यवहार, क्रमश: सभी कारकों और दोनों वचनों में होगा।

५ दीर्घ तथा अतिरिक्त रूप की परिभाषा—पृ० ६

६ अथवा घोड़, घोँड़न्वा, घोडवा या घोँड़ौवा। इसी प्रकार सभी एकवचन के रूपों में होगा।

७ अथवा घोड़न्वन या घोड़ौवन, घोड़वन। इसी प्रकार समस्त बहुवचन के रूपों में होगा।

(आ) व्यंजनान्त पुलिंग संज्ञा

घर्

हृस्व रूप { नि०—घर / सब —घरा | दी०—घरवा, घरवा / अति —घरौवा, घरवा

	ए० व०	ब० व०[1]
कर्त्ता	घर[2]	घरन[3]
कर्म	घर, घर के घरे के[4]	घरन, घरन के
करण	घरैं, घरे, घर से, घरे से	„ से
सम्प्र	घर का घरे का	„ का
अपा	घर से घरे से	„ से
सम्ब	घरक घर के, घरेक घरे के	घरनक घरन के
अधि	घरे, घर मे घरे मैं	घरन मैं
सम्बो	ए घर	ए घरन

संज्ञा-रूपों के उपर्युक्त उदाहरण पर्याप्त हैं। इन्हीं की तरह अन्य संज्ञाओं के रूप चलेंगे। सभी स्वरान्त संज्ञाओं के रूप 'घोड़ा' के रूप की तरह चलेंगे तथा सभी व्यंजनान्त संज्ञाओं के रूप 'घर' की तरह होंगे।

सभी दीर्घ तथा अतिरिक्त रूपों का अन्तिम अक्षर अनुनासिक के जुटने पर, सानुनासिक (Nasalised) हो सकता है। अनुनासिक का प्रयोग वैकल्पिक रूप में होता है। यथा—घोरम्वा अथवा घोड़म्वाँ घोड़ौवा—घोड़ौवाँ घरम्वा—घरम्वाँ घरौवा—घरौवाँ मछिया—मछियाँ।

कारक के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें उल्लेखनीय हैं —

१ सभी दीर्घ स्वरान्त संज्ञाओं के साधारण और विकारी रूप समान होते हैं। यथा—कर्त्ता—घोड़ा विका०—घोड़ा। कर्म—घोड़ा के, विका —घोड़ा के।

२. व्यंजनान्त संज्ञापदों के कर्त्ता तथा विकारी के रूप कभी कभी एक से होते हैं और कभी कभी विकारी रूप 'ए' प्रत्यय लगाकर बनाये जाते हैं। यथा—कर्त्ता - घर

---

१ बहुवचन संज्ञा में 'सब' जोड़ कर भी बहुवचन के रूप बन सकते हैं। यथा—
घोड़ा सब के, घोड़ा सब का, घर सब के, घर सब का।

२ अथवा घरा, घरवा, घरम्वा, घरौवा। समस्त एकवचन में इसी प्रकार के रूप बन सकते हैं।

३ अथवा घरवन, घरम्वन, घरौवन। समस्त बहुवचन में ये रूप बन सकते हैं।

४ सभी व्यंजनान्त पुलिंग संज्ञा के एकवचन के रूप को, अन्त में 'ए' प्रत्यय जोड़कर, विकारी बनाया जा सकता है। यह विविध कारक चिह्नों का प्रतिनिधित्व करता है। हम घरे (घर से) से आयल। हम घर (घर पर) चल जायब।

कर्म—घर के या घरे के। इन सज्ञाओ मे प्राय 'ए' प्रत्यय का व्यवहार कई कारक-चिह्नो के सकेत के लिए भी होता है। यथा[१] —

कर्म —किताबे हाँथ में रक्खऽ नऽ।
करण —हम बले ले जायब।
सम्प्र०—तोरा बैइठे कहऽ हथुन।
सम्ब० —सोना केरा नइया रे मलहा, रूपे करूवार।
अधि०—घरे हथुन।

३. सभी दीर्घ स्वरान्त सज्ञाएँ, सम्बन्ध कारक मे, 'क' प्रत्यय जुडने पर ह्रस्व हो जाती हैं। यथा—घोड़क, किन्तु सम्बन्ध कारक मे अन्य परसर्गों के जुडने पर, ये दीर्घ स्वरान्त सज्ञाएँ, दीर्घ ही रह जाती हैं। यथा—घोड़ा के, घोडा केर आदि।

४. लकारान्त क्रियार्थक संज्ञा का विकारी रूप लाकारान्त होता है। यथा —क्रिया० सज्ञा—देखल्, विका०—देखला। ई देखला पर केकरा गोस्सा न होतइ। अन्य क्रियार्थक सज्ञा के रूप उपर्युक्त व्यजनान्त सज्ञापदो के साधारण नियमों का ही अनुसरण करते हैं। यथा—देखे के, देखे से, देखे ला आदि।

अन्य सज्ञाओ के साधारण रूप निम्नाकित हैं :—

(इ) पुलिंग तद्भव आकारान्त शब्द—

राजा

ह्र०—राजा, दी०—रजवा, रजन्वा, अति०—रजौवा—रजववा।
सम्बन्ध कारक—राजक, राजा के। कर्त्ता ब० व०—राजन आदि।

(ई) ईकारान्त पुलिंग सज्ञा—

माली

ह्र०—माली, दी०—मलिया, अति०—मलियवा।
ए० व०, सम्बन्ध कारक—मालिक, माली के।
कर्त्ता, ब० व०—मलियन[२]

(उ) ऊकारान्त पुलिंग सज्ञा—

---

१ यथा—
कर्म —किताब को ही हाथ में रखिए न।
करण —मै बलपूर्वक ले जाऊँगा।
सम्प्र०—तुम्हें बैठने के लिए कह रहे हैं।
सम्ब०—ए मलाहे! सोने की नाव है और रूपे का डाँड़।
अधि०—घर में ही है।

२ नियम के अनुसार 'माली' का बहुवचन 'मालिन' होना चाहिये था। पर यह इसके स्त्रीलिंग रूप में रूढ हो गया है। अत 'माली' का बहुवचन रूप 'मलियन' ही व्यवहृत होता है।

नाऊ

ह —नाऊ, बी —नउवा या नौवा, (नौवा) अति —नउअवा
ए व सम्बन्ध कारक—नाउक, नाऊ के,
कर्ता ब व —नाउन, नउअन [१]
(ऊ) ईकारान्त—स्त्रीलिंग संज्ञा

पोथी

ह—पोथी बी —पोथिया अति —पो थियवा।
ए व सम्ब कार —पोथिक, पोथी क आदि।
कर्ता बहु —पोथिन आदि।
(ए) व्यंजनान्त—स्त्रीलिंग संज्ञा—

बात

ह —बात दीर्घ—बतिया, अति —बतियवा।
कर्म ए व —बात के।
ए व सम्ब कार —बातक या बात के,
कर्ता बहुवचन—बातन आदि।

सम्बन्धवाची प्रत्यय

निम्नांकित उदाहरणों में सम्बन्धवाची प्रत्ययों का व्यवहार दिखाया गया है। पटना और गया जिले में इनके प्रयोग के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिये दोनों स्थानों के अलग अलग नमूने दिये गये हैं, जिनके संकेत क्रमशः अ (पटना) और आ' (गया) हैं —

१ (अ) ई राम कर घर हइ।
(आ) ई राम के घर हइ।
२ (अ) हम राजा के नौ करी[२] ही।
(आ) हम रजवा के नौ करी हियइ।
३ (अ) मलियन क मुँह रह गेलइ।
(आ) मलिदयन के मो कवा रह गेल।
४ (अ) पापी के मार के कुच्छो दोस नऽ हइ।
या पापी के मार क कुच्छो दोस नइ।
(आ) कपटो के मारे के कुछु दोस न हे।
५ (अ) ऊ गाँव करी सभी मच कुँदते चल गेलथीन।
(आ) ऊ गाँव के महटरअन कुँदते चल गेलथीन।

---

१ 'नाउन' नाऊ' का स्त्रीलिंग रूप है। इस तरह बहुवचन में 'नउअन' का व्यवहार होता है।
२ टी।

६. (अ) देस देस के राजा सब अऍलथिन।
(आ) मुलुक मुलुक के राजा ऐलन।
७. (अ) हम राजा के गाँव में अइलूँ।
(आ) हम राजा के गाँव मे ऐली।
८. (अ) पंडित के घर में बड़ी पोथी रहऽ हइ।
(आ) पंडित के घर में ढेर पोथी रहऽ हइन।

सर्वनाम[1] (Pronouns)

सर्वनाम के रूप, सज्ञा-रूपो से कतिपय बातो मे भिन्न होते हैं। परसर्ग लगने के पूर्व, सज्ञा अविकारी रहती है, लेकिन सर्वनाम, कुछ अपवादो को छोडकर (परसर्ग लगने के पूर्व भी) विकारी होता है। यथा—

सज्ञा—कर्त्ता—घोड़ा, कर्म—घोडा के, करण—घोडा से आदि।

सर्वनाम—उ (वह), कर्त्ता—ऊ, कर्म—उन्हका के; करण—उन्हका से आदि।

सर्वनाम के, एकवचन कर्मकारक के रूप मे, एकवचन कर्त्ताकारक (सर्वनाम) के रूप से भिन्नता रहती है। उदाहरणार्थ 'कौन' शब्द के रूप को लें—

ए० व०, कर्त्ताकारक—के,

ए० व०, कर्मकारक—केकरा के।

स्पष्टत कर्त्ता और कर्म के रूपो मे अन्तर है। लेकिन इसके एक या दो अपवाद भी हैं। यथा—'कुछु' शब्द देखें—

ए० व०, कर्त्ता—'कुच्छो'।

ए० व०, कर्म—कुच्छो के आदि।

जिस सर्वनाम के सम्बन्धकारक का अन्त 'र' से होता है, उसमे 'रा' का प्रयोग पुलिंग के लिए और 'री' का स्त्रीलिंग के लिए होता है। लोकगीतो मे इनका व्यवहार अधिक होता है। यथा—मोरा, मोरी, केरा, केरी—

(क) सभवा चमकइ मोरा सामी के पगड़िया।
(ख) आज मोरी बेटिया ससुर घर जैहें।
(ग) सोने केरा नैया रे मलहा, रूपे करुवार।
(घ) फुलवा लोढ़न गेल मालिन केरी बेटिया।

सर्वनाम के रूपो मे लिंग भेद के कारण रूपातर नही होता। यथा—हम्मर बेटा, हम्मर बेटी।

मध्यम पुरुष के सर्वनाम को छोडकर, शेष सर्वनामो मे सम्बोधन कारक नही होता। यथा—म० पु०—हे तूँ! अहो! सुनऽ नऽ।

---

१ "सर्वनाम उस विकारी शब्द को कहते हैं, जो संज्ञा के बदले उपयोग में आता है।"
"कुल सर्वनाम प्रयोग की सुविधा के लिये ६ भागों में विभक्त कर दिये गये हैं —(१) पुरुषवाचक (२) निजवाचक, (३) निश्चयवाचक, (४) संबंधवाचक, (५) प्रश्नवाचक और (६) अनिश्चयवाचक।
व्या० मर्या०—सु० वि०

मध्यम पुरुष—अनादर वाचक

मगही—तूँ या तोँ†, हि०—तू, तुम

	ए० व०		ब० व०	
	ह्र०	दी०	ह्र०	दी०
कर्त्ता	—तूँ, तोँ	तूँ, तोँ[1]	तोहनी[1]	तोहरनी[2]
कर्म	—तोरा[2], तोरा के	तोहरा, तोहरा के	तोहनी, तोहनी के	तोहरनी, „ के
करण	— „ से	„ से	„ से	„ से
सम्प्र०	— „ ला	„ ला	„ ला	„ ला
आपा०	— „ से	„ से	„ से	„ से
सम्ब०	—तोर, तोरा, तोरी	तोहर, तोहार, तोहरे[3], तोहरा, तोहरी	„ के, केर, केरा, केरी	„ के, केर, केरा, केरी
अधि०	—तोरा में	तोहरा में	„ में	„ में
सम्बो०	—हे तोँ, हे तूँ	हे तोँ, हे तूँ	हे तूँ सब,—लोग	हे तूँ सब,—लोग

१ कर्त्ता कारक के 'तूँ' के एकवचन में, ह्रस्व एवं दीर्घ दोनों रूप समान ही होते हैं। २. तोरा और तोहरा पर जोर डालने के लिए क्रमशः तोरो और तोहरो का व्यवहार होता है। यथा—तोरो या तोहरो देखऽ ही (तुमको भी देखता हूँ)। ३. पटना तथा उसके पड़ोसी क्षेत्रों में 'तोहरे' का व्यवहार मिलता है, जो हिन्दी 'तुम्हारे' से प्रभावित है। यथा—तोहरे बेटा से कहऽ्ही (तुम्हारे ही बेटा से कहता हूँ)।

१. अथवा तोहनिन, तोहननी, तोहनिन्ह, तोँहनियोँ (दी० रूप), या तूँ सब,—लोग। सभी रूप इसी प्रकार चलेंगे। २ अथवा तोहरन्ही, तोहरन्हु, तोहरन या तोहरा सब, तोहरा लोग। आगे भी ऐसा ही चलेगा।

† तूँ या तोँ का प्रयोग आदरार्थ भी होता है। आदर की व्यंजना तूँ या तोँ से सम्बन्धित क्रिया से होती है। मगही की यह अपनी मौलिक विशेषता है, जो आदर के साथ-साथ प्रीति के आधिक्य, कोमलत्व और आग्रह को भी ध्वनित कर देती है। यथा—(१) तूँ (या तोँ) कहाँ जैवऽ? हिन्दी में शब्दार्थ—आप कहाँ जायेंगे? हिन्दी में ध्वनित अर्थ—प्रियवर, कृपा कर अवश्य कहिये, आप कहाँ जायेंगे?

(२) तोहरा खाय पड़तवऽ। हिन्दी में शब्दार्थ—आपको खाना पड़ेगा। हिन्दी में ध्वनित अर्थ—खैर आप जो कहते हैं, हम मानते हैं, पर आपको खाना ही होगा। बिना खाये हम न जाने देंगे। वस्तुतः तूँ या तोँ का आदरार्थ प्रयोग तथाकथित निम्न श्रेणी के लोगों में अधिक होता है। अन्य वर्गों के लोग आदरार्थ 'अपने' शब्द का अधिकाधिक व्यवहार करते हैं। यथा—अपने कहाँ जा हथिन? (आप कहाँ जा रहे हैं)। अपने का बोललथिन? (आप क्या बोले?)।

दूरवर्त्ती

मगही—ऊ , हि०—वह

ई और ऊ की रूपावली मे बहुत सादृश्य है।

	ए० व०		ब० व० †	
	ह्र०	दी०	ह्र०	दी
कर्त्ता —	ऊ	ऊ	ऊ[1]	उन्हकन्नी[2], उनकनी, ओकनी
कर्म —	ओह, ओह के	ओँकरा ओँकरा के	उन्ह, उन्ह के	उन्हकरा[3] (के)
करण —	,, से	ओँकरा से	उन्हका से	,, से
सम्प्र० —	,, ला	,, ला	,, ला	,, ला
आपा० —	,, से	,, से	,, से	,, से
सम्ब० —	ओह के, केर आदि	ओकर ओँकरा, री	उन्ह के, केर आदि	उन्हकर, उन्हकरा,—री
अधि० —	ओह मे	ओँकरा मे	उन्हका में	उन्हकरा में

† बहुवचन के रूप आदरवाचक भी हैं।

१. ऊ (सब) उन्ह (सब), उन्हन (सब) उन्हनी (सब) का भी व्यवहार होता है। इनमें से 'सब' शब्द को विकल्प से हटाया जा सकता है।

ऊ या उन्ह के स्थान पर उखनिन या ओँखनी का व्यवहार समस्त बहुवचन में हो सकता है।

२ अथवा उन्हकन्हीं भी शेष कारक-चिह्नों के साथ चल सकता है।

३ अन्य विकारी रूप हैं—उनकरा, उन्हका उनका, उनखा।

उनकरा का व्यवहार अन्त्य दीर्घस्वर को ह्रस्व करके, सबधकारक में होगा।

टिप्पणी—उपर्युक्त दोनों निश्चयवाचक सर्वनामों (ई, ऊ) में सिर्फ ई, ऊ, एह, ओह आदि ह्रस्व रूपों का विशेषण या विशेष्य के रूप में प्रयोग होता है। एकरा, ओकरा, इन्हकनी, उन्हकनी आदि दीर्घ रूपों का केवल विशेष्य के रूप में व्यवहार होता है।

(उ) प्रश्नवाचक

मगही—के, हिन्दी—कौन

	ए० व०		व० व०	
	ह्र०	दी०	ह्र०	दी०
कर्त्ता	—कउन, कौन, के	के, को	के[1]	किन्हकनी[2] किनकनी
सवध	—कें ह् कें आदि	केकर,-रा,-री	किन्ह् के आदि	किन्हकर[3],-रा-री फिनकर
विकारी	—कें ह्	कें करा	किन्ह्	किन्ह्का

प्रश्नवाचक सर्वनाम

विशेष्य सूचक

मगही—का अथवा की; हिन्दी—क्या ?

का और की सर्वनामो का व्यवहार, निर्जीव पदार्थों के लिये होता है। पटना के दक्षिणपूर्व भाग मे 'की' का व्यवहार होता है। 'का' केवल विशेष्य के रूप मे प्रयुक्त होता है। इसके वहुवचत का रूप 'के' (कौन) के रूप के समान है।

ए० व०

	प्रथम रूप	द्वितीय रूप
कर्त्ता	—का, की	कौंची, कउची
कर्म	—काहे के	,, के, ,, के
करण	—,, से	,, से, ,, से
सम्प्र०	—,, ला	,, ला, ,, ला
आपा०	—,, से	,, से, ,, से
सवध०	—,,के, केर	,, के, ,, के
अधि०	—काहे में	,, में, ,, में

१ अन्य रूप 'जे' के समान है। सर्वत्र 'ज' के स्थान पर, 'क' लगाना चाहिये। २. अथवा किन्हकन्ही। ३ अन्यरूप 'जे' के समान है। सर्वत्र 'ज' के स्थान पर 'क' लगाना चाहिये। ४. द्वितीय रूप, वैकल्पिक रूप से गया में प्रयुक्त होते हैं।

(ऊ) अनिश्चयवाचक सर्वनाम

मगही—केॅऊ[1] कोई हिन्दी—कोई

एक

कर्ता—केऊ कोई	या	केहू	
कर्म—केॅकरोॅ (के)	या	कौनोॅ[2] (के)	
करण—केॅकरोॅ से	या	कौनोॅ से	
सम्प्र०—	का	या	का
अपा०— ,, से	या	,,	से
सम्ब०—केॅकरोॅ	या	,,	के
अधि०— ,, में	या	,,	में

टिप्पणी—अनिश्चयवाचक सर्वनाम का बहुवचन-रूप नहीं होता। अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'कुछु' 'कुच्छो' या 'कुच्छुओ' (कुछ कुछ भी) का रूप विशेष्य की तरह नियमित रूप से चलता है। यथा—कुच्छो के, कुच्छो से आदि।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'सब' का रूप भी विशेष्य की तरह चलता है। इसे प्रायः 'सभ' लिखा जाता है। बहुवचन के रूप पर जोर डालने के लिए 'सभन' या 'सबन' का व्यवहार होता है। यथा—सभ के (सब का) सभन के। सभन केॅ कहने से कथन पर जोर पड़ जाता है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'जेकेॅऊ' तथा 'जेकुच्छो' यौगिक शब्द हैं। इनका रूप अपने अंगमात्र (component parts) की तरह नियमित रूप से चलता है। यथा—

कर्मकारक एकवचन—जे इ केॅकरो जे इ कुच्छो;

करणकारक ,, —जेॅ इ केकरो से आदि

अनिश्चयवाचक सर्वनामसूचक विशेषण 'कोई' का अर्थ कई है।

---

१. जब यह सर्वनाम विशेषण के रूप में व्यवहृत होता है तब "कौनो" या "कवनो" का रूप भी धारण कर लेता है। २. कौनें या कोई या केहू के रूप भी सभी कारकों में एक जैसे हैं।

सर्वनाममूलक विशेषण-रूप

निम्नलिखित तालिका मे प्राय. प्रयुक्त होने वाले सर्वनाममूलक विशेषण और क्रिया विशेषण के रूप सक्षेप मे दिये जाते हैं —

		सर्वनाम	गुणवाचक	परिमाणवाचक	कालवाचक	स्थानवाचक	दिशावाचक
निश्चयवाचक	निकटवर्ती	ई	अइसन	ऍत्तेॅक, ऍतना	अखनी	हिँयाँ, ईठमाँ, इठवाँ	ऍन्ने, ऍहर, ऍन्दे
	दूरवर्ती	ऊ	ओॅइसन	ओॅत्तेॅक, ओॅतना	ओॅखनी	हुँआँ, ऊठमाॅ, उठवाॅ, ओॅतह	उन्ने, उहर, ओन्ने, ओन्दे
सवधवाचक		जे	जइसन	जेॅत्तेॅक, जेॅतना	जखनी, जहिया	जेठमाॅ, जेँठवाॅ	जेॅन्ने, जेॅहर, जेॅन्दे
नित्य सवधी		से	तइसन	तेॅत्तेॅक, तेॅतना	तखनी, तहिआ	तेॅठमाॅ, तेॅठवाॅ	तेॅन्ने, तेहर, तेन्दे
प्रश्नवाचक		के	कइसन	केॅत्तेॅक केॅतना	कखनी, कहिआ	केठमाॅ, केॅठवाँ, कहवाॅ	केॅन्ने, केॅहर, केॅन्दे

सर्वनाममूलक विकारी संबंधकारक

८ तथा 'न' से अन्त होने वाले सर्वनाममूलक संबंधकारक के निम्नांकित उदाहरण हैं। इनका विकारी रूप 'रा' तथा 'ना' है। 'र' से अन्त होने वाले सभी सार्वनामिक शब्दों के विकारी रूपों का प्रयोग कर्ताकारक को छोड़ शेष सभी कारकों में होता है।

सम्बन्ध कारक के साधारण रूप	विकारी रूप
मोर	मोरा
हम्मर	हमरा
तोर	तोरा
तोहर	तोहरा
अप्पन	अपना
एकर	एकरा
ओकर	ओकरा
जेकर	जेकरा
तेकर	तेकरा
केकर	केकरा

सम्बन्ध कारक के साधारण और विकारी रूपों के निम्नांकित उदाहरण हैं—

(अ) साधारण रूप

१ ओकर लड़का कइसन बेस हइ।

२. केकर बेटा हइ।

३ हम्मर घथा बिगड़ल।

४ अप्पन धनमाँ लुटा के गरीब हो गेलइ।

५ तोर घर बेस हवऽ।

६ एकर बेटी गोर हइ।

(आ) विकारी रूप

१ ओ॑करा घड़े के घोड़ा हइ।

२. ऊ हमरा फुलवारी में आवल।

३ तोहरा सरकी[1] में धान हइ।

४ तोरा हमरा स हम आपका केम।

५ *अपना जिम्मा में किसुनमा खोजबकइ।*

६ जे॑करा देखऽ हइ ओ॑करा से माँगऽ।

पूर्व-उल्लिखित 'रा' 'ना' से अन्त होने वाले पटना में प्रचलित संबंधकारक को, रूप मूलक विकारी संबंधकारक से भिन्न मानना चाहिये।

---

१ मैली थोरी।

ग्रामीण लोग कभी-कभी विकारी के स्थान पर साधारण रूप का व्यवहार करते हैं। लेकिन साधारण रूप के स्थान पर विकारी रूप कभी व्यवहृत नहीं होता। यथा—

विकारी—'ओकर' बड़ के घोड़ा हइ।

यहाँ विकारी 'ओंकरा' का साधारण रूप 'ओकर' व्यवहृत हुआ है। लेकिन—'ओंकरा' लड़का फेकन देख हइ, नहीं हो सकता, क्योंकि साधारण रूप (ओकर) के स्थान पर विकारी रूप का व्यवहार नहीं होता।

विशेषणवाचक सर्वनाम

नीचे विशेषण और विशेष्य रूप में व्यवहृत सर्वनाम के रूप दिये जाते हैं। उल्लेखनीय है कि मगही में प्राय: विकारी रूप एँह, ओंह, जेंह, तेंह और केंह के स्थान पर क्रमश: ए, ओ, जे, ते और के लिखे और उच्चरित किये जाते हैं।—

१ जे आयल हल, से गेल।
२ जे जन आयल हल, से गेल।
३. जेकर खेत, तेकर धान।
४. जेंह (या जे) जन के खेत, तेंह जन के धान।
५. के हल?
६. ऊ कवन लोक[1] हइ।
७ केकर घोड़ा हइ।
८ की हइ या की हकइ या का हइ?
९ कवन पेड़ हइ।
१०. काहें में पानी लगलहु हे?
११ कवन लोटा में पानी लगलहु हे।
१२ केऊ नऽ अयलइ।
१३ केऊ (या कौनो) लड़िका नऽ अयलइ।
१४. ऊ गाँव में केंकरो कुछ नऽ हइ।
१५ उ गाँव के कउनों धनिया से कुछु नऽ मिली।
१६ ऊ दवाइ के कुच्छो[2] में धरे के होइ।
१७. कएगो मरदाना अइलथिन।

---

१. आदमी। २. किसी पात्र में।

विशेषण[1] (Adjectives)

विशेषण के मुख्यतः तीन भेद किये जाते हैं—(१) सार्वनामिक विशेषण (२) गुणवाचक विशेषण और (३) संख्यावाचक विशेषण।

(१) सार्वनामिक विशेषण

पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़कर, शेष सर्वनामों का व्यवहार विशेषण-रूप में होता है। इसीसे ये सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। यथा—

निश्चयवाचक —इ पोथी ऊ घर।

अनिश्चयवाचक—कोइ आदमी केउ लड़का कुच्छो काम कुच्छो बात।

प्रश्नवाचक —कवन पेड़ कवन पोथी ? का काम की बात ?

सम्बन्धवाचक —से लड़का/जे घर, से काम।

'अप्पन और 'अनकर'[2] भी सार्वनामिक विशेषण हैं क्योंकि इनका भी व्यवहार प्रायः विशेषणवत् होता है। यथा—अप्पन घर अप्पन बोली अनकर धन, अनकर बोली।

व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण के दो भेद होते हैं—(१) मूल और (२) यौगिक।

(१) मूल सार्वनामिक विशेषण वे हैं, जो बिना किसी रूपान्तर के संज्ञा के साथ आते हैं। यथा—इ नौकर ऊ गाय केउ आदमी, कुच्छो बात आदि।

(२) यौगिक सार्वनामिक विशेषण वे हैं, जो मूल सार्वनामिक विशेषणों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं और संज्ञा के साथ आते हैं। यथा—ऐसन लड़का, जैसन करनी तैसन भरनी, वैसन घर ओयसन बात।

यौगिक सार्वनामिक विशेष्यों के साथ जब विशेष्य नहीं रहता तब उनका व्यवहार विशेष्यवत् होता है। यथा—एतने में ऐसन मेलइ जैसन बोवऽ तैसन काटयऽ।

तथा पर जोर डालने के लिए, मगही के सार्वनामिक विशेषण में हि, हु, प्रयुक्त कर दिये जाते हैं—एहि आदमी, एहु चीज, ओहि ओहु केहि जेहु तेहि, तेहु, केहि, केहु।

कई सार्वनामिक विशेषण परिमाण समूह आकृति आदि का बोध कराते हैं। इन्हें परिमाणवाचक सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है। यथा—

समूहबोधक—एतना आदमी, ओतना, जेतना तेतना केतना।

परिमाणबोधक—एत्ता भात ओत्ता जेत्ता तेत्ता केत्ता।

आकृतिबोधक—एतवड़ हाँड़ी ओतवड़ जेतवड़, तेतवड़ केतवड़।

कुछ सर्वनाम गुण अवस्था आदि का बोध कराते हैं। इन्हें गुणवाचक सार्वनामिक विशेषण कहा जाता है। यथा—

ऐसन घर, ओयसन बात, जैसन बाछा तैसनका कैसन मिठाई।

---

१ "संज्ञा के गुण या किसी प्रकार की विशेषता प्रकट करने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।" —हि व्या०—गु० मि।

२. परक।

(२) गुणवाचक विशेषण[1]

मगही मे गुणवाचक विशेषण के संज्ञावत् तीन रूप होते हैं—ह्रस्व, दीर्घ और अतिरिक्त। यथा—

ह्रस्व	दीर्घ	अतिरिक्त
नया	नयका	नयकवा
लाल	ललका	ललकवा
पुराना	पुरनका	पुरनकवा
पीयर	पिअरका	पियरकवा
लम्मा	लमका	लमकवा

ये विशेषण, जब ह्रस्व रूप मे रहते हैं, तब सामान्य संज्ञा की विशेषता बताते हैं। यथा—नैया साड़ी लेहऽ। लाल गाय के दूध दुहऽ। यहाँ नया और लाल विशेषण क्रमश सामान्य संज्ञा साडी और गाय की विशेषता प्रकट करते हैं। किन्तु जब विशेषण दीर्घ और अतिरिक्त रूप मे रहते हैं, तब संज्ञा विशेष की विशेषता बताते हैं। यथा—

नयका साडी लैहऽ; नयकवा साड़ी लैहऽ।

यहाँ नयका और नयकवा से साडी विशेष की विशेषता प्रकट होती है।

मगही के गुणवाचक विशेषणो मे, हीनता का अर्थ प्रकट करने के लिए सा, भर, सन या सुन प्रत्यय जोडे जाते हैं। यथा—

तनी सा भात दे।
तनी सन अचार दे।
तनके सुन तो खेली है।
ठोप भर दाल दे।
घुन्नी[2] भर तरकारी दे।

जब गुणवाचक विशेषण का विशेष्य लुप्त रहता है, तब उसका प्रयोग संज्ञा के समान होता है। यथा—

गरीबोआ गुने[3] ने, न तो काहे ला दुखड़ा करती हल। अहे नयको। तनी एन्ने ऐहऽ।

विशेषण में लिंग के कारण रूपांतर

मगही के विशेषणो मे लिंग के कारण रूपान्तर सामान्यत नही होता। यथा—

गोर मेहरारू, गोर मरद, करिया बिलाइ, करिआ बिलाइ आदि।

जहाँ विशेषण से सामान्य संज्ञा की विशेषता प्रकट होती है, वहाँ उसमे लिंग के कारण रूपातर नही होता, किन्तु जहाँ वह संज्ञा विशेष की विशेषता बताता है, वहाँ उसमे प्राय

---

१ "गुणवाचक से गुण, अवस्था, रंग, आकार, दशा आदि का बोध होता है। जैसे—नया, पुराना, काला, लाल, लम्बा, चौड़ा, दुबला, पतला, भला, बुरा, अच्छा इत्यादि।" व्या० मग—सु० वि०।
२ थोड़ा सा। ३ गरीब होने के कारण।

रूपान्तर हो जाता है। रूपान्तर की स्थिति में विशेषण विशेष्य के अनुकूल लिंग कारक और वचन ग्रहण करता है। प्राय: पुंलिंग विशेषण में 'ई' प्रत्यय जोड़कर, स्त्रीलिंग विशेषण के रूप बनाये जाते हैं। यथा—

पुं	स्त्री
ललका (बैलवा)	ललकी (गइया)
समका	समकी
नयका	नयकी
छोटका	छोटकी
नमहका	नमहकी
करिकका	करिककी
पीयरा	पीयरी
मुतहा	मुतही
कमाहा[1]	कमाही
पितियाहा[2]	पितियाही
मथुरावला	मथुरावली
कासीओला	कासीओली

विशेषण में वचन के कारण रूपान्तर

एकवचन से बहुवचन के रूप बनाने के लिए, विशेषण के एकवचन के अन्त्य दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके 'न' जोड़ दिया जाता है। यथा—

ए० व०	ब० व०
ललका	ललकन
पियरका	पियरकन
पुरनका	पुरनकन
गयावला	गयावलन

पुंलिंग विशेषण के एकवचन दीर्घ रूप के अन्त्य दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके 'इन' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बहुवचन विशेषण के रूप बनते हैं। यथा—

पुंलिंग ए० व०	स्त्री० ब० व०
ललका	ललकिन
पियरका	पियरकिन

तुलनात्मक विशेषण

मगही में संस्कृत-पद्धति से 'तर' और 'तम' प्रत्यय लगा कर, तुलनात्मक विशेषण नहीं बनाये जाते। 'बिहारी' वर्ग की अन्य बोलियों की पद्धति पर ही इसमें तुलनात्मक भाव

---

१. कमाने वाला। २. ओघी।

की अभिव्यक्ति होती है। तुलनात्मक विशेषण में प्रायः निम्नांकित शब्दों का प्रयोग होता है—

जादा, कम और बेसी। यथा—

ऊ घर से ई घर जादे बड़ा हुइ।

उनका से का तूँ कम सुन्दर हुऽ?

हमरा से तोरा बेसी लूर[1] हवऽ।

उत्तमावस्था सूचित करने के लिए 'सभ' या 'सभन' का व्यवहार होता है। यथा—

ऊ सभे से आला हउवुन।

हमनी सभन से उनकर घर बेस हइन।

समता का भाव प्रदर्शित करने के लिए, निम्नांकित शब्दों का व्यवहार होता है—

ऐसन, नियर और नियन। यथा—

हमरा ऐसन सभागा सब कोई होय।

तोरा नियर धर्मी मिलना कठिन है।

ओंकरा नियन खोट दिल न करऽ।

संख्यावाचक विशेषण[2] (Numeral adjectives)

संख्यावाचक विशेषण के मुख्य तीन भेद होते हैं—

(१) निश्चित संख्यावाचक[3] (२) अनिश्चित संख्यावाचक[4] और (३) परिमाणवाचक[5]।

१ निश्चित संख्यावाचक विशेषण

इसके पाँच भेद हैं—गणनावाचक, क्रमवाचक, आवृत्तिवाचक, समुदायवाचक और प्रत्येकबोधक।

---

१. क्रम।

२. "संख्यावाचक से संख्या, परिमाण आदि का बोध होता है। जैसे—एक, दो, थोड़ा, पहला आदि।" व्या० मर्य०—सु० त्रि०

३. "निश्चित संख्यावाचक से वस्तुओं की निश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे—'एक' लड़का। 'दस' मनुष्य, 'पाव भर' आटा। पाँचो अंगुलियाँ इत्यादि।" व्या० मर्य०—सु० वि०

४ "जिस संख्यावाचक विशेषण से किसी निश्चित संख्या का बोध नहीं होता, उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं, जैसे दूसरा, सब, बहुत आदि।" सं० हि० व्या०—का० गु०

५ "परिमाणबोधक विशेषणों से किसी वस्तु की नाप या तौल का बोध होता है; जैसे—और, सब, सारा, अधिक आदि।" सं० हि० व्या०—का० गु०

। गणनावाचक विशेषणों के दो भेद हैं—(अ) पूर्णांकबोधक और (आ) अपूर्णांकबोधक।

(अ) पूर्णांकबोधक (cardinal)

मगही में पूर्णांकबोधक शब्द हिन्दी के ही समान हैं। केवल निम्नांकित विशेषणों में हिन्दी से भिन्नताएँ लक्षित होती हैं—

१—ऐक या एगो[1]
२—दो या दू
५—पान
६—छो
९—नो
११—इगारह
१४—चउदह
१५—पनरह
१६—सोरह
१७—सतरह
१९—उनइस
२१—एकइस
२७—सैताइस
७१—ऐकहत्तर
७२—बहत्तर
७३—तिहत्तर
७४—चौहत्तर
७५—पचहत्तर
७६—छिहत्तर
७७—सतत्तर
७८—अठहत्तर
८९—नोआसी
१०,०० ,०० कड़ोर या करोड़

(आ) अपूर्णांक बोधक (Fractional Numbers)

अपूर्णांक बोधक विशेषण निम्नांकित हैं —

पाव पौआ (= ¼) तेहाई (= ⅓), अधिया (= ½),
पौने या गौंठ (= ¾ या — ¼)
सवाँ सवाई (= १¼, या +¼) डेढ़ (= १½)
अढ़ाइ, अढ़ैया (= २½) साढ़े (= +½)

क्रमवाचक (Ordinal)

इसमें सामान्य ह्रस्व दीर्घ और अतिरिक्त तीन रूप मिलते हैं। प्र. तक क्रमवाचक विशेषण निम्नांकित हैं —

साधारणरूप	विकारीरूप
पहिल	पहिला
दोसर	दोसरा
तेसर	तेसरा
चौठ	चौठा
पाँचो	पँचवाँ
छठो	छठवाँ

१ निश्चित संख्या पर और डालने के लिए, इसके साथ 'गोटा' शब्द का व्यवहार होता है। यथा— चारे गोटा ल्योता में ऐलथ।

छः के बाद के क्रमवाचक विशेषण के विकारी रूप, पूर्णांक बोधक संख्या में वाँ, वीं तथा ओं जोड़कर बनाये जाते हैं। यथा—

दसवाँ, दसवीं, दसों; पचासवाँ, पचासवीं, पचासों।

आवृत्तिवाचक

(क) पूर्णांकबोधक विशेषण के आगे 'गुना' शब्द लगाने से आवृत्तिवाचक विशेषण बनते हैं। यथा—

दू + गुना = दुगुना, छो—छगुना, नो या नौ—नोगुना या नौगुना।

(ख) मगही में 'परत' के अर्थ में हर, हरा, हारा, जोड़ा जाता है। यथा—

ऍकहर, ऍकहरा, ऍकाहारा, दोहर, दोहरा, दोहारा।

(ग) बार, बेर या बेरी जोड़ कर भी आवृत्तिबोधक विशेषण बनाये जाते हैं। यथा—एक बार, सात बेर, नौ बेरी।

समुदायवाचक

पूर्णाङ्कबोधक विशेषणों के आगे 'ओं' जोड़ कर समुदायवाचक विशेषण बनाये जाते हैं। यथा—दस—दसों, बीस—बीसों, दू—दुन्नों, दु—दुओ, तीन—तीनों, चार—चारों। इसी प्रकार आगे की संख्याएँ बनेंगी।

समुदाय के अर्थ में कुछ संज्ञाएँ भी व्यवहृत होती हैं। यथा—जोड़ा (दो), गंडा (चार), कोड़ी (बीस), बीसा, बीसी, गाही[1] (पाँच), पन[2]।

प्रत्येकबोधक

(अ) प्रत्येकबोधक विशेषण से कई वस्तुओं में से प्रत्येक का बोध होता है। यथा—हर[3] आदमी के अपन घर, ले जाना भत्त नऽहे।

(ख) गणनावाचक विशेषणों की द्विरुक्ति से भी इसी अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। यथा—दू दू आदमी के भेजवऽ ? एक-एक, दस-दस आदि।

(ग) अपूर्णाङ्क विशेषणों में मुख्य शब्द की द्विरुक्ति होती है। यथा—आध-आध सेर दूध, डेढ़-डेढ़ सौ रुपिया आदि।

२. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण (Indefinite Cardinals)

संख्यावाचक विशेषणों में 'ओ' या 'ओं' प्रत्यय जोड़ कर अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण बनाये जाते हैं। यथा—

बीस—बीसों, लाख—लाखो, हजार—हजारों।

हजारों आदमी मरलन।

---

१ आम, लीची और कागजी नींबू बेचने में 'गाही' का व्यवहार होता है।

२. 'पन' का व्यवहार प्रायः गोयठे की गिनती में होता है। स्थान-विशेष के अनुसार २२ या २३ गयठे की गिनती के बाद, एक गोयठा अलग रख दिया जाता है, जो उतने की सूचना देता है। यही 'पन' कहलाता है।

३ प्रत्येक।

। एकतावाचक विशेषणों के दो भेद हैं—(अ) पूर्णांकबोधक और (आ) अपूर्णांकबोधक।

(अ) पूर्णांक बोधक (cardinal)

मगही में पूर्णांकबोधक शब्द हिन्दी के ही समान हैं। केवल निम्नांकित विशेषणों में हिन्दी से भिन्नताएँ लक्षित होती हैं—

१—एँक या एगो[1]	७१—एँकत्तर
२—दो या दू	७२—बहत्तर
५—पान	७३—तिहत्तर
६—छो	७४—चौहत्तर
९—नो	७५—पचत्तर
११—इगारह	७६—छिहत्तर
१४—चव्वह	७७—सतत्तर
१५—पनरह	७८—अठत्तर
१६—सोरह	८९—नोआसी
१७—सतरह	१०,० ,०० करोर या करोड़
१९—उनइस	
२१—एकइस	
२७—सेताइस	

(आ) अपूर्णांक बोधक (Fractional Numbers)

अपूर्णांक बोधक विशेषण निम्नांकित हैं —

पाव पौआ (= $\frac{1}{4}$) तेहाई (= $\frac{1}{3}$), अधिया (= $\frac{1}{2}$)

पौने या गँऊँठ (= $\frac{3}{4}$ या $-\frac{1}{4}$)

सवाँ सवाई (= $1\frac{1}{4}$ या $+\frac{1}{4}$) डेढ़ (= $1\frac{1}{2}$)

अढ़ाइ, अढ़ैया (= $2\frac{1}{2}$) साढे (= $+\frac{1}{2}$)

क्रमवाचक (Ordinal)

इसमें संज्ञावत् ह्रस्व दीर्घ और अतिरिक्त तीन रूप मिलते हैं। स. तक क्रमवाचक विशेषण निम्नलिखित हैं —

साधारणरूप	विकारीरूप
पहिल	पहिला
दोसर	दोसरा
तेसर	तेसरा
चौठ	चौठा
पाँचो	पँचवाँ
छठो	छठवाँ

१ निश्चित संख्या पर जोर डालने के लिए, उसके साथ 'गोटा' शब्द का व्यवहार होता है। जैसे— चार गोटा ग्वाला में देखल।

छः के वाद के क्रमवाचक विशेषण के विकारी रूप, पूर्णांक बोधक सख्या मे वाँ, वीं तथा ओं जोड़कर बनाये जाते हैं। यथा—

दसवाँ, दसवीं, दसों, पचासवाँ, पचासवीं, पचासों।

आवृत्तिवाचक

(क) पूर्णांकबोधक विशेषण के आगे 'गुना' शब्द लगाने से आवृत्तिवाचक विशेषण बनते हैं। यथा—

दू + गुना = दुगुना, छो—छगुना, नो या नौ—नोगुना या नौगुना।

(ख) मगही मे 'परत' के अर्थ मे हर, हरा, हारा, जोड़ा जाता है। यथा—

ऍकहर, ऍकहरा, ऍकाहारा, दोहर, दोहरा, दोहारा।

(ग) वार, बेर या बेरी जोड़ कर भी आवृत्तिबोधक विशेषण बनाये जाते हैं। यथा—एक बार, सात बेर, नौ बेरी।

समुदायवाचक

पूर्णाङ्कबोधक विशेषणो के आगे 'ओं' जोड़ कर समुदायवाचक विशेषण बनाये जाते हैं। यथा—दस—दसों, वीस—वीसों, दू—दुन्नों, दु—दुओ, तीन—तीनों, चार—चारों। इसी प्रकार आगे की सख्याएँ बनेंगी।

समुदाय के अर्थ मे कुछ सज्ञाएँ भी व्यवहृत होती हैं। यथा—जोड़ा (दो), गंडा (चार), कोड़ी (बीस), बीसा, बीसी, गाही[1] (पाँच), पन[2]।

प्रत्येकबोधक

(अ) प्रत्येकबोधक विशेषण से कई वस्तुओ मे से प्रत्येक का बोध होता है। यथा—हर[3] आदमी के अपन घर, ले जाना भल नऽहे।

(ख) गणनावाचक विशेषणो की द्विरुक्ति से भी इसी अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। यथा—दू दू आदमी के भेजबऽ? एक-एक, दस-दस आदि।

(ग) अपूर्णाङ्क विशेषणो मे मुख्य शब्द की द्विरुक्ति होती है। यथा—आध-आध सेर दूध, डेढ़-डेढ़ सौ रुपिया आदि।

२. अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण (Indefinite Cardinals)

सख्यावाचक विशेषणों मे 'ओ' या 'ओं' प्रत्यय जोड़ कर अनिश्चित सख्यावाचक विशेषण बनाये जाते हैं। यथा—

बीस—बीसों, लाख—लाखो, हजार—हजारों।

हजारों आदमी मरलन।

---

१ आम, लीची और कागजी नींबू बेचने में 'गाही' का व्यवहार होता है।

२. 'पन' का व्यवहार प्राय गोयठे की गिनती में होता है। स्थान-विशेष के अनुसार २२ या २३ गयठे की गिनती के बाद, एक गोयठा अलग रख दिया जाता है, जो उतने की सूचना देता है। यही 'पन' कहलाता है।

३ प्रत्येक।

अनिश्चय का भाव प्रकट करने के लिए संख्या के साथ 'एक' भी लगाया जाता है।
यथा—सेर एक लेबऽ। कैक[1] आदमी गेलथी। बीस एक आदमी अयथी।

३. परिमाणबोधक विशेषण (quantitative adjectives)

मगही में प्रमुख परिमाणबोधक विशेषण निम्नांकित हैं —

अबर, सब्भ (सब) समुचे (समूचे) थोड़ थोर, थोरका (थोड़ा) बहुते, जादे कम पूरा पुरे आदि। यथा—

अबर दूध, सब्भ फल, समुचे घर, थोड़ धन बहुते आदमी, जादे बात, कम भात, पूरा दोकान।

संख्यावाचक विशेषण के मुख्य तीन भेदों के अतिरिक्त मगही में दो अन्य प्रकार के संख्यावाचक शब्द मिलते हैं—गुणात्मक संख्यावाचक तथा ऋणात्मक संख्यावाचक। 'बिहारी' वर्ग की अन्य बोलियों में भी ये वर्तमान हैं।

गुणात्मक संख्यावाचक (Multiplicatives)

गुणात्मक संख्याओं का व्यवहार प्रायः पोहड़ा (पहाड़ा) में होता है। यथा—दु नमाइ चौअम, पच नमों पैंतालीस। गुणात्मक संख्याएँ पूर्णांक बोधक और अपूर्णांक बोधक दोनों हो सकती हैं। नीचे बीस तक के अन्तर्गत आने वाली गुणात्मक संख्याएँ दी जाती हैं —

× १ एकको
× १¼ सवा, सवैया
× १½, ड्योढ़ा
× २, दूना, दूनी दोबरी, दुगुना
× २½, अढ़ाइ अढ़ैया
× ३, तीया तीमा, तिमाह
× ३½, हुंठा, हुठा, हँठे
× ४, चौक, चौका, चौके
× ४½ हौंचा धौंचा धमूँचा
× ५, पचे, पचि
× ५½ पहूँचा
× ६ छक्के छक्का, छक
× ६½, छौंचा
× ७ सते
× ८ अट्ठे
× ९, नवाँई
× १०, दहाँई, दहाँ
× ११, गरहाँ
× १२, बरहाँ
× १३, तेरहाँ
× १४, चौदहाँ
× १५ पन्द्रहाँ
× १६, सोलहाँ
× १७ सतरहाँ
× १८, अठराहाँ
× १९ उनैसहाँ
× २० बीसहाँ, बीसाँई

ऋणात्मक संख्यावाचक

ऋणात्मक संख्यावाचक शब्द 'कम' शब्द संयुक्त कर बनते हैं। इनका व्यवहार अशिक्षितों एवं ग्रामीणों में अधिक है। जैसे—दू कम सौ (९८) पाँच कम पचास (४५), दस कम पचास (४०)।

---

1. कई एक।

क्रिया[1] (Verb)

मगही मे क्रिया के दो भेद होते हैं—सकर्मक[2] और अकर्मक[3]। यथा—

सकर्मक	अकर्मक
सोहन गेंद फेंकऽ हइ।	बुतरुअन[6] दौड़ऽ हथी।
मैना सतुवा खा हइ।	बकरी मेंमिया हइ।
गिलहरी अमदुर[4] कुतरतई[5]।	दीदी कब ऐथुन ?

कुछ ऐसी भी सकर्मक क्रियाएँ होती हैं, जिन्हे दो कर्म होते हैं। इन्हें 'द्विकर्मक क्रियाएँ' कहते हैं। इनके दो कर्मों मे एक मुख्य कर्म होता है जो किसी पदार्थ का बोध कराता है; दूसरा गौण कर्म होता है, जो किसी प्राणी का बोध कराता है। प्राणीबोधक गौणकर्म के साथ सर्वदा 'के' चिह्न आता है। यथा—सीता 'माय के' 'लुग्गा' देलकइ। बोर 'बेटा के' हम 'भात' खिलावऽ ही। तूँ 'राम के' बियाहके 'गीत' सुनावऽ।

कुछ क्रियाएँ, अर्थ के अनुसार सकर्मक और अकर्मक दोनो होती हैं। यथा—ऊ घैला भरऽ हइ (स० क्रि०)। इनरा[7] बरसात में भरऽ हइ (अ० क्रि०)। 'भरऽ हइ' क्रिया सकर्मक और अकर्मक दोनो है।

बहुत-सी सकर्मक क्रियाओ का अर्थ, कर्म की उपस्थिति मे भी पूरा नही होता। इसलिये उसके साथ पूर्ति के रूप में कोई सज्ञा या विशेषण आता है, जिसे 'कर्मपूर्ति' कहा जाता है। ऐसी क्रियाएँ 'अपूर्ण सकर्मक' कहलाती हैं। यथा—गॉवइ के लोग सब, पाँचू महतो के अपन 'मुखिया' चुनलथी। इसमे 'मुखिया' कर्मपूर्ति है और 'चुनलथी' अपूर्ण सकर्मक क्रिया है।

मगही मे ऐसी सकर्मक क्रियाएँ भी होती हैं, जिनकी अर्थपूर्ति के लिए, कर्त्ता से सबंध रखने वाली किसी सज्ञा या विशेषण का व्यवहार होता है। इसे 'उद्देश्यपूर्ति' (Subjective Complement) कहते हैं। ऐसी क्रियाएँ 'अपूर्ण अकर्मक क्रियाएँ' कहलाती हैं। यथा—सीता 'पढ़निहार' हइ। गनौरी 'अलसियाहा' निकललइ।

---

१. "जिन शब्दों से काम करने या होने का भाव प्रदर्शित हो, उन्हें क्रिया कहते हैं। जैसे—मैं खाता हूँ, वह सोता है इत्यादि।" —व्या० मर्य०—सु० वि०

२ "जिस क्रिया का फल कर्त्ता से निकल कर, कर्म पर पड़े अर्थात् जिसमें कर्म लग सके उसे सकर्मक कहते हैं। जैसे—यह अन्न खाता है, राम ने रावण को मारा।" व्या० मर्य०—सु० वि०

३ "जिस क्रिया का करना या होना और उसका फल दोनों कर्त्ता ही पर पड़े अर्थात् जिसमें कर्म न लग सके, उसे अकर्मक कहते हैं। जैसे— गाड़ी चलती है।" व्या० मर्य०—सु० वि०

४. अमरूद।

५ कुतरेगा।

६ बच्चे।

७. कुँआ।

कभी-कभी अकर्मक क्रिया में उसी धातु से निर्मित भाववाचक संज्ञा कर्म के रूप में व्यवहृत होती है। ऐसे कर्म को सजातीय कर्म (Cognate object) और ऐसी क्रियाओं को 'सजातीय क्रियाएं' कहते हैं। यथा—हम लोहरा 'खेल' खेला देखल। चिड़ियन ममगुत' 'बोल' बोलऽ हथी। मोहन लड़ाई' लड़लक।

क्रिया का वाच्य[2] (Volce)

हिन्दी के समान मगही में भी वाच्य तीन प्रकार के होते हैं—कर्तृवाच्य[3], कर्मवाच्य[4] और भाववाच्य[5]। यथा—

कर्तृवाच्य—लइकन दौड़ऽ हथी। पंडित पोथी बाँचऽ हथी। मफलो[6] कोठा खोखा झाड़कइ।

कर्मवाच्य—कुआँ सियल जा हइ। सबेरा खाये भेजल गेलइ। हमरा से ई मार न उठावल जायत।

भाववाच्य—हमरा से बैठल जैतइ। धूप में चलल न जा हइ। बेमरिया से अब उठल-बैठल न जा हइ।

मगही में द्विकर्मक क्रियाओं[7] के कर्मवाच्य में मुख्य कर्म उद्देश्य होता है और गौणकर्म कर्तृवाच्य के अनुसार रहता है। यथा—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
राजा ब्राह्मण के दान दे हथी।	ब्राह्मण के दान देवल जा हइ।
गुरु चेला के हिसाब सिखावऽ हथी।	चेला के हिसाब सिखावल जा हइ।

---

1. [illegible]।
2. "वाच्य क्रिया के उस रूप को कहते हैं, जिससे जाना जाता है कि क्रिया के द्वारा कर्त्ता के विषय में कुछ कहा गया है या कर्म के विषय में अथवा केवल भाव के विषय में।" सं हि व्या०—का गु
3. "कर्तृवाच्य क्रिया के उस रूप को कहते हैं, जिससे जाना जाता है कि क्रिया का उद्देश्य उसका कर्त्ता है जैसे—लड़का दौड़ता है। लड़की पुस्तक पढ़ती है।" सं० हि व्या—का गु
4. "क्रिया के उस रूप को कर्मवाच्य कहते हैं जिससे जाना जाता है क्रिया का उद्देश्य उसका कर्म है, जैसे—कपड़ा सिया जाता है। चिट्ठी अभी भेजी गई है।" सं हि व्या०—का गु
5. "क्रिया का वह रूप भाववाच्य कहलाता है, जिससे जाना जाता है कि क्रिया का उद्देश्य उसका कर्त्ता या कर्म नहीं है किंतु केवल उसका भाव है जैसे—बैठा जायेगा। धूप में चला नहीं जाता।" सं हि व्या०—का गु
6. मौसर।
7. देखिये पृ ६०

कर्त्तृवाच्य, अकर्मक और सकर्मक दोनो प्रकार की क्रियाओ मे होता है। कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रियाओ मे और भाववाच्य केवल अकर्मक क्रियाओ मे होता है। यथा—

कर्त्तृवाच्य	कर्मवाच्य	भाववाच्य
मोहन पोथी पढ़ऽहइ (स०)। चुतरु दौड़ऽ हथी (अ०)।	भिआह में मंतर पढ़ल जा हइ (स०)।	मोहन से चलल न जा हलइ (अ०)।

क्रिया का अर्थ[१] (Mood)

अन्य भाषाओकी भाँति, मगही की प्रत्येक क्रिया एक भिन्न प्रकार का विधान करती है। एक ही क्रिया भिन्न-भिन्न रूपो एव अर्थों मे व्यवहृत होती है। अत मगही मे क्रिया के मुख्य पाँच अर्थ मिलते हैं :—

(अ) निश्चयार्थ (आ) सभावनार्थ (इ) आज्ञार्थ (ई) सदेहार्थ और (उ) सकेतार्थ।

उदाहरणार्थ 'देखना' क्रिया को उपर्युक्त पाँच अर्थों मे प्रस्तुत किया जाता है—

(अ) लइका[२] बगइचा देखऽ हइ —निश्चयार्थ।
(आ) (हो सके हे) लइका बगइचा देखइ—सभावनार्थ।
(इ) (ए मोहन) बगइचा देखऽ —आज्ञार्थ।
(ई) लइका बगइचा देखइत होतई —सदेहार्थ।
(उ) लइका बगइचा देखतइ हल, तो बड़ नीमन[३] होतइ हल। —सकेतार्थ।

क्रिया के काल[४] (Tense)

मगही मे मूलत काल के तीन भेद हैं :—वर्तमान, भूत और भविष्यत्। यथा—

वर्तमानकाल	भूतकाल	भविष्यत्काल
हम तस्वीर देखऽ ही।	हम तस्वीर देखली।	हम तस्वीर देखब।
तूँ दीदी के बोलावऽ हऽ।	तूँ दीदी के बोलैलऽ।	तूँ दीदी के बोलैबऽ।
किसान के खाय[५] भेजल जा हइ।	किसान के खाय भेजल गेलइ।	किसान के खाय भेजल जतइ।

१ "क्रिया के विधान करने की रीति को (क्रिया का) अर्थ कहते हैं।" सं० हि० व्या०—का० गु०

२ लड़का।

३ अच्छा।

४ "क्रिया के जिस रूप से समय का बोध होता है, उसे व्याकरण में काल कहते हैं।" सं० हि० व्या०—का० गु०

५. भोजन।

१ वर्तमानकाल तथा भूतकाल की तीन अवस्थाएँ होती हैं—सामान्य अपूर्ण और पूर्ण। सामान्य अवस्था से कार्य की सामान्य अवस्था का बोध होता है। अपूर्ण अवस्था से पता चलता है कि कार्य का आरंभ हो गया पर उसकी समाप्ति नहीं हुई। पूर्ण अवस्था से कार्य की समाप्ति का बोध होता है। भविष्यत्काल में तीन अवस्थाएँ नहीं होतीं केवल एक सामान्य अवस्था होती है। यथा—

		वर्तमान काल	
सामान्य वर्त०	हम देखऽ ही।	बेयार¹ बहऽ हइ।	कपड़ा भेजल जा हइ।
अपूर्ण	हम देखइत ही।	बेयार बहइत हइ।	कपड़ा भेजल जा-इत हइ।
पूर्ण वा आसन्न भूत	हम देखली हे।	बेयार बहलइ हे।	कपड़ा भेजल गेलइ हे।
		भूतकाल	
सामान्य भूत	हम देखली।	बेयार बहलइ।	कपड़ा भेजल गेलइ
अपूर्ण ,,	हम देखइत हली।	बेयार बहइत हलइ	कपड़ा भेजल जाइत हलइ।
	या	या	या
	हम देखऽ हली।	बेयार बहऽ हलइ।	कपड़ा भेजल जा हलइ।
पूर्ण ,,	हम देखली हल।	बेयार बहलइ हल।	कपड़ा भेजल गेलइ हल।
		भविष्यत्काल	
सामान्य भवि	हम देखब या देखम।	बेयार बहतइ।	कपड़ा भेजल जतइ।

'अर्थ' और 'अवस्था' के अनुकूल काल-भेद

अब 'अर्थ' और 'अवस्था' के अनुकूल मगही में कालों के निम्नांकित भेद होते हैं —

१ निश्चयार्थ

(क) सामान्य वर्तमानकाल
लड़का पोथी पढ़ऽ हइ

(ख) अपूर्ण वर्तमानकाल
गाड़ी आवइत हइ

(ग) पूर्ण वर्तमानकाल
राधा देखलइ हे

(घ) सामान्य भूतकाल
हम आप देखली

(ङ) अपूर्ण भूतकाल
रानी आवइत हलथी या
रानी आवऽ हलथी

(च) पूर्णभूतकाल
नौकर चिट्ठी लेअलकइ हल

---
१ हवा।

(छ) सामान्य भविष्यत्काल

हम किताब पढ़ब या पढ़म

२ संभावनार्थ

(क) सभाव्य वर्तमानकाल

हम देखइत होऊँ

(ख) सभाव्य भूतकाल

हम देखले होऊँ

(ग) सभाव्य भविष्यत्काल

(जे) हम देखियइ

३ संदेहार्थ

(क) सदिग्ध वर्तमानकाल

हम देखइत होअब

(ख) सदिग्ध भूतकाल

हम देखले होअब

४ आज्ञार्थ

(क) वर्तमानकाल प्रत्यक्षविधि

तूँ देख

(ख) भविष्यत्काल परोक्षविधि

तूँ देखिहें

५ संकेतार्थ

(क) अपूर्ण सकेतार्थ

हम देखइत होतीं

(ख) पूर्ण सकेतार्थ

(जे) हम देखले होतू

(ग) सामान्य सकेतार्थ

(जे) हम देखतीं

क्रिया के पुरुष, लिंग और वचन

मगही मे क्रियाओ के तीन पुरुष[1] होते हैं—उत्तम, मध्यम और अन्य। डॉ० ग्रीयर्सन[2] ने मगही की क्रियाओ मे लिंग-भेद से रूपान्तर दिखलाया है, पर वस्तुत इनमे लिंग-भेद से रूपान्तर नही होता। यह बोली बिहारी वर्ग की अन्य बोलियो की भाँति लिंग-भेद की जटिलताओं से मुक्त है। यथा—**हम्मर भाई पेलन हें, हम्मर दीदी पेलन हें। राधा पोथी पढ़ऽ हइ, मोहन पोथी पढ़ऽ हइ।**

डॉ० ग्रियर्सन[2] ने मगही का क्रियाओ मे वचन-भेद से रूपान्तर दिखलाया है। परन्तु वस्तुत इनमें वचन-भेद से रूपान्तर नही होता। यथा—**राजा राज करऽ हथी, राजा सब राज करऽ हथी। सेवक सेवा करऽ हइ, सेवक सब सेवा करऽ हइ।**

कर्त्ता तथा कर्म के प्रति आदर-भाव के आधार पर क्रियाओ मे रूपान्तर होता है। इससे मगही की क्रियाओ के दो भेद हो जाते हैं—आदरवाचक और अनादरवाचक। यथा—**माली राजा के देखलकइन** (आद०), **माली नौकर के देखलकइ** (अना०) **उ रामायण पढ़लथिन** (आद०), **उ रामायण पढ़लकइ** (अना०)।

डॉ० ग्रियर्सन ने प्राय अनादरवाचक क्रियाओ को एकवचन और आदरवाचक क्रियाओ को बहुवचन शीर्षक के अन्तर्गत रखा है।

---

१. देखिए—सर्वनाम प्रकरण।

२ Seven Grammars of the Dielects and subdialects of the Bihari Language Part III Magadhi Dialect—

भविष्यत्कालिक कृदन्त विशेषण के समान होता है। यथा—आवेवला भाई, जायेओला लड़का। इनका रूप आकारान्त विशेषण के समान, विशेष्य के लिंग के अनुसार परिवर्तित होता है।

कर्तृवाचक संज्ञा के उदाहरण निम्नांकित हैं :—

√देख्

क्रिया	लिंग	प्रत्यय	वाक्य-प्रयोग
देखे	पु०	वला, ओला	तोहर हाँथ देखेवला या देखेओला अलबऽ हे।
देखिनी		हारा	ओकर रूप के देखिनीहारा के हइ ?
देखिन		हार	ओकर घर के देखिनहार के हइ ?
देखनी		हार	,, ,, , देखनीहार ,, ,, ?
देखे	स्त्री०	वली, ओली	तोरा देखेवली या देखेओली ऐलबऽ हे।
देखिनी		हारी	ओकर चाल देखिनीहारी या देखिनहारी तू के[1] ?

३. वर्तमानकालिक कृदन्त—धातु के अन्त मे इत, अइत, अत, इती, अती, अइती प्रत्यय जोड़ने से वर्त० कृ० विशेषण बनता है। इते, अते, अइते जोड़कर वर्तमान-कालिक कृ० के विकारी रूप बनते हैं। यथा—

साधारणरूप	विकारीरूप
देखित, देखिती	देखिते
देखत, देखऽती	देखऽते
देखइत, देखइती	देखइते

४. भूतकालिक कृदन्त—धातु के अन्त मे ल, ल भेल, ली, ल भेली, या ले जोडकर भूत० कृ० विशेषण बनाये जाते हैं। यथा—

साधारण रूप	विकारी रूप
देखल, देखली[2]	देखऽले
देखल भेल, देखल भेली[2]	

अविकारी (अव्यय)

मगही मे चार प्रकार के कृदन्त अव्यय होते हैं —

१. पूर्वकालिक कृदन्त २ तात्कालिक कृदन्त ३. अपूर्णक्रियाद्योतक कृ० ४ पूर्णक्रियाद्योतक कृ०।

१ कौन। २ देखली, देखल भेली जैसे रूप आदर्श मगही क्षेत्र में प्रचलित नहीं है। पर डॉ० ग्रियसन ने 'स्त्रीलिंग' शीर्षक में इन रूपों को रखा है।

१ पूर्वकालिक कृदन्त—पूर्व कृ हिन्दी के समान धातु-रूप में नहीं रहता। धातु के अन्त में 'के' प्रत्यय जोड़ कर, इसका निर्माण होता है। यथा—

क्रिया	धातु	पूर्व कृ
जाना	जा	जा के
खाना	खा	खा के
देखना	देख	देख के

इस कृदन्त का उपयोग प्रायः मुख्य क्रिया से पहले होने वाले कार्य की समाप्ति के अर्थ में क्रियाविशेषण के समान होता है। इसका रूप अपरिवर्तित रहता है। यथा—हम बगइचा देख के लौटली हे।

२. तात्कालिक कृदन्त—तात्कालिक कृ बनाने के लिये धातु के अन्त में दीर्घ 'तऽ' या 'ते' जोड़ कर उसके आगे 'हीं' लगाया जाता है। यथा—ऊ हमरा देखतऽ हीं बदमास[1] करे लगल। लइकवा उठतऽ हीं खिसिआय[2] लगलइ। इस कृदन्त से मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की समाप्ति का बोध होता है।

३ अपूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त—इसका रूप धातु में 'ते' प्रत्यय जोड़ कर बनाया जाता है। यथा—हमरा घरे से निकसते[3] भेयामस[4] लगे हे। हमरा, तोहरा होइते मोह लगे हे।

४ पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त—इसका रूप क्रिया के अन्त में 'ला' अथवा 'ले' प्रत्यय जोड़ कर बनाया जाता है। यथा—

हमरा विपत पड़ला ढेर दिन बीतल।

एतना रात गेला पर काहे एलऽ।

तूँ तो बड़े का कमर कसले बैठल हऽ।

अपूर्ण कृ और पूर्ण कृ के साथ प्रायः 'होना' क्रिया का पूर्णक्रियाद्योतक कृदन्त 'भेल (हुए) लगाया जाता है। यथा—

ओकरा गेला भेल ढेर दिन होल।

नौकर सिर पर बोझा रखले भेल आवऽ हइ।

क्रिया की काल-रचना

मगही की क्रियाओं के काल रचना के विचार से दो वर्गों में बाँटे जाते हैं—साधारणकाल[5] और संयुक्तकाल[6]।

---

१ बदमाशी। २. खिसियाना। ३ निकलते। ४. डर।

५. "जो काल केवल अन्य धातु से बनते हैं, वे साधारणकाल और जो दूसरी क्रिया की सहायता से बनाये जाते हैं, वे संयुक्त काल कहाते हैं।" सं० हि व्या —का प्र

साधारणकाल

१ धातु से बने काल

निश्चयार्थ	संभावनार्थ	आज्ञार्थ	संकेतार्थ
सामान्य भविष्यत् हम देखब	सभाव्य भव्यवर्ति (यदि) हम देखीं, देखव	वर्तमान प्रत्यक्ष विधि तूँ देख भविष्यत् परोक्षविधि तूँ देखिहे	×

२ वर्तमानकालिककृदन्त से बने काल

निश्चयार्थ	संभावनार्थ	आज्ञार्थ	संकेतार्थ
×	×	×	सामान्य संकेतार्थ (यदि) हम देखती

३ भूतकालिक कृदन्त से बने काल

निश्चयार्थ	संभावनार्थ	आज्ञार्थ	संकेतार्थ
सामान्य भूत हम देखली	×	×	×

संयुक्तकाल

१. क्रियार्थक संज्ञा या उसके विकारी रूप से बने काल

निश्चयार्थ

(क) सामान्य वर्तमानकाल—हम देखऽ ही (मैं देखता हूँ)

(ख) अपूर्ण भूतकाल —हम देखऽ[1] हली (मैं देखता था।)

२ वर्तमानकालिक कृदन्त से बने काल

निश्चयार्थ

अपूर्ण वर्तमानकाल, सहायक क्रिया[2] के वर्तमानकाल के साथ—हम देखइत ही[3]

अपूर्ण भूतकाल, ,, ,, ,, भूतकाल ,, हम देखइत[4] हली[5]

संभावनार्थ

संभाव्य वर्तमानकाल, सहायक क्रिया के संभाव्य भविष्यत्काल के साथ—

हम देखइत होऊँ[6]

संदेहार्थ

संदिग्ध वर्तमानकाल, सहायक क्रिया के भविष्यतकाल के साथ—हम देखइत होयब[7]

संकेतार्थ

अपूर्ण संकेतार्थ, सहायक क्रिया के सामान्य संकेतार्थ के साथ—हम देखइत होती[8]

---

१ अपूर्ण भूतकाल का यह रूप क्रियार्थक संज्ञा में सहायक क्रिया जोड़ कर बनता है।

२ "जिस क्रिया की सहायता से संयुक्तकाल बनाए जाते हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं; जैसे—वह चलता है। वह चलता था। वह चला होगा। इन उदाहरणों में "है" "था" और "होगा" सहायक क्रियाएँ हैं।" सं० हि० व्या०—का० गु०

३ मैं देख रहा हूँ।

४ अपूर्ण भूतकाल का रूप यहाँ वर्तमानकालिक कृदन्त से बना है। इस प्रकार अपूर्ण भूतकाल के दो रूप मिलते हैं, जिनमें एक क्रियार्थक संज्ञा के योग से बनता है (हम देखऽ हली) और दूसरा वर्तमानकालिक कृदन्त के योग से (हम देखइत हली)।

५ मैं देख रहा था। ६ मैं देखता होऊँ। ७ मैं देखता हूँगा। ८ मैं देखता होता।

१ भूतकालिक कृदन्त से बने काल

निश्चयार्थ

पूर्ण वर्तमानकाल या आसन्न भूतकाल	सहायक क्रिया के वर्तमानकाल के साथ—हम देखले हँ[1]

पूर्ण भूतकाल सहायकक्रिया के भूतकाल के साथ—हम देखले हल[2]

संभावनार्थ

संभाव्य भूतकाल सहायक क्रिया के संभाव्य भविष्यत्काल के साथ—

(जे) हम देखले होउँ[3]

सन्देहार्थ

संदिग्ध भूतकाल सहायक क्रिया के सामान्य भविष्यत्काल के साथ—

हम देखले होखब[4]

संकेतार्थ

पूर्ण संकेतार्थ सहायक क्रिया के सामान्य संकेतार्थ के साथ—(जे) हम देखले होतूँ[5]

साधारणकाल

साधारणकाल की रूप रचना के लिये प्रत्येक 'पुरुष' में अनेक व्यक्तिवाचक प्रत्ययों का व्यवहार किया जाता है। इन प्रत्ययों के अनेक वैकल्पिक रूप हैं जो 'काल प्रातिपदिक'[6] (Tense Stem) के साथ संयुक्त किये जाते हैं। यथा—

कालप्रातिपदिक		प्रत्यय		साधारणकाल का रूप
(हम) देखल	+	ईँ	=	देखलीँ
(हम) देखल्	+	इन	=	देखलिन

साधारणकाल में प्रयुक्त होने वाले व्यक्तिवाचक प्रत्ययों की तालिका नीचे प्रस्तुत की जाती है जिनकी रूपावली[7] आगे दी जायेगी—

---

१ मैंने देखा है। २. मैंने देखा था। ३ (यदि) मैंने देखा हो। ४ मैंने देखा होगा।
५. (यदि) मैंने देखा होता।
६ संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'प्रातिपदिक' की संज्ञा उन्हें दी जाती है जो अर्थवान् होते हैं पर धातु नहीं होते, एवं न उनमें विभक्ति ही लगी होती है। ये प्रातिपदिक, जो काल-संबंधी अर्थ सूचित करते हैं, काल प्रातिपदिक कहे जाते हैं। यथा—देखल (दृष्ट हुआ) पावल (पाया हुआ)।
७. देखिए आगे-व्याख्या भाग में √'देख' के रूप

निश्चयार्थ

सामान्य भूतकाल

मगही—हम देखली आदि, हि० मैने देखा आदि

अनादरवाचक	आदरवाचक
उत्तम—इ, ऊॅ, इयइ, इयउ	ई ॅ, इन, इओ, इयइन
मध्यम—अॅ, ए, ऍ, अही, अहो, अहूँ, हिन	अ, ई ॅ, ऊॅ, अहुन, अहो
अन्य—इस, अकइ, अकउ, अक, अका, आ	न, इन, अथु, अथी, अकन, अकिन, अथिन, अथुन, अकथीन, अखिन, अखीन, अखिनी[1], अहिन।

टिप्पणी—धातु मे 'अल्' प्रत्यय जोड कर, इस काल का प्रातिपदिक बनाया जाता है। यथा—मूल धातु 'देख्', 'अल्' प्रत्यय के जुटने पर भूतकालिक प्रातिपदिक 'देखल्' बना। इसमे ही प्रत्यय जोडे जाते है। यथा—देखल्+ऊॅ=देखलूॅ

इस काल के मध्यम तथा अन्य पुरुष मे सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाओ के लिए भिन्न-भिन्न प्रत्ययो का व्यवहार होता है। यथा.—कर्त्तृवाच्य मे।

सकर्मक क्रिया—ऊ देॅखलक या देॅखलकइ।

अकर्मक क्रिया—ऊ गिरल या गिरलइ।

निश्चयार्थ

सामान्य भविष्यत्काल

मगही—हम देखम या देखब आदि, हि०—मै देखूॅगा।

अना०	आद०
उ० पु०—अइ, अउ	ओ, औ
म० पु०—अॅ, आ, ए, ऍ, अहीं, अहिन	अ, अहूँ, अहू, अहो, इह[2], अहुन
अ० पु०—ई, अत, अतइ, अतउ	इहे ॅ, अखिन, अखीन, अखिनी, अतन, अतिन, अतथी, अतथु, अतथिन, अतथीन, अतथिनी, अतथुन, अथ, अथी, अथीन, अथिनी, अथुन

टिप्पणी—१ धातु मे 'अब्' जोड कर निश्चयार्थ, सामान्य भविष्यत्काल का प्रातिपदिक बताया जाता है। यथा—मूल धातु 'देख्', 'अब' प्रत्यय के जुटने पर भविष्यत् कालिक प्रातिपादिक 'देखब' बनता है। इसमे ही प्रत्यय जोडे जाते है। यथा—देखब्+अइ=देखबइ।

२. ई, इहऽ, इहे आदि कुछ प्रत्यय सीधे मूल धातु मे ही जुटा करते हैं। यथा—देख्+इहऽ=देखिहऽ।

---

१ पटना जिला के पूर्वी क्षेत्रों में इन प्रत्ययों का विशेष व्यवहार मिलता है। २. देखिइ।

सामान्य सकेतार्थ

मगही—(जे) हम देखती आदि, हि०—(यदि) मैं देखता

अना०	आद०
उ० पु०—इ, ईं, ऊँ, इयइ, इअउ	इयो, इयइन
म० पु०—आ, ए, अहाँ, अहिन	अ, अहूँ, अहूँ अहो, अहुन।
अ० पु०—आ, इ, अइ अइ हल, अउ हल[1], अही, अहिन।	इन, अथी, अथिन

टिप्पणा—धातु मे 'अत्' तथा 'इत्' प्रत्यय जोड कर, सामान्य सकेतार्थ के प्रातिपदिक वनाये जाते हैं। यथा—मूलधातु 'देख्', 'अत्' या 'इत्' प्रत्यय जुडने पर सामान्य सकेतार्थ का प्रातिपदिक 'देखत्' या 'देखित्' वना। इसमे ही प्रत्यय जोडे जाते हैं। यथा—देखत्+ऊँ=देखतूँ। देखित्+ऊँ=देखितूँ।

सहायक क्रियाएँ (Auxiliary verbs)

जिस क्रिया की सहायता से सयुक्त काल वनाये जाते हैं, उसे सहायक क्रिया कहते हैं। इन सहायक क्रियाओ का अपना अर्थ नही होता। ये प्रधान क्रिया के अर्थ और काल को वनाने मे सहायता पहुँचाती हैं।

मगही मे सहायक क्रियाओं के दो भेद होते हैं—अपूर्णार्थक (Defective) तथा पूर्णार्थक (complete)। अपूर्णार्थक सहायक क्रिया √'अह्' (होना) धातु से वनी है। इस क्रिया के कतिपय वैकल्पिक रूप हैं, जो उसके सवल रूप से निकले हैं। यथा—√'हक' इसका व्यवहार केवल वर्तमानकाल और भूतकाल मे होता है। क्रिया-रूपो मे √'अह्' का 'अ' हट जाता है और केवल 'ह' रह जाता है। यथा—हम ही (अह्+ई=ह्+ई =ही)।

पूर्णार्थक सहायक क्रिया √'हो' धातु से वनी है। इसके क्रिया-रूप नियमित रूप से सभी कालों मे चलते हैं। इस क्रिया के भूतकाल के रूप केवल क्रियार्थक सज्ञा (verb substantive) के रूप मे व्यवहृत होते हैं, सहायक क्रिया के रूप मे नही।

---

१ सहायक क्रिया 'हल' सामान्य संकेतार्थ के समस्त रूपों में जोड़ा जा सकता है। इससे उसके रूपों पर अधिक जोर पड़ता है। यथा—जे उ देखतउ हल, तो बड़ निहाल हो जतउ हल।

अ० पु०— होल, होली, होलइ, होलउ	होलन, होलनि, हो॑लथी, हो॑लथिन, हो॑लथीन, हो॑लथिनी, हो॑लथुन, हो॑लखिन,-खीन,-खिनी, होलही॑, होलहिन, होली

रूप—२‡

	अना०	आद०
उ० पु०—	भेली, भेली, भेलूँ, भे॑लिअइ, भे॑लिअउ	भे॑लियो, भे॑लियइन, भेलियवऽ
म० पु०—	भेलँ, भेला, भेले॑, भे॑लही भे॑लहिन	भेलऽ, भेलहुँ, भलहू, भे॑लहुन, भे॑लहो
अ० पु०—	भेल, भेली, भेलइ, भेलउ	भेलन, भे॑लथी, भे॑लथिन, भे॑लथीन-थिनी-थुन, भे॑लखिन, भ॑लखीन, भे॑लखिनी,-खुन।

भविष्यत्काल

मगही—हम होयब आदि, हि०—मैं होऊँगा आदि

	अना०	आद०
उ० पु०—	होब[1], होबी, होबइ, होबउ, होअम	होबो, हो॑बोअ, होअम, होबइन
म० पु०—	होबँ, होवा, होबी॑, होमी, होबेँ, होवे हो॑बहीँ, हो॑मही	होबऽ, हो॑बहुँ, हो॑बहू, हो॑महू, हो॑इहऽ हो॑बहो, हो॑बहिन, हो॑बहुन
अ० पु०—	होई, होत[2], होती, होतइ, होतउ	होथ[3] होथी, होथिन, होथीन, होथुन, हो॑थिनी, हो॑इहे॑, होतन, होतथी, होतथिन, हो॑तथिन, हो॑तथुन, हो॑तथिनी, होखिन, होखीन, होखिनी

---

‡निश्चयार्थ, भूतकाल का यह रूप अनियमित है।

१. होब के स्थान में होअब, होइब, होएब का व्यवहार सर्वत्र हो सकता है।

२ होत के बदले होअत या होइत का भी व्यवहार होता है।

३. होय की जगह होअथ का भी प्रयोग होता है।

संभावनार्थ

भविष्यत्काल

मगही—(जे) हम होऊँ हि—यदि मैं होऊँ

मगा	नाथ
उ पु॰—होऊँ, होउ, होऊँ	होँइमो, हो इमम्ऽ, हो इमइन
म॰ पु —हो होवँ होएँ, होए होवीँ होहिन	होम, होइँ होइँ होहुन होहो
अ॰ पु —होए, होमइ, होमउ, होमस	होइ, होइन होम होवी हो थिन होमीन, होँ थिनी, होमुन, होखिन होमुन

सामान्य संकेतार्थ

मगही—(जे) हम होतीँ हि —(यदि) मैं होता

मगा	नार
उ पु —होतीँ, होती, होतूँ, हो तिमइ, हो तिमउ	हो तियो, हो तियो, होँ तियम्ऽ होँ तिमइव
म पु —होतँ होता होते होते होतहीँ हो तही	होतऽ, होँ तइ, होँ तहो हो तहिन हो तहुन
अ पु —होत होता, होतो होँ तइ, होँ तउ, होँ तही	होतम, होतिम होँ तथी होँ तथिम हो तमुन, हो तमीन होँ तथिमी हो तहिन होँ तखिम होँ तखीन, हो तखिनी

वर्तमानकालिक कृदन्त

होता[†] होती

भूतकालिक कृदन्त

रूप—१	होल[*]	होली
रूप—२	भेल	भेली

क्रियार्थक संज्ञा

होएँव, होअब होइब

[†]होत के स्थान में होमत या होइत का व्यवहार हो सकता है।
[*]होल की जगह होइल भी व्यवहृत हो सकता है।

कर्त्तृवाच्य

कर्त्तृवाच्य के सब कालो मे, कुछ अपवादो को छोड कर, सभी सकर्मक क्रियाओ के रूप एक ही प्रकार से चलते हैं। अकर्मक क्रिया के रूप, केवल भूतकाल के कुछ रूपो मे सक-र्मक क्रिया के रूपो से भिन्न होते हैं। स्वरान्त धातुओ के रूपो मे भी कुछ भिन्नता परिलक्षित होती है।

क्रिया-रूपो मे अनेक स्थानो पर स्वरो का ह्रस्वीकरण हो जाता है।

सकर्मक क्रिया

√देख्

क्रियार्थक सज्ञा	..	देखब
कर्त्तृवाचक सज्ञा	.	देखेवला
वर्तमानकालिक कृदन्त	....	देखित्, देखत या देखइत, देँखऽती या देखिता
भूकालिक कृदन्त		देखल, देखली
पूर्णार्थक भूतकालिक कृदन्त	...	देखल भेल, देखल भेली
पूर्वकालिक कृदन्त		देख के
तात्कालिक कृदन्त		देखतेँऽ ही
अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त	...	देखते भेल

(अ) साधारणकाल

निश्चयार्थ

सामान्य भूतकाल

मगही—हम देखली आदि, हि०—मैंने देखा आदि

अना०	आद०
उ० पु०—देँखली, देँखलो, देँखलूँ, देँखलुक, देँखलिक, देँखलि-अइ, देँखलिअउ	देखलियो, देँखलिवऽ, देखलीन, देँखलिअइन, देँखलिअउन
म० पु०—देँखलँ, देँखलेँ, देँखले, देँखलहीँ	देँखलऽ, देँखला, देँखलहू, देखलहो, देँखलहिन, देँखलहुन
अ० पु०—देँखिस, देँखला, देँखलका, देँखको, देँखकइ, देँख-कउ, देँखलक, देखलकइ, देँखलकउ, देँखलकवऽ	देँखलन, देँखलिन, देँखलथी, देखलथु, देँखलकन, देँखलकिन, देँखलथिन, —थीन,—थिनी, —थुन, देखलखन,—खिन,—खीन, —खिनी, —खुन, देखलकथिन

आज्ञार्थ

भविष्यत् परोक्ष विधि[1]

मगही—तू देखिहें, हि०—तुम देखना

	अना०	आद०
उ० पु०—	×	×
म० पु०—	देखिहें, देखिहे	देखिहऽ, देखबहु, देखबहुन, देखमहु
अ० पु०—	×	×

संकेतार्थ

सामान्य संकेतार्थ

मगही—(जे) हम देखतीं, हि०—(यदि) मैं देखता

	अना०	आद०
उ० पु०—	देखतीं[2], देखती, देखतूँ, देखतिक, देखतिअइ,-अउ	देखतियो, देखतिवऽ, देखतिन, देखतमऽ
म० पु०—	देखतें, देखतहीं	देखतऽ, देखतीं, देखतहु, देखतहुन
अ० पु०—	देखत, देखतइ हल[3] देखतउ हल	देखतथी -थु,-थुन, देखतथीन,-थिन, देखतइन

(आ) संयुक्तकाल

१ क्रियार्थक संज्ञा के विकारी रूप में—

निश्चयार्थ

सामान्य वर्तमानकाल

मगही—हम देखऽ ही आदि, हि०—मैं देखता हूँ

	अना०	आद०
उ० पु०—	देखऽ[4] ही[5] देखऽ ही	देखऽ हियों,-हियो
म० पु०—	देखऽ हें, देखऽ हीं, देखऽहही	देखऽ हऽ, देखऽ हहु,-हहुन, देखऽ ही
अ० पु०—	देखऽ हइ	देखऽ हईन, देखऽहथी,—हथु, हथुन आदि

---

१ इसमें वर्तमान आज्ञार्थ से केवल मध्यमपुरुष के रूप में अन्तर है।

२ अथवा देखइतीं, देखइतूँ। आगे भी ऐसे ही रूप चलेंगे। देखइतूँ आदि 'इ' वाले रूप सभी मगही भाषी-क्षेत्रों में प्रचलित नहीं हैं। आदर्श-मगही क्षेत्र में देखतीं आदि रूप ही अधिक प्रचलित हैं।

३ जिस प्रकार अन्य पुरुष में 'हल' जोड़कर रूप बनाए गये हैं, उसी प्रकार सभी पुरुषों में 'हल' जोड़ कर रूप बनाये जा सकते हैं। सामान्य संकेतार्थ के रूपों में 'हल' जोड़ने से जोर पड़ता है।

४ देखऽ के स्थान पर, सर्वत्र 'देखे' लिखा जा सकता है।

५ अपूर्णार्थक सहायक क्रिया के वर्तमानकाल का कोई अन्य रूप सर्वत्र व्यवहृत हो सकता है।

सभावनार्थ

सभाव्य वर्तमानकाल, मभाव्य भविष्यत्काल के साथ

मगही—(जे) हम देखइत होऊँ, हि०—(यदि) मैं देखता होऊँ

अना०	आद०
उ० पु०—देखइत[1] होऊँ[2],—होऊ	देखइत होँइयो
म० पु०—देखइत होअँ,—होएँ	देखइत होअ,—होईं
अ० पु०—देखइत होअइ,—होए	देखइत होइँ,—होथीन

संदेहार्थ

सदिग्ध वर्तमान, सहायक क्रिया के भविष्यत् काल के साथ

मगही—हम देखइत होब, हि०—मैं देखता होऊँगा

अना०	आद०
उ० पु०—देखइत[3] होब[4],—होम	देखइत होँबोअ,—होँमोँअ
म० पु०—देखइत होबँ,—होबेँ,—होबे	देखइत होबऽ
अ० पु०—देखइत होइ,—होती,—होतइ	देखइत होइहेँ,—होतन,—होथीन

संकेतार्थ

अपूर्ण सकेतार्थ, सहायक क्रिया के सामान्य केतार्थ के साथ

मगही—(जे) हम देखइत होतूँ, हि०—(यदि) मैं देखता होता

अना०	आद०
उ० पु०— देखइत[5] होती[6]—होतू, —होतियइ	देखइत होँतियो,—होँतमँऽ,—होँतिअइन
म० पु०— देखइत होतँ,—होतहीँ	देखइत होतऽ,—होथी
अ० पु०— देखइत होत,—होतइ हल	देखइत होतन,—होथिन हल

---

१ देखइत की जगह पर देखेत या देखत का व्यवहार सर्वत्र हो सकता है।

२ पूर्णार्थक सहायक क्रिया के वर्तमान काल के, किसी दूसरे रूप का व्यवहार, इसके बदले में सर्वत्र हो सकता है।

३ देखइत के स्थान पर देखेत या देखत का व्यवहार सर्वत्र हो सकता है।

४ पूर्णार्थक सहायक क्रिया के भविष्यत काल के किसी भी अन्य रूप का व्यवहार सर्वत्र हो सकता है।

५ देखइत के स्थान पर देखेत या देखत का व्यवहार सर्वत्र हो सकता है।

६ पूर्णार्थक सहायक क्रिया के सामान्य सकेतार्थ के किसी भी अन्य रूप का व्यवहार सर्वत्र हो सकता है।

संकेतार्थ

पूर्ण संकेतार्थ, सहायक क्रिया के पूर्ण संकेतार्थ के साथ

मगही—(जे) हम देखले होतू, हि०—यदि मैंने देखा होता

	अना०	आद०
उ० पु०—	देखले होती,—होतूँ	देखले होतियों
म० पु०—	देखले होतँ,—होतें	देखले होतऽ,—होती
अ० पु०—	देखले होत,—देखलक होत	देखले होतन,—होतिन, होथिन

कर्तृवाच्य

अकर्मक क्रिया

अकर्मक क्रिया के रूप, सकर्मक क्रिया से केवल कुछ भूतकाल के रूपो मे भिन्न हैं। नीचे भूतकाल के तीन प्रचलित रूप दिये जा रहे हैं। अन्य कालो मे अकर्मक क्रिया-रूपो के गठन की विधि √ देख् के ही समान है।

पहले कहा जा चुका है कि धातु मे 'अल' प्रत्यय जोड़कर भूतकाल का प्रातिपदिक बनाया जाता है। नीचे अकर्मक √ गिर् के रूप दिये जा रहे हैं। अकर्मक क्रिया के सयुक्त काल के भूतकालिक कृदन्त मे साधारण रूप 'गिरल' का ही व्यवहार होता है, विकारी रूप 'गिरले' का नही। यथा—'हम गिरल होय' लिखा जायेगा, 'हम गिरले होय' नही।

अकर्मक क्रिया

√ गिर्

क्रियार्थक संज्ञा	— गिरब
कर्तृवाचक संज्ञा	— गिरेवला
वर्तमानकालिक कृदन्त	— गिरइत, गिरते, गिरत
भूतकालिक कृदन्त	— गिरल
पूर्णार्थक भूतकालिक कृदन्त	— गिरल भेल
पूर्वकालिक कृदन्त	— गिर के
तात्कालिक कृदन्त	— गिरतऽहीं
अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त	— गिरइत भेल, गिरते भेल

स्वरान्त धातुएँ[1]

बहुत-सी ऐसी क्रियाएँ हैं, जो स्वरान्त धातुओं से निर्मित हुई हैं। इनमे धातु और प्रत्यय के सयोग प्राय अनियमित होते हैं।

इसलिए स्वरान्त धातुओं के क्रियारूपो के निम्नाकित उदाहरण दिये जा रहे हैं। इनके रूप चार मौलिक एव कृदन्तीय कालो मे दिये जा रहे हैं। इनसे संयुक्तकाल सरलता से बनाये जा सकते हैं।

आकारान्त धातु के क्रिया-रूप

इन क्रिया-रूपो का अध्ययन आवश्यक है, कारण कि कर्तृवाच्य और प्रेरणार्थक क्रिया के रूप बहुत कुछ इन पर आधारित हैं।

निश्चयार्थ, भूतकाल मे इन क्रियाओ मे, धातु एव प्रत्यय के बीच, एक सन्धि स्वर 'इ' या 'उ' जुड़ जाता है। यथा—ख[2]+इ+लूँ (=खाया), इसमे 'इ' सन्धि-स्वर है। प[2]+उ+लूँ (=पाया) इसमे 'उ' सन्धि-स्वर है।

सन्धि-स्वर के रूप में 'इ' या 'उ' का व्यवहार निम्नाकित अवस्थाओ में होता है—

१. सभी सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रियाओ में सन्धि-स्वर 'उ' लगता है। यथा—पउलूँ, चढ़उलूँ।

अपवाद—√खा धातु में सर्वदा सन्धि-स्वर 'इ' लगता है। यथा—खइलूँ।

२. सभी अकर्मक क्रियाओ में धातु और प्रत्यय के बीच सन्धि-स्वर 'इ' का व्यवहार होता है। यथा—अघइलूँ, घवड़इलूँ, अइलूँ।

जिन क्रियाओं के, निश्चयार्थ, भूतकाल के रूप में धातु एव प्रत्यय के बीच सन्धि-स्वर 'उ' आता है, उनके भूतकालिक कृदन्त के रूप मे 'उ' का स्थान 'व' ले लेता है। यथा—निश्चयार्थ भूतकाल—पउलूँ, भूतकालिक कृदन्त—पावल। बजउलूँ—बजावल आदि। इसी प्रकार जिन क्रियाओ में सन्धि-स्वर 'इ' आता है, उनमें 'इ' का स्थान 'य' ले लेता है। यथा—निश्चयार्थ भूतकाल—अघइलूँ, भूतकालिक कृदन्त—अघायल। घबड़इलूँ—घबड़ायल।

---

१ देखिये, स्वरों के ह्रस्वीकरण के नियम—पृ० ७

२ मूल धातु √खा तथा √पा है। स्वरों के ह्रस्वीकरण के लिये देखिये पृ० ७

उपर्युक्त परिवर्तनो को स्मरण रखने के लिए भूतकालिक कृदन्त के रूपा को ध्यान मे रखना सहायक होगा। और जैसा कि 'य' और 'व' के (हलन्त 'य्, व्) रूप-परिवर्तन के सम्बन्ध मे कहा जा चुका है, 'य' और 'व' कुछ परिस्थितियो मे क्रमश निर्बल 'इ' और 'उ' मे बदल जाते हैं।

उल्लेखनीय है कि सकर्मक क्रिया मे सन्धि-स्वर 'उ' क स्थान पर 'इ' के व्यवहार की भी प्रवृत्ति मिलती है। यथा—'पउलूँ' के स्थान पर 'पइलूँ'। मगध के पूर्वी क्षेत्रो मे इसका प्रचलन अधिक है। दक्षिण मुंगेर की मैथिली-मगही सीमा मे तो यह नियम-सा हो गया है। यथा—'पइलूँ, बजइलूँ, चढ़इलूँ आदि।

बहुत से लोग 'इ' क स्थान पर, ह्रस्व 'ऍ' का व्यवहार करते हैं। यथा—अइलूँ के स्थान मे अऍलूँ, आइल, आऍल। अ+ऍ मे सन्धि हो जाने पर 'ऐंलूँ' का भी व्यवहार होता है।

बहुत से लोग भूतकालिक कृदन्त मे 'य' की जगह ह्रस्व 'ऍ' और 'व' की जगह ह्रस्व 'ओॅ' लिखते हैं। इस प्रकार भूतकालिक कृदन्त मे निम्नांकित विवरण (spelling) भी मिलते हैं। यथा—

पाओॅल, बजाओॅल, चढाओॅल, गाओॅल,
खाऍल, अघाऍल, घबडाऍल।

√'पा' धातु की रूपावली

क्रियार्थक सज्ञा—रूप १—पा, विकारी—पाएॅ, पावेॅ, पावऽ या पा।
„ „ रूप २—पावल, विकारी—पउला।
„ „ रूप ३—पाअब, पाऍब, पायब।

निश्चयार्थ

भूतकाल

अना०	आद०
उ० पु०—पउलीँ, —ली, —लूँ, पउलिअइ, —अउ	पउलीँ, पौलीँ पउलियो, पउलमऽ, पउलमऽ।
म० पु०—पउलेँ, पौलेँ, पौले	पउलऽ, पौलऽ, पौली, पौलथिन
अ० पु०—पाइस, पउलक, पौलक	पउलन, पौलन, पौलथी, पौलथिन, पौलखिन, पौलखुन

निश्चयार्थ

भविष्यत्काल

	अना०	आद०
उ० पु०—	पीवउ, पीअव, पीयम	पीयो, पीवोअ, पीयम
म० पु०—	पीवें, पीवे, पिबही	पीवऽ, पीहऽ, पिथिन, पिथुन
अ० पु०—	पीही	पिहिहें या पीहे, पिथी,-थु,-थुन, —खिन,-खुन

सभावनार्थ

भविष्यत्काल

	अना०	आद०
उ० पु०—	पीहू, पीउक	पीही
म० पु०—	पीएँ, पीए	पीअऽ, पीअँ, पीथी
अ० पु० -	पीए, पीअइ	पीहीं, पीही, पीथिन

सकेतार्थ

सामान्य सकेतार्थ

	अना०	आद०
उ० पु० —	पीहतूँ,[१] पिहती	पिहतीं, पिहतियो
म० पु० —	पीहता	पिहितऽ, पिथी
अ० पु० —	पीहित	पिहितन, पिहतन

ऊकारान्त धातु √चू की रूपावली

क्रियार्थक स ज्ञा—चूअब

निश्चयार्थ

भूतकाल

	अना०	आद०
उ० पु० —	चूलूँ, चूलुक, चुइलुक	चूलीं, चुलियो, चुलियंमऽ
म० पु० —	चूला, चूले, चुअले	चूलऽ, चुलथी,-थिन,-खिन
अ० पु० —	चूअल, चुअलक	चूलन, चुलथी,-थिन,-खिन

निश्चयार्थ

भविष्यत्काल

	अना०	आद०
उ० पु०—	चूअब, चूअम	चूबो, चुबोअ
म० पु०—	चूएबे, चुबे	चूबऽ, चूथी, चूथिन
अ० पु०—	चूइ, चुतइ	चूइहें, चूथिन, चूथी

---

१ अथवा पिहितूँ या पीतूँ। सर्वत्र ऐसा रूप चल सकता है।

सम्भावनार्थ

भविष्यत्काल

	अना०	आद०
उ० पु०—	रोऊँ, रोइक, रोउक	रोईं, रोइयो, रोमऽ
म० पु० —	रोअँ, रोएँ, रोमे	रोअऽ, रोयहु, रोहू
अ० पु० —	रोए	रोईं

संकेतार्थ

सामान्य संकेतार्थ

	अना०	आद०
उ० पु०—	रोतूँ[1]	रोतीं, रोतियो
म० पु०—	रोता, रोते	रोतऽ
अ० पु०—	रोअत	रोतन

अनियमित क्रियाएँ

कुछ क्रियाएँ केवल निश्चयार्थ भूतकाल मे अनियमित रूप ग्रहण करती है, यथा—√कर्, √धर्, √मर्, √हो[2] और जा। इनके निश्चयार्थ भूतकाल के रूप निम्नांकित है—

√कर्[3]

क्रियार्थक संज्ञा—करब

निश्चयार्थ

भूतकाल

रूप १

	अना०	आद०
उ० पु०—	करलूँ, करलुक, करलीं, करली	करलियो, करलुअ, करलमऽ
म० पु० —	करल्हीं, करलें, करले	करलऽ, करलहु,—थिन,—थुन—खिन
अ० पु०—	करलक, करकइ, करलकइ	करलन, करलथी, — थिन,—खिन,—खुन

---

१. अथवा रोइतूँ या रोअतूँ और आगे भी ऐसा ही चलेगा। इस वर्ग की क्रिया के अधिक उदाहरण के लिये √हो धातु के रूप पृ० ५० पर देखें।

२ √हो धातु के रूप पृ० ५० पर देखें।

३. √धर् धातु के रूप भी √कर् के ही समान चलेंगे।

√जा (जाना)

निश्चयार्थ भूतकाल को छोडकर, सभी कालो मे, इस धातु के रूप √पा की तरह होंगे। तुलनात्मक अध्ययन के लिए √आ (आना) धातु के रूप √जा धातु के साथ दिये जा रहे हैं—

निश्चयार्थ

भूतकाल

√आ

अना०	आद०
उ० पु०—अइलूँ[1], अइलुक, अइलीँ, अइली	अइलियो, अइलुअ, अइलमऽ
म० पु०—अइला, अइल्हीँ, अइलेँ, अइले	अइलऽ, अइल्हु, अइलथिन, —थुन, —खिन, —खुन।
अ० पु०—आएँल, अइलइ, अइलक, अइलकइ	अइलन, अइलथी, —थिन, —खिन, —खुन

√जा[2]

अना०	आद०
उ० पु०—गेलीँ, गेली, गेलूँ, गेलिक, गेलुक	गेलियो, गेलुअ, गेलमऽ
म० पु०—गेला, गेल्हीँ, गेलेँ, गएले	गेलऽ, गेल्हु, —थिन, —थुन, —खिन, —खुन
अ० पु०—गेल, गेलइ, गेलक	गेलन, गेलथी, —थिन —खिन, —खुन

√दे और √ले धातुओं के रूप, सभा कालो मे अनियमित रहते हैं। निश्चयार्थ भूतकाल और सभावनार्थ भविष्यत् काल मे यह अनियमितता विशिष्ट रूप से लक्षित होती है। उदाहरणार्थ यहाँ √दे धातु के रूप चार मौलिक एव कृदन्तीय कालो मे दिये जा रहे हैं। √ले धातु के रूप लगभग √दे के ही समान होते हैं—

√दे

क्रियार्थक सज्ञा—देव

क्रियार्थक सज्ञा का विकारी रूप—दे, देवेँ या देअ

---

१. अथवा ऐलूँ या अएँलूँ। आगे भी ऐसा ही चलेगा।

२ √जा धातु से बने क्रिया-रूपों में अनियमितता स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। 'ज' के स्थान पर 'ग' का व्यवहार हुआ है, और 'गइली' की जगह पर 'गेली' का प्रयोग हुआ है।

कर्मवाच्य

कर्मवाच्य क्रिया बनाने के लिये, 'अल' से अन्त होने वाली क्रियार्थक संज्ञाओ के आगे, 'जाएँब' सहायक क्रिया के सब कालो और अर्थों का रूप जोडा जाता है। यथा—'देखल जाएँब' (हम देखे जायेंगे)। लिंग, वचन, पुरुष और काल के कारण यहाँ क्रियार्थक सज्ञा मे रूपान्तर नही होता। केवल सहायक क्रिया 'जाएँब' का रूपान्तर होता है। यथा—

वर्तमानकाल

अना०	आद०
उ० पु०—ए० व०—हम देखल जाही या जाहिअउ	हम देखल जाहियो
व० व०—हमनी देखल जाही या जाहिअउ	हमनी देखल जाहियो
म० पु०—ए० व०—तूँ देखल जाहें	तूँ देखल जाहS
व० व०—तोहनी देखल जाहें	तोहनी देखल जाहS
अ० पु०—ए० व०—उ देखल जा हइ	उ देखल जा हथी
व० व०—ओकनी देखल जा हइ	उ सब देखल जा हथी

भूतकाल

अना०	आद०
उ० पु०—ए० व०—हम देखल गेली या गेलिअउ	हम देखल गेलियो
व० व०—हमनी देखल गेली या गेलिअउ	हमनी देखल गेलियो
म० पु०—ए० व०—तूँ देखल गेलें	तूँ देखल गेलS
व० व०—तोहनी देखल गेलें	तोहनी देखल गेलS
अ० पु०—ए० व०—उ देखल गेलइ	उ देखल गेलथी
व० व०—ओकनी देखल गेलइ	उ सब देखल गेलथी

भविष्यत्काल

अना०	आद०
उ० पु०—ए० व०—हम देखल जाम या जबउ	हम देखल जैबो या जबोअ
व० व०—हमनी देखल जाम या जबउ	हमनी देखल जैबो या जबोअ
म० पु०—ए० व०—तूँ देखल जैबे	तूँ देखल जैबS
व० व०—तोहनी देखल जैबे	तोहनी देखल जैबS
अ० पु०—ए० व०—उ देखल जतइ	उ देखल जत्थी या जत्थिन
व० व०—ओकनी देखल जतइ	उ सब देखल जत्थी या जत्थिन

'अल' से अन्त होने वाली क्रियार्थक सज्ञा को, 'अल' से अन्त होने वाले भूतकालिक कृदन्त से भिन्न जानना चाहिये, क्योंकि 'अल' प्रत्ययान्त क्रियार्थक संज्ञा, अनियमित क्रियाओ

में भी कभी-कभी पूर्ण नियमित रहती है। परन्तु 'जाब' प्रत्ययान्त भूतकालिक कृदन्त सर्वदा अनियमित रहते हैं। यथा— 'आएब' की क्रियार्थक संज्ञा का रूप 'आयब' या 'आवब' है। परन्तु भूतकालिक कृदन्त में 'आएँब' का रूप 'गेल' होता है। अन्य अनियमित क्रियाओं में—यथा 'करब' में—क्रियार्थक संज्ञा, भूतकालिक कृदन्त की तरह नियमित और अनियमित दोनों होती है। यथा—कइल या करल। यह भूतकालिक कृदन्त के समान है। अत: 'आएँब' के कर्मवाच्य का रूप 'आयल आयब' या 'आवल आएँब' है। यथा—आयल था है। इसी प्रकार 'ऊ कइल गेलइ' या 'करल गेलइ' होगा।

क्रियार्थक संज्ञा (धातु के समान रहने वाली क्रियार्थक संज्ञा[1]) में 'पड़ब' सहायक क्रिया जोड़ कर कर्मवाच्य क्रिया के रूप बनते हैं। यथा—

तनी-तनी देख पड़S हइ।
ए करा से ई सूझ पड़Sहइ।
गंगा कुण्डो तमद्दत न आम पड़Sहइ।

संयुक्त कर्मवाच्य

अधिकरण कारक में व्यवहृत क्रियार्थक संज्ञा (धातु के समान रहने वाली क्रियार्थक संज्ञा का विकारी रूप २) के आगे √आ धातु के रूप जोड़ कर कर्मवाच्य क्रिया बनती है। यथा—हम देखे में आएँब (मैं देखने में आऊँगा अर्थात् मैं देखा जाऊँगा)। यदि कार्य का कर्त्ता उपस्थित हो तो वह संज्ञा या सर्वनाम के संबंधकारक के विकारी रूप में रखा जाता है। यथा—तों हमरा देखे में ऐला (आप मुझसे देखे गये)। यहाँ कार्य का कर्त्ता संबंध कारक के विकारी रूप (हमरा) में है।

निश्चयार्थ भूतकाल में कर्मवाच्य क्रिया के निम्नलिखित उदाहरण हैं—

निश्चयार्थ

भूतकाल

	कर्म	भाव
प पु —ए व	—हम तोरा देखे में पेलुक	हम तोहरा देखे में पेखियो
ब व०	—हमनी तोरा देखे में पेलुक	हमनी तोहरा देखे में पेखियो
म पु —ए व	—तों हमरा देखे में ऐलें	तों हमरा देख में पेखS
ब व	—तोहनी हमरा देखे में ऐलें	तोहनी हमरा देख में पेखS
अ पु —ए व	—उ हमरा देखे में आयल	उ हमरा देखे में पेखल
ब व०	—ओकनी हमरा देखे में आयल	उ सब हमरा देखे में पेखल

1. देखिये क्रियार्थक संज्ञा—पृ ४२
2. देखिये—क्रियार्थक संज्ञा—पृ ४२

प्रेरणार्थक क्रिया[1] (Causative)

प्रेरणार्थक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं—प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाएँ और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाएं। प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओं की रचना साधारण क्रिया के धातु मे 'आव' तथा 'आय' प्रत्यय जोड कर की जाती है एव द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियाओं की रचना 'वाव' तथा 'वाय' प्रत्यय जोड़ कर। इस प्रकार निर्मित प्रातिपदिकों के क्रिया-रूप आकारान्त धातु वाली क्रियाओं के रूपों की तरह चलते हैं। यथा—

धातु	प्रथम प्रेरणा०	द्वितीय प्रेरणा०
√उठ्	उठाव	उठवाव
	उठाय	उठवाय
√खा	खिलाव	खिलवाव
	खिलाय	खिलवाय

'आव' या 'आय' का और वाव' या 'वाय' का दीर्घस्वर उपान्त के पूर्व मे ह्रस्व हो जाता है और 'व' एव 'य' के बाद यदि उदासीन स्वर (Neutral vowel) आता है, तो वे क्रमश 'उ' तथा इ' हो जाते हैं, जिन्हें उनके पूर्ववर्ती व्यजन के 'अ' स्वरान्त होने पर क्रमश 'औ' एव 'ऐ' लिखा जा सकता है।

यथा—√ उठ् धातु मे आव तथा वाव प्रत्यय जोड़ने पर निश्चयार्थ वर्तमान काल मे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया का नियमित रूप 'उठावैत छ्रीं' होगा एव द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया का उठवावैत छ्रीं। भूतकाल मे ये दोनो क्रमश उठवली' तथा उठववला होगे। 'व' के बाद उदासीन स्वर आने के कारण, इनका रूप क्रमश. उठउली तथा उठवउलो हो जायेगा। चूंकि 'उ' के पूर्ववर्ती व्यजन 'ठ' तथा 'व' अस्वरान्त हैं, इसलिए इनका रूप क्रमश 'उठौली' (उठ्+औली) एव उठवौला (उठव + औली) हो जाएगा।[2]

इसी प्रकार उपर्युक्त धातु मे 'आय' और 'वाय' प्रत्यय लगाने पर निश्चयार्थ वर्तमानकाल के रूप उठायैत छी और उठवायैत छी होंगे और भूतकाल मे उठइला या उठैलो एव उठवइलो या उठवैला होंगे।

---

१ "जिस क्रिया के व्यापार में कर्त्ता पर किसी की प्रेरणा समझी जाती है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।" व्या० मर्य०—सु० वि०
"जो कर्त्ता दूसरे पर प्रेरणा करता है, उसे प्रेरक कर्त्ता और जिस पर प्रेरणा की जाती है, उसे प्रेरित कर्त्ता कहते हैं।"
सं० हि० व्या०—का० गु०

२ देखिये स्वरों का ह्रस्वीकरण, स्वर संकोचन तथा हलन्त य् और व् के नियम।

प्रथम प्रेरणार्थक एवं द्वितीय प्रेरणार्थक के उदाहरण निम्नांकित हैं। व वाले रूप ही प्रचलित हैं इसलिए इन्हीं रूपों के उदाहरण दिये जा रहे हैं। 'य' वाले रूप अन्तिम 'व' की जगह 'य' लगा कर बन सकते हैं—

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
√उठ्	उठाव	उठंवाव
√छिप्	छिपाव	छिपंवाव
√लुक्	लुकाव	लुकवाव
√पक्	पकाव	पकवाव
√मिल्	मिलाव	मिलंवाव
√सुन्	सुनाव	सुनवाव
√कढ़्	कढ़ाव	कढ़वाव
√पुर	पुराव	पुरवाव

यदि धातु में दीर्घस्वर होता है तो प्रेरणार्थक क्रिया बनने पर उसका ह्रस्वीकरण हो जाता है। यथा—आ > अ ई > इ ऊ > उ ए > ऍ ओ > ओ॑ ऐ > ऐ॑ तथा औ का औ॑ हो जाता है। इसी प्रकार यदि धातु के अन्त में दो व्यंजन हों तो एक ही रह जाता है। यथा—

धातु	प्र. प्रेरणार्थक	द्वि. प्रेरणार्थक
√जाग	जगाव	जगंवाव
√झील	झिलाव	झिलंवाव
√सीख	सिखाव	सिखंवाव
√पी	पिआव	पिअंवाव
√सीँख	सिँखाव	सिँखंवाव
√घूम	घुमाव	घुमंवाव
√सूत	सुताव	सुतवाव
√चूस	चुसाव	चुसंवाव
√देख	दॅखाव	दॅखंवाव
√पैर	पै॑राव	पैरवाव
√बैठ	बै॑ठाव	बैठंवाव
√दौड़	दौ॑ड़ाव	दौड़ंवाव
√छूट	छुटाव	छुटंवाव

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया में कुछ क्रियाओं के रूप निम्नांकित होते हैं—

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक
√कह्	कहंवाव
√खा	खिआव
√पी	पिआव
√देख्	देखंवाव
√सीख्	सिखंवाव

एकशब्दांश वाले (Monosyllabic) धातुओ से बनी कुछ अकर्मक क्रियाओ मे यदि ह्रस्व स्वर हो, तो उसे दीर्घ कर प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनायी जाती हैं। द्वितीय प्रेरणार्थक का रूप स्वाभाविक ढग से ही बनता है। यथा—

धातु	प्रथम प्रेरणार्थक
√कट्	काट
√बंध्	बाँध[1]
√लद्	लाद
√खिंच्	खींच[1]

कभी-कभी प्रथम प्रेरणार्थक क्रियाओ को बनाने के क्रम मे मूल धातु मे स्थित ह्रस्व स्वर का निम्नांकित रूपो मे दीर्घीकरण होता है—

खुल्	खोल (खोलना)
घुल्	घोल (घोलना)

उपर्युक्त नियम के सादृश्य पर ही, √निकस् या √निकल् क्रिया का प्रेरणार्थक निकास या निकाल होता है। इसी भाँति √पसर् का पसार और √ससर् का ससार, √उपर्[2] का उपार और √उखर् का उखार होता है।

निम्नांकित अनियमित रूप हैं—

धातु	प्र० प्रेरणार्थक	द्वि० प्रेरणार्थक
√अड़् (रुकना)	आड़	अड़ाव
√फट्	फाड़	फड़ाव
√छुट्	छोड़ या छाड़	छोँड़ाव
√जुट्	जोड़	जोँड़ाव
√टुट्	तोड़ या तोर	तोँड़ाव या तोँराव
√फुट्	फोड़	फोँड़ाव
√बिक्	बेँच	बेँचाव
√रह्	राख	रखाव
√भींग्	भिँगो	भिँगवाव
√डूब्	डुबो	डुबवाव

---

१ जब स्वर दीर्घ हो जाता हैं, तब अनुस्वार बदल कर अनुनासिक हो जाता है।

२, जड़ छोड़ना (be rooted up)

संयुक्त क्रिया[1]

मगही में संयुक्त क्रिया के निम्नलिखित भेद होते हैं :—

१	विशदता बोधक	(Intensives)
२	सक्यता बोधक	(Potentials)
३	समाप्ति	(Completives)
४	बहुधा	(Frequentatives)
५	इच्छा	(Desideratives)
६	निरन्तरता	(Continuatives)
७	नित्यता	(Staticals)
८	प्रारंभिकता	(Inceptives)
९	अनुमति या अनुमोदन	(Permissives)
१०	सामर्थ्य बोधक	(Acquisitives)

रूप के अनुसार संयुक्त क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं —

१ क्रियार्थक संज्ञा के मेलसे बनी हुई यथा—देखे पड़लइ।

२ कृदन्तों के मेल से बनी हुई, यथा—ऊ बइठल बा हइ।

क्रियार्थक संज्ञा के मेल से बनी हुई संयुक्त क्रियाएँ निम्नांकित हैं—

१	विशदता बोधक	५.	इच्छाबोधक
२	सक्यता ,,	६	प्रारंभिकता बोधक
३	समाप्ति	७	अनुमति या अनुमोदन बोधक
४	बहुधा	८	सामर्थ्य बोधक

कृदन्तों से बनी हुई संयुक्त क्रियाएँ दो हैं—

१ निरन्तरता बोधक २ नित्यता बोधक।

१ क्रियार्थक संज्ञा के मेल से बनी हुई संयुक्त क्रियाएँ

क्रियार्थक संज्ञा के मेल से बना हुई संयुक्त क्रिया में क्रियार्थक संज्ञा तीन रूपों में व्यवहृत होती है—

१ साधारण रूप में यह हलन्तयुक्त होती है विकारी रूप में एँकारान्त हो जाती है। यथा—साधारण—देखू[1] विकारी—देखे।

२ साधारण रूप में यह अल प्रत्ययान्त होती है विकारी रूप में इसमें 'अला' प्रत्यय लगता है। यथा—साधारण—देखल् विकारी—देखला।

---

१ कुछ विशेष कृदन्तों के साथ विशेष अर्थ में कुछ सहायक क्रियाएँ जोड़ने से जो क्रियाएँ बनती हैं उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं।

सं कि व्या०—का गु

१ क्रियार्थक संज्ञा का प्रथम रूप धातु के समान रहता है।

३ साधारण रूप मे यह 'अब' प्रत्ययान्त होती है। यथा—'देखब्' इसका विकारी रूप प्रचलित नहीं है।

क्रियार्थक सज्ञा के प्रथम या द्वितीय प्रकार के साधारण रूप से अथवा प्रथम प्रकार के विकारी रूप से सयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

क्रियार्थक सज्ञा के प्रथम प्रकार के साधारण रूप मे तीन प्रकार की सयुक्त क्रियाएँ बनती हैं—(१) विशदता बोधक (२) शक्यता बोधक और (३) समाप्ति बोधक। द्वितीय प्रकार के साधारण रूप से बहुधा बोधक और इच्छा बोधक सयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। प्रथम प्रकार के विकारी रूप से प्रारम्भिकता बोधक, अनुमति बोधक और सामर्थ्य बोधक सयुक्त क्रियाएँ बनती हैं।

विशदता बोधक सयुक्त क्रिया मे, प्रथम क्रियापद की विशेषता प्रकट होती है। विशदता बोधक सयुक्त क्रियाएँ, क्रियार्थक सज्ञा के प्रथम प्रकार के साधारण रूप मे कुछ विशेष क्रियाएं जोडकर बनती हैं। जुडी हुई क्रियाओं के ही रूप चलते हैं, क्रियार्थक सज्ञा के नहीं। जुडी हुई क्रियाएँ अलग महत्व नही रखती। ये अपने पूर्व स्थित क्रियार्थक सज्ञा के अर्थ की विशेषता बतलाती हैं। यथा—

क्रिया	विश० बो० सयुक्त क्रिया
फेंकब	फेंक[1] देब[2]
तोरब	तोर डालब
बनब	बन आऍब
खाऍब	खा जाऍब
बोलब	बोल उठब
काटब	काट लेब
राखब	राख लेब

विशदता बोधक सयुक्त क्रियाओं मे निम्नलिखित सहायक क्रियाएं आती हैं—देब, डालब, आऍब, जाऍब, पड़ब, उठब और लेब। सकर्मक क्रिया के कर्मवाच्य का रूप बनाने के लिए भी विशदता बोधक सयुक्त क्रिया मे 'पड़ब' जोडा जाता है।

किसी क्रिया की क्रियार्थक सज्ञा के प्रथम प्रकार के साधारण रूप मे 'सकब' क्रिया जोड कर शक्यता बो० स० क्रि० बनायी जाती है। इसमे भी जुडी हुई क्रिया 'सकब' का ही रूप चलता है। यथा—

बोल सकब।

उ जा सकऽ हइ।

हम आ सकबो।

तूँ सब देख सकऽ हलऽ।

उ काम न कर सकऽ हलथिन।

---

१. 'फेंक' क्रियार्थक संज्ञा के प्रथम प्रकार का साधारण रूप है।

२ 'देब' जुडी हुई क्रिया है, जो 'फेंक' की विशेषता बतलाती है। 'देब' का ही रूप चलता है, 'फेंक' का नहीं। विशदताबोधक सं० क्रि० के सभी उदाहरणों की यही विशेषता है।

किसी क्रिया की क्रियार्थक संज्ञा के प्रथम प्रकार के साधारण रूप में 'चुकब' क्रिया के रूप जोड़ कर समाप्ति बो० सं० क्रि० बनायी जाती है। इसमें भी सहायक क्रिया 'चुकब' का ही रूप बदलता है। यथा—

हम गा चुकली।
तूँ खा चुकलऽ।
ऊ तो भा चुकल है।
सजनी ऊ बा चुकी। आदि

किसी क्रिया के क्रियार्थक संज्ञा के द्वितीय प्रकार के साधारण रूप में 'करब' क्रिया के रूप जोड़ कर बहुधा बो० सं० क्रिया बनायी जाती है। 'करब' का रूप सभी कालों में बदलता है। यथा—

आयल करऽ।
ऊ आयल करे है।
तूँ पोथी पढ़ल करऽ हऽ।
हम तोहर बात मानल करऽ ही।
तो" काहे पेसन कहल करऽ हऽ।
हम आयल करब।

बहुधाबोधक सं० क्रिया की ही तरह 'कल्' प्रत्ययान्त क्रियार्थक संज्ञा के साधारण रूप में 'चाहब' क्रिया के रूप जोड़ कर इच्छाबोधक सं० क्रिया बनायी जाती है। इसमें प्रथम पद से कार्य करने की इच्छा की अभिव्यक्ति होती है, जोड़ी हुई क्रिया से निकट भविष्यता की सूचना मिलती है। यथा—

ऊ आयल चाहे है।
हम आयल चाहऽ ही।
तूँ मरल चाहऽ हऽ?

कभी-कभी प्रधान क्रिया क्रियार्थक संज्ञा के प्रथम प्रकार के विकारी रूप में रहती है। इसमें प्रायः सम्प्रदान कारक का चिह्न 'के या ला' जुड़ जाता है। अनेक बार यह चिह्न नहीं भी जुड़ता है। यथा—

बाबा जाये चाहऽ है।
हम बोले के चाहऽ ही।
ऊ आये चाहे है।
हम आये ला चाहऽ ही।

इच्छा बोधक सं० क्रिया 'चाही' क्रिया जुड़ने पर मुहावरे के रूप में कृतज्ञता या कर्तव्य भावना की अभिव्यक्ति करती है। यथा—

ई पोथी पढ़ल चाहो।
तोहरा ऊ ठमों आयल चाही।
काम बिगाड़ल न चाही।

किसी क्रिया की क्रियार्थक सज्ञा के प्रथम प्रकार के विकारी रूप मे 'लागब' क्रिया के रूप जोड कर प्रारभिकता बो० स० क्रिया बनायी जाती है। इससे क्रियार्थक सज्ञा के कार्यारभ की सूचना मिलती है। यथा—

बोले लागल।
जाये लगलइ।
उ गीत गावे लगलइ।

किसी क्रिया की क्रियार्थक सज्ञा के प्रथम प्रकार के विकारी रूप मे 'देब' क्रिया के रूप जोड कर अनुमति या अनुमोदन बो० स० क्रिया बनायी जाती है। इससे क्रियार्थक सज्ञा के कार्य की सूचना मिलती है। यथा—

हमरा घर जाये दऽ।
उ ओकरा बोले न देतइ।
हम तोहरा आवे देबो।
तूँ ओकरा खाये देलहु।

अनुमतिबोधक स० क्रिया की तरह ही, सामर्थ्यबोधक स० क्रिया बनायी जाती है। इसमे 'पायब' क्रिया के रूप जोडे जाते हैं। यथा—

तूँ हुँआँ जाये न पइबऽ।
हम बैठे न पौली।
तूँ गावे न पौलऽ।

२. कृदन्तों के मेल से बनी हुई संयुक्त क्रियाएँ

किसी क्रिया के वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ 'रहब' या 'जाएब' क्रिया के रूप जोड कर, निरन्तरता बो० स० क्रिया बनायी जाती है। वर्तमानकालिक कृदन्त कभी साधारण रूप मे रहता है और कभी विकारी रूप मे।

'जाएब' के मेल से बनी संयुक्त क्रिया प्रगति की सूचना देती है और 'रहब' के मेल से बनी हुई सयुक्त क्रिया किसी कार्य की निरन्तरता की सूचना देती है। यथा—

ऊ लिखइत जा हलइ।
ऊ लिखते जा हलइ।
सब लइकन पोथी पढइत (या पढते) जा हलथीन।
पानी बहते जा हइ।
हम गाते रहऽ ही।
हम सब हँसइत (या हँसते) रहऽ ही।
ब जल पानी बहइत (बहते) रहऽ हइ।

वर्तमानकालिक कृदन्त की तरह भूतकालिक कृदन्त भी पहले रखा जाता है। गमन-निर्देशक (Verb of Motion) क्रियापद उसके बाद रखा जाता है। यथा—

ऊ बच्चा पीड़ा से पडल फिरऽ हलइ।

निषेधात्मक विधि—जिन, जनु, जिनि, जनि, मति, मतू, मत, न, नहीं, नईं, ने।

संयुक्त क्रिया विशेषण के निम्नांकित उदाहरण हैं—

घरी-घरी[1], घटे-घटे, घरे-घर, बीचो-बीच या बीचे-बीच, घर-हाट, गल्ली-दरगल्ली, दिन्ने-रात[2], अस्ते-अस्ते। नीक-नीक, नीमन-नीमन[3], उरेहल-उरेहल[4] कैल कैल[5], वेस-वेस, वैठल-वैठल, जेन्ने-तेन्ने, काल्ह-परसूँ, निचे उप्पर, एके संगे, वेर-वेर, फेरा फारी फेरी-फेरी, बहुत-करके आदि।

शब्दो पर जोर देने के लिये, उनमे कुछ प्रत्यय जोडे जाते हैं। यथा—इ ईं, ही, हीं। इनके जोडने से, 'वास्तव में' भाव की व्यजना होती है। यथा—हमहीं तूँहीं, ओही, हमहीं ऐली है = मैं ही आया हूँ।

शब्दो पर जोर देने के लिये 'भी' वाचक प्रत्यय जोडे जाते हैं। यथा—ऊ या ऊँ, ओ या ओं हू या हूँ। उदा०—हमहूँ (हम भी) हमरो (मुझे भी) तुहूँ (तुम भी)।

२ सम्बन्धसूचक (Preposition)

तरे[6], ले[7] माँक[8], बारे, परे बदे[9], ले, लै[10], लाग, लागी[11] खातिर[12], नाईं[13], नियर[14], सन[15], ऐसन[16]।

३ समुच्चयबोधक (Conjunction)

आ, ओ, औ, अउ अउर, आउर, आओर[17], बाकि[18], बरुक, पर, पै[19], बलुक[20], की या कि[21], चाहे[22], जौं[23], तौं, तें[24]।

४ विस्मयादि बोधक (Interjection)

विभिन्न जिलो मे विस्मयादि बोधक अव्यय मे अन्तर होते हैं। पुरुष और नारी की व्यजनाएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं—

पुरुष के सबोधन—रे, अरे, ए, हे, हो, अहो, अजी।

स्त्री के सबोधन—गे, अगे, अहे।

हर्षसूचक—ओहो, आह, वाह, आहा।

विषाद सूचक—आह, ऊह, बाप रे, बप्पा रे, दइया गे, मइया गे, हाय राम, हाय, दादा हो आदि।

आश्चर्य सूचक—वाह, ओहो, अरे, खूबे[25], बाप रे।

तिरस्कार सूचक—हट, अरे, छिपा, दूर।

स्वीकृति सूचक—हाँ, ओय (हाँ), वेस (अच्छा), नीक।

---

१ घड़ी-घड़ी। २ दिन-रात। ३ अच्छा-अच्छा। ४ सुन्दर-सुन्दर। ५ गोरा-गोरा (गौर वर्ण)। ६ नीचे, ७ तक। ८ बीच। ९ के लिये या बारे में। १० लिये। ११ लिये। १२. उसकी वजह से। १३ तरह। १४ तरह, समान। १५ तरह। १६ तरह। १७ और। १८ लेकिन। १९ लेकिन। २० बल्कि। २१ कि। २२ अथवा। २३. जो। २४ तब। २५ खूब ही।

पूर्वी मगही मे व्यवहृत सम्वन्ध कारक के कुछ विशिष्ट—प्रत्यय निम्नाकित हैं—

१. एर —यह नियमित वगला-विभक्ति है। यथा—लकेर[1] (एर)।

२. ए-कर—यह केवल भगमानेकर[2] मे होता है।

३. कर —यह विहारी प्रत्यय है। यथा—दौलत कर[3]।

४ केर —यह भी विहारी- विभक्ति है। यथा—मुलुक-केर[4], शुअर-केर[5], मिठाइ-केर[6]।

५ ऍक—यह सवसे साधारण प्रत्यय है। यह विहारी 'अक' का विकृत रूप है। यथा—धनिन-ऍक[7], बाप ऍक[8], भगवान-ऍक[9], मुनिश-ऍक[10]। यदि किसी सज्ञा का अन्त आ या इ से हो, तो वहाँ अपवाद मानना चाहिये। यथा—वेटा-क[11], ना-ह-ऍक[12] घडि ट-एक[13]। 'ना' के लिये 'ला' का व्यवहार द्रष्टव्य है।

इस वोली मे करण कारक एव अधिकरण कारक का रूप 'ए' जोडकर वनता है। यथा—बादे[14], घारे[15], हॉथे[16], दकाने[17], भूखे[18]।

सज्ञा के रूपो मे एकवचन अथवा वहुवचन का भेद नही मिलता, किन्तु मनुष्य के लिये वहुवचन मे गुला प्रत्यय जुडता है। इस प्रकार 'मुनिश गुला-के[19] बाबु-गुला-क[20]।

सर्वनाम

पूर्वी मगही में सर्वनाम के निम्नलिखित रूप देखे जा सकते हैं—

उत्तम पुरुष—मॅय[21], म-के[22], मर[23], लेकिन 'हामर पाश'[24], हामरा[25], हामरा-के[26], हामरा-कर[27]।

मध्यम पुरुष—तॅय[28], तर[29], लेकिन तहरे या तरे एसन[30]।

अन्य पुरुष —ऊ[31], अ-के[32], अकरा-के[33], अकर, अकरा[34]। तेॅय से[35] ता-खे[36], ता कर[37]। तारे[38] (हॅटे=इस कारण), इसी प्रकार ऍकरे[39] (हॅटे=इस कारण), तारा-देर[40]।

---

१ आदमी का। २ ईश्वर का। ३ धन का। ४ देश का। ५ सुअर का। ६ मिठाई का। ७ धनी का। ८ पिता का। ९ भगवान का। १० नौकर का। ११ पुत्र का। १२ नाव का। १३ घडी का। १४ पीछे। १५ घर में। १६ हाथ पर। १७ दूकान में। १८ भूख से। १९ सेवकों को। २० बाबुओं का। २१ मैं। २२ मुझको। २३ मेरा। २४ मेरे निकट। २५ हमलोग। २६ हम सब को। २७ हम सब का। २८ तूँ। २९ तेरा। ३० तेरे समान। ३१ वह। ३२ उसको। ३३ उन सब को। ३४ उसका। ३५ वह। ३६. उसको। ३७ उसका। ३८. उसका। ३९ इसका। ...

निश्चयवाचक

अपूर्ण वर्तमान काल

खावाइस-आहे—वह खिला रहा है।

अपूर्ण भूतकाल

वेचें-हेलओँ—मैं वेच रहा था।

अभ्यासमूचक भूतकालिक क्रिया
(Habitual past)

पाओंटाक—वह या वे पाया करते थे। पारटाक—वह या वे इसे कर सकते थे।

भविष्यत्काल

पायम—मैं पाऊँगा। कहम—मैं कहूँगा। केंरवेंइ—हमलोग करेंगे।

देंवेंइ—हमलोग देंगे।

भूतकाल

उत्तम पुरुष—इसके तीन रूप हैं। यथा—

(अ) पाओंलओँ—मैंने पाया, केंहलओं—मैंने कहा, खुजलओं—मैंने मांगा, देंखलओँ—मैंने देखा, लागलओं—मैंने आरम किया, टेंकलओं—मैंने वाधा दिया।

(आ) पाओलेंइ—मैंने पाया, देंलेंइ—मैंने दिया।

(इ) अटाओंलाहन मैं पहुँचा, शुधाओंलाहन—मैंने खोजा।

मध्यम पुरुष—इसका केवल एक ही रूप मिलता है—

लागाओंले—तूने आरभ किया।

अन्य पुरुष—इसका वस्तुत 'आक्' प्रत्यय से अन्त होता है।

यथा—केंहलाक—उसने कहा, देलाक—उसने दिया, गुचाओंलाक—उसने खोया, सिराओलांक—उसने समाप्त किया, रहलाक—वह ठहरा, केंरलाक—उसने वनाया। पाओंलाक—उसने पाया, खाओंलाक—उसने खाया, वाँचलाक—वह वचा, लागलाक—उन्होने आरम किया, शुधालाक—उन्होंने खोजा, वुमाओंलाक—उसने प्रार्थना की, उड़ाओंलाक—उसने नष्ट किया।

इस वोली की अकर्मक क्रिया मे, कभी-कभी विहारीपद्धति पर सभी प्रत्ययों को हटाने की प्रवृत्ति देखी जाती है। यथा—गेल—वह गया।

कभी कभी शुद्ध वगाली रूप भी ग्रहीत होता है, यथा—केंहलेंक—उसने कहा। कहलेँन—उन्होंने कहा।

संबंध वाचक तथा नित्यसंबंधी सर्वनाम पे और से हैं।

विशेषण बोधक सर्वनाम मड़े[1] सड़[2] इड़े[3] केम[4] और कड़[5] हैं।

क्रिया

इस बोली में एकवचन और बहुवचन के क्रिया-रूप समान ही हैं।

सहायक क्रिया तथा कृदन्त

वर्तमान काल—माड़[6] माहिस[7] माहे माहेक[8]।

सहायक क्रिया के रूप में—मा(ह)हाक[9] नहेंस नेसत[10]। हेंक हेंकेक हेंसेक[11]।

भूतकाल—(१) हेंकमों = मैं था।

(२) हेंस हेंसेंक = वह था।

ये रूप भी हैं—(१) रहूँ = मैं था।

(२) रहे रेहेंक = वह था।

अन्य क्रिया-रूप निम्नलिखित हैं—

हेंकें = होकर।

हेंसाइ, हेंसि = होने पर।

बाहूचे केरिस = तू स्थित है।

सामान्य वर्तमानकाल—

उत्तम पुरुष—लागओं[12] लाटइ[13]।

मध्यम पुरुष—केरिस[14]

आज्ञार्थ

उत्तम पुरुष—बालें[15]।

मध्यम पुरुष—दे[16] आदर सूचक—रालें[17]।

अनादर सूचक—पिनधाओं हाक[18] देंहाक[19]।

---

१ यह। २ वह। ३ यह। ४ कोई आदमी। ५ कोई भी वस्तु। ६ मैं हूँ। ७ तू है। ८ वह है। ९ नहीं है। १० नहीं है। ११ वह होता है पर कहा जाता है। १२ मैं होता हूँ। १३ मैं कर रहा हूँ। १४ तू करता है। १५ हम लोग करें। १६ तू दे। १७ रहो। १८ करना। १९ दे।

निश्चयवाचक

अपूर्ण वर्तमान काल

खावाइस-आहे—वह खिला रहा है ।

अपूर्ण भूतकाल

वेचें-हेलओं—मैं वेच रहा था ।

अभ्याससूचक भूतकालिक क्रिया

(Habitual past)

पाओंटाक—वह या वे पाया करते थे । पारटाक—वह या वे इसे कर सकते थे ।

भविष्यत्‌काल

पायम—मैं पाऊँगा । कहम—मैं कहूँगा । केरवें इ—हमलोग करेंगे ।

देवें इ—हमलोग देंगे ।

भूतकाल

उत्तम पुरुष—इसके तीन रूप हैं । यथा—

(अ) पाओंलओं—मैंने पाया, केंहलओं—मैंने कहा, खुजलओं—मैंने माँगा, देंखलओं—मैंने देखा, लागलओं—मैंने आरभ किया, टेंकलओं—मैंने वाधा दिया ।

(आ) पाओलें इ—मैंने पाया, देंलें इ—मैंने दिया ।

(इ) अटाओंलाहन मैं पहुँचा, शुधाओंलाहन—मैंने खोजा ।

मध्यम पुरुष—इसका केवल एक ही रूप मिलता है—

लागाओंलें—तूने आरभ किया ।

अन्य पुरुष—इसका वस्तुत 'आक्' प्रत्यय से अन्त होता है ।

यथा—केंहलाक—उसने कहा, देलाक—उसने दिया, गुचाओंलाक—उसने खोया, सिराओलांक—उसने समाप्त किया, रहलाक—वह ठहरा, केंरलाक—उसने वनाया । पाओंलाक—उसने पाया, खाओंलाक—उसने खाया, बाँचलाक—वह वचा, लागलाक—उन्होने आरभ किया, शुधालाक—उन्होंने खोजा, बुझाओंलाक—उसने प्रार्थना की, उड़ाओंलाक—उसने नष्ट किया ।

इस वोली की अकर्मक क्रिया मे, कभी-कभी विहारीपद्धति पर सभी प्रत्ययो को हटाने की प्रवृत्ति देखी जाती है । यथा—गेल—वह गया ।

कभी कभी शुद्ध वगाली रूप भी ग्रहीत होता है, यथा—केंहलेंक—उसने कहा । कहलें न—उन्होंने कहा ।

पूर्ण वर्तमान काल (या आसन्नभूतकाल)

इसकी रचना भी बिहारी पद्धति पर होती है—

(अ) सकर्मक क्रिया

उत्तम पुरुष—कें रले आहूँ —मैंने किया है।

काटले-अहूँ—मैंने आज्ञा भंग की है।

मध्यम पुरुष—दें ले आहिस—तुमने किया है।

अन्य पुरुष—ठानले-आहे—उसने विचारा है।

आमले आहे—वह लाया है।

पाआले-पेहोक—उसने पाया है।

(आ) अकर्मक क्रिया

उत्तम पुरुष—मरक आहूँ—मैं मर गया हूँ।

मध्य पुरुष—आओंस आहें क—वह आया है।

गेस आहें क—वह गया है।

पूर्ण भूतकाल (Plu Perfect)

रासस रहे—वह नियुक्त हुआ अन्य रूप है—मरि-रहे या मरि रहें क—वह मर गया (बहुत दिन पूर्व)।

सहायक क्रिया के पूर्व अकर्मक क्रिया के भूतकालिक कृदन्त के अन्तिम स् का र् हो जाता है। इस प्रकार गेर् —(गेस के लिए) रहूँ—मैं गया था। गेर रहें —वह गया था।

संभावनार्थ भूतकाल

इस काल का निम्नांकित रूप होता है—

कें रें लेखिस—(उसे) उन्होंने बनाया होगा।

पूर्वकालिक कृदन्त (Conjunctivo participle)

शुद्ध बिहारी रूप में इसका प्रयोग होता है। यथा—

बाँटि के—बाँट कर। लें इ के —लेकर। आइ-के—आकर। केरि कें—बना कर। कें हि के—कहकर। इसी प्रकार अन्य उदाहरण भी हैं।

संयुक्त क्रिया का उदाहरण निम्नांकित है—

देइ दे लाक—उसने दिया। दौड़ि आई क—दौड़ कर।

समान्य-कृदन्तीय रूप

देलें इ—देने पर। हें खि—होने पर। अन्य रूप है—धूरेक बेरा—लौटने का समय। खाबार—खाने का।

मुहावरे

इसके निषेधार्थक रूप है—नें हि या निहि।

शक्यतावोधक (Potential) क्रिया

इसके निम्नांकित उदाहरण हैं—

सिरा भोले-पारलाक—वे समाप्त कर सकते थे।

प्रारंभिकतावाचक क्रिया

कें रें लागलाक—उन्होंने बनाना आरंभ किया।

द्वितीय खंड

शब्दकोश

मगही-शब्द-कोश

अ

अँकटा—(हि० अँकटी) महीन छोटी ककड़ी। गेहूँ, चना आदि अनाज मे मिलनेवाला घास की जाति का अनाज विशेष।

अँकड़ी—विना छाँटा हुआ अनाज। अँकड़ी चावल।

अँकुड़ा—(हि० अकुर) वीज का अकुर। भिगोये अनाज मे नया उगा हुआ अँखुआ।

अँकुरी—भिगोया हुआ चना। भिगोये चने की घुघनी।

अँकुसा—छोटा अकुश।

अँकुसी—लोहे की झुकी हुई कील, जो किसी पदार्थ के लटकाने तथा फँसाने के काम आती है।

अँखरा—निरैठा, पवित्र।

अँखिया—वीज का महीन अकुर।

अँखुआ—हि० अकुर।

अगरखा—चपकन। घुटने तक का अगा, जिसमे वाधने के लिये वद टके रहते हैं। (स० अगरक्ष्या)

अगा—कुरता। चपकन।

अगारी—दहकते कोयले का छोटा टुकड़ा।

अंगिया—चोली। कुरती।

अगेठी—आग रखने का पात्र, जो तापने के काम मे आता है।

अंगैठी—अग का ऐंठना। अगराई।

अगोछा—तौलिया। गमछा।

अँचरा—हि० आँचल।

अँचाना—भोजन के वाद कुल्ला करना।

अँचौनी—आचमनी।

अजोरिया—शुक्ल पक्ष।

अटी—तागे की गोली।

अटियाना—मटियाना।

अँटिया—छोटा गट्ठर, घास का छोटा पुलिंदा।

अँड़ास—कुएं के ऊपर का पटवट।

अधरिया—कृष्णपक्ष।

अकचकाना—स्तभित होना।

अकवार लेना—दो स्नेह-सम्बन्ध मे वधी महिला का गले-गले मिलना। आलिंगन करना।

अकटा—ऐसी घास जो पशुओ के खाने के काम मे आती है।

अकड़ी—एकड़ी। विना छाँटा हुआ अनाज।

अखरखन करना—अति करना। अतहतह करना।

अखैना—(हि० पाँचा) चार-पांच हाथ लम्बी लकड़ी, जो अनाज उलटने के काम आती है।

अखौता—(हि० खम्मा और लाठे के बीच की मेख) लाठा या ढेंकी के साथ घूमने वाला किल्ला।

अखौंधा—(अखैना) लकड़ी का वना उपकरण, जिससे भूसा और पोआल पलटा जाता है।

अगरा—(हि० अगौरा) वि०—अगरा लड़का। इतराने वाला लड़का।

अगराना—इतराना। ऊख का डटल, जिससे रस निकाला जा चुका हो।

अगराशन—भोजन का प्रथम-अश, जो देवो और पूज्यो के लिये निकाल दिया जाता है।

अगलगौनी—झगड़ा लगाने वाली।

अमानी—गनरा के भीतर लगाया जाने वाला लोहे का गोल औजार।

अमारी—(हि० गोबर की करसी) गोयठा का चूर।

अमोट—बनावट।

अमोला—आम का नया निकलता हुआ पौधा।

अमोरी—आम का टिकोला।

अरगनी—कपड़ा पसारने का बाँस आदि का बना हुआ टगना।

अरबस करना—अतफही करना।

अरपा—केड़ी, गिल्ली।

अरसेना—(हि० मनबहलाव) मन लगाने के लिये खाली समय में कोई काम करना।

अरऊआ—बैल को हँकाने के लिये गोल बाँस की एक सवा हाथ की लकड़ी।

अरार—नदी के किनारे का खड़ा हिस्सा।

अरुई—अरवी, पेपची।

अरुआयल—बासी खाद्यपदार्थ, जो खराब हो गया हो।

अलंग—ऊँची जमीन का घेरावा। जमीन का वह हिस्सा, जो आहर की बगल में ऊँची हो।

अलगना—बोझ उठना।

अलगनी—अरगनी।

अलगरजी—लापरवाह। धोबी, नाऊ, दरजी ई तीनू अलगरजी।

अलगल—ऊँचा उठा हुआ।

अलज—पीड। ऊँचा आर, जो पानी को रोकने के लिये दिया जाता है।

अलपजिया—कमजोर। रोगी।

अलान—ठठरी। लत्तर के चढ़ने के लिये सहारा देने वाला ठाट।

अलुआ—शकरकन्द, आलू।

अलोत—किसी वस्तु को ओट में रखना।

असगनी—(हि० अरगनी)। टगनी, जिसपर कपड़ा सुखाया जाता है।

असठी—(हि० नहा) मोरी (ओलती) के नीचे की ऊँची भूमि।

असगर—अकेला।

असमानतारा—जलाकर छोड़ने की एक चीज।

असाढ़ी—आषाढ़ में होने वाला।

असियार होना—तंग होना, खफा होना।

असेग—अधसेग।

अहरा—पानी रखने का गड्ढा।

अहिवात—सधवा। सौभाग्यवती।

अहोर-बहोर—दुलहिन का ससुराल से नैहर आना-जाना।

आ

आँकड़—पत्थर का छोटा कण, जो अन्न में मिला रहता है।

आँकुठ—कुट्टी काटने के लिये लकड़ी का आधार।

आँकुस—हि० अंकुश।

आँख—अंकुर। बीज वाले आलू में निकला हुआ अंकुर। बाँस की गाँठ पर आँख जैसा स्थान, जहाँ से अंकुर निकलता है।

आँखा—बैल लादने के लिये, उसकी पीठ पर रखा गद्दा।

आँचर—आँचल।

आँटी—नेवारी, पुआल का बंधा हुआ बंडल।

आँतर—(हि० हराई फाँदना) जितना एक बार में जोता जाय, खेत का उतना भाग (हि० अंतर)। दो पदार्थों के मध्य का स्थान।

आइल—मैदान का घेरा।

आकबत—प्रतिष्ठा।

आगाहाइम—मेहटा कुम्हड़िला । खेती करने वाले बैलों में नगुआ (बैल) ।

आचमनी—पूजा के लिये व्यवहृत एक छोटी कलछुल जैसी चमची ।

आन—पगधी ।

आन खाना—के खाना ।

आपा—अपनी वस्तु-वस्तु धर रखने के लिये एक छोटा घड़ा ।

आवा—कुम्हार की भट्ठी जिसमें बर्तन पकाया जाता है । 'आव के पेट कुम्हार के जाना है । कभी गोर निकले है कभी करिया ।

आमी—हि काठ की बत्ती ।

आमन—पहिया में रहने वाला मोटा कीड़ा ।

आर—लम्बा संकीर्ण गड्ढा ।

आरसी—(हि मछली मारने की चिक) । मछली का जाल ।

आरी—खेत की मेंड़ ।

आश—खेत की आरी ।

आसो—१ (हि खेती) पूरी फसल पकने के पहले ही खाने के लिये किसान द्वारा काटा गया अनाज का कुछ भाग ।
२ (हि अपरामान) खेत की पहली उपज जिसे देवता या ब्राह्मण को भेंट दिया जाता है ।

आहर—पानी रखने का जलाशय ।

आहिम—पानी मिलाकर सानी हुई मिट्टी ।

इ

इंगरौटा—सिन्दूरदानी ।

इंगुर—सिन्दूर ।

इगोरा—आग का अंगार ।

इंजोर—उजाला ।

इकसना—निकलना ।

इठौना—खेती में मिट्टी उठाने के लिये लोहे की टुकड़ी ।

इनरा—कुंआ ।

इनारा—कुंआ ।

इमरती—एक मिठाई ।

इमलीघोंटाइ—विवाह के समय की एक रस्म ।

इरखा—मान । बात की चोट लगना ।

इलायचीदाना—एक मिठाई ।

इस्तिरी—धोबी का गर्म लोहा जिससे कपड़ा बनाया जाता है ।

उ

उचकस—उचटने वाला ।

उकिस विकिस—हि व्याकुल ।

उकिसम विकिसम—हि व्याकुल या परेशान ।

उखड़ी—ओखली ।

उसोखा—गुनी जिस पर काठा या देवी चढ़ती है ।

उघेन—चुप किये हुये ।

उचकुन—चूल्हा पर बरतन रखने का ठिकरा या ऊंचा टुकड़ा ।

उचटस—उचाट ।

उजुमर करना—तंग करना ।

उजार—उजेड़ ।

उजागर—होनहार ।

उटकन—आग उकसने की छड़ ।

उठाह—(हि अव्यवहृत) मिट्टी का बर्तन प्रथम बार व्यवहार में लाना ।

उड़ाहना—साफ करना । कुंआ उड़ाहना ।

उतरल—अधिक पका हुआ ।

उदन्त—वह जानवर जिसे अभी दांत नहीं निकला हो ।

उदबासना—किसी के पीछे पड़ जाना ।

उदबासल—तंग किया हुआ ।

उमाह—गर्म पानी का भाफ शरीर पर लेने की क्रिया ।

उपरसम्म—भारी वर्षा के ऊपर से पानी गिरना ।

उपलैन—आरी अलंग के ऊपर से पानी गिरना।

उपराना—भरपूर हो के ऊपर आ जाना।

उपलाना—जल की सतह पर किसी चीज का छहलाना।

उपरौड़ा—घेरा, जो पूर्ण रूप से सुरक्षित नही है।

उपरपन दिन—उगेन दिन। बादल रहित दिन।

उप्पर करना—कै करना।

उपाइ—उपाय।

उबहन—मोटी रस्सी (सं० उद्वहन)

उबैत-डुबइत—उब-डूब करना।

उभताहा—हि० बौडाहा।

उभसना—अरुआना।

उभसाहा—किसी काम से नाक-भौं सिकोडनेवाला।

उमकना—उमग मे उछलना।

उम्मस—गरमी।

उल्टी—कै।

उलास—गाडी के उलार होने से रोकने के लिये पीछे लगी दो हाथ की लकडी।

उलार होना—गाडी का उलटना। गाडी का असतुलित होना।

उलारू या उलरूआ—गाडी के पीछे का ठेकुनी वांस।

उलावत—खपडी मे गर्म किया हुआ भीगा अनाज।

उलाँक—बढन्तु। चालाक।

उसकी—हि० छेडना।

उसकाहा—उसकाने वाला।

उसठाह—हि० रुसना। छेडखानी करना।

उसठ—शुष्क।

उसरा—हि० ओसारा।

उसिना या उसना—रींधा हुआ (पका हुआ) अन्न।

उसिनना—पानी मे देकर किसी चीज को सिझावा।

उसुक-पुसुक—हि० चचल।

ए

एकछिया—एक आंचवाला चूल्हा।

एकासी—एकादशी।

एकगोटिया—एक गोटीवाला।

एकचास—एक वार का जोता हुआ।

एक छपरा—एक ठाटवाला।

एकतुरी—एक वार।

एकपास—ढाह की एक तरफ मिट्टी देना।

एक फसिला—एक फसल मे उपजनेवाला।

एकबधिया—लगातार। एक ही वाघ मे। एक धागावाला।

एकरंगा—लाल रग।

एकसलिया—एक साल का।

एकहरा—एक तहवाला।

ऐ

ऐंठन—वांटने की ऐंठन। देह-दर्द।

ऐंठल—वाटा हुआ (रस्सी आदि)। ऐंठे स्वभाव का। ऐंठा हुआ।

ओ

ओका—मछली फसाने की जालदार थैली।

ओकना—कै करना।

ओखड़ी—ओखल।

ओगरवाही—रक्षा करने का काम।

ओझरायल—(हि० अरझुरायल।) उलझा हुआ।

ओझाइ—ओझा का कर्त्तृत्व दिखाना।

ओटना—एक ही वात को वार-वार मथना या कहना।

ओटनी रुई से वीज निकालने का यन्त्र।

ओटा—घर के वाहर का चबुतरा।

ओठगन—सहारा।

ओठगना—किसी के सहारे वैठना।

ओढ़िया
ओड़ी या
ओरिया } टोकरी।

ओत—छप्पर पर नया खर रखना।

ओत होना—सहारा होना।

कचकच—(हि० कच्चा) कच्चा। कलह।

कचरा—कूड़ा-करकट।

कचरस—ऊख का रस।

कचवचिया—एक पक्षी।

कचरी—एक प्रकार की पकौड़ी। फुरमी का सुखौता।

कचिया—छोटे दर्जे का।

कच्छा—लंगोट।

कचोटना—हृदय मे मलाल होना।

कछाड़ } —नदी का किनारा।
कछाड़ा }

कछुई—एक प्रकार की मिट्टी।

कजरी—काजर। फूल और पौधो को नष्ट करने वाला एक पौधा।

कजरौटा—काजर रखने का बर्तन।

कभरौटी— " " ।

कटनी—फसल काटने का कार्य।

कटामन—भयावना।

कटुआ—(हि० भूसा)।

कटुई—काटा हुआ।

कटैया—एक कीड़ा। एक फलदार कँटीला पौधा।

कठनहीं—काठ का ढोल।

कठुली—काठ का छोटा बर्तन।

कठौती—चावल धोने, रखने तथा माड़ पसाने का एक चौड़ा-गहरा बर्तन।

कढ़ुई—विवाह की एक प्रथा, जिसमे वर के घर जाकर ही कन्या का विवाह होता है।

कड़रू—हि०—(पड़वा) भैंस का बच्चा। काढ़ा।

कड़ा—हाथ का एक आभूषण।

कड़ी—छप्पर मे लगने वाली लकड़ी।

कतरइन—नदी की मोड़ के कटानवाला भाग।

कतरी—१. हाथ मे पहनने का एक भूषण, जिसे निम्न जाति की स्त्रियाँ पहनती हैं।
२ (हि० कोल्हू का पटरा) गाड़ी की धुरी मे पहिया के आगे लगने वाला गोल लोहे का चक्र।

कत्ता—बास काटने का औजार, जिसे डोम व्यवहार मे लाता है।

कत्ती—पाती, गोल छिटका।

कत्थ—कथ।

कदम—कदम्ब।

कदीमी—मौरूसी। वंशपरम्परागत।

कद्दूकस—कद्दू कसने का औजार।

कन—दाना।

कनतोड़—बास।

कनखी—किनारा। अपाग से संकेत करना।

कनझप्पा—टोपी।

कनटोप—टोपी।

कनफूल—कर्णफूल।

कनवइ—एक घास।

कनवह—पइन से पानी का रास्ता देना। आहर से अतिरिक्त जल को निकालने के लिये बनी छोटी नाली, जिससे बांध न टूटे।

कनवा—(हि० छटाँक) सेर का सोलहवाँ भाग।

कनसार—भड़भूजा का भूजा भूजने का घर।

कनसी—छोटी घंटी, जो ढोलक के साथ बजती है।

कनकन—हि० ठंढा।

कनना—रोना।

कन्नी—वृक्ष की छोटी शाखा।

कनेटा—(हि० पाखा) कोने की दीवार का ऊपरी हिस्सा।

कनेया—बहू।

कनर—खेत में पानी जमा करने के लिये बना गड्ढा जिससे पटाने का काम होता है।

कनौसी—कान की छोटी बाली।

कन्हा—कंधा।

कन्हेली—बैल पर लादने के पूर्व रखा जाने वाला गद्दा।

कन्होआ—(हि कान का खूट) कान की मैल।

कपसना—रोना।

कपटी प्याली। ढकनी।

कपार—ललाट।

कपूरी—कपूर मिश्रित।

कफनी—हुकनी।

कबरिया—पौधा उखाड़नेवाला मजदूर।

कबारना—उखाड़ना।

कबीला—औरत। एक दवा।

कम—थोड़ा।

कमची—बाँस की कटी पतली-लम्बी तीलियाँ।

कमरकस—ममराजु।

कमरी—कम्बल। चट्टान की पीली रेखाएँ।

कम्मर—कम्बल।

कमाइ—मेहनताना। मजदूरी।

कमानी—लोहे या बाँस की लम्बी-पतली सींक।

कमियाँ—(हि कमेरा) खेत में काम करने वाला मजदूर।

कमियाइनी—मजदूरिन।

कमीना—एक दवा। एक गाली।

कमैनी—मजदूरी।

करकट—लोहे की ऊँची-नीची चादर।

करही—(हि किनारा)।

करखा—कालिख।

करखाहि—एक पाखी।

करगह—करघा।

करजखोर—कर्ज लेने का अभ्यासी।

करजनी—एक पौधा जिसमें लाल और उजले दो प्रकार के फल लगते हैं।

करधनी—कमर का एक आभूषण।

करनी—राज मिस्त्री का एक औजार। कर्तब।

करमकल्ला—बंदा गोभी।

करम—भाग्य।

करहा—पानी के जाने का छोटा मार्ग।

करमा—एक पर्व।

करमी
करमियाँ } —एक लतर, जो पानी पर या उसके पास होता है। इसका साग भी बनाया जाता है।

करहनी—करधनी।

करार—वायदा। प्रतिज्ञा।

करारा—तीखा।

करीन करीग—पानी पटाने का एक लम्बा नुकीला यंत्र जो काठ के सहारे चलता है।

करुआरी
करुआर } —हल के फल को खोदने का लोहे का औजार।

कलछमा—पीड़ा से तड़पना।

कलसी—पानी का घड़ा। फुनगी। पौधे की नयी शाखा।

कलछी—छोटा कलछुल।

कलप
कलफ } —पके हुए चावल या मदा की पतली लेई जो कपड़ों में कड़ापन लाने के लिये लगाई जाती है।

कलमी—कलम लगा कर उगाया हुआ।

कलसा—मिट्टी का घड़ा।

कलौंजा—हि कलेजा।

कलतरी—कतरी।

कलजमा—ऐसा बैराज जिसमें ईंट बड़ा करके कलमकल बना दिया जावे।

कसनी—दवाव ।
कसर—त्रुटि ।
कसकना—हृदय फटना ।
कसैला—एक प्रकार का रस। पटना मे एक प्रकार का चारा ।
कसली—सुपारी ।
कहलाम—कथन । कहावत ।

का

कॉकर—पत्थर ।
कॉंच—शीशा ।
कॉटा—सिर मे वाल वावने के लिये खोसने का उपकरण । कुँए मे पडे पात्रो को निकालने के लिये लोहे की मुडी कीलो का गुच्छा। लोहे की तराजू। कटक। नोकदार अँकुडी कटिया, जिससे मछली फसाते हैं ।
कॉंटी—सलाई की कांटी । कील ।
कॉंड़—खलिहान मे रक्खे पौधो का पुज ।
कॉढा—वह रस्सी, जिसमे दौनी के लिये वैल वांधे जाते हैं ।
कॉँडी—(हि० ढरका) । वांस की फोफी, जिससे जानवरो को घोल पिलाया जाता है ।
कॉँदू—(हि० भुजवा) भडभूजा (एक जाति)।
कॉधी—नदी की मोड पर का वह भाग, जिस पर नदी अपनी काटी मिट्टी फेंक देती है। कोल्हू के वैल के कूवढ पर का टाट का गद्दा ।
कॉँनुन—भडभूजा की पत्नी ।
कॉसा—एक धातु ।
कॉँसी—फसल को पूर्णत हानि पहुँचानेवाली एक प्रकार की घास ।
काकुट—हि० सॅडासी ।
कागजी—मुलायम ।
कागदुरुस—एक खेल ।
काछना—लोहे के पत्तर या हाथ से साँचा पर की फजूल मिट्टी काटना ।
काड़ा—हि० पडवा। कडरू। भेंस का नर वच्चा ।
काड़ी—भैंस का मादा वच्चा ।
कादा—अनेक दवाइयो का औंट कर उतारा हुआ रस ।
कादो—(हि० कीचड)। धान रोपने के लिये तीसरी वार हल चलाने की प्रक्रिया ।
कानर—खेत मे या नदी के किनारे, नदी के पानी से सवद्ध खोदा गया छोटा कुँआ ।
कानू—कॉंदू ।
कारज—रस्म। सस्कार। उत्सव ।
कारावोगहा—धान की एक जाति ।
कारी वॉँक—धान की एक जाति ।
कारू वीर—कलुआ वीर, जो डोम और दुसाध द्वारा पूजा जाता है।
किकुरल—सिमटा हुआ ।
किची—(हि० कीचड) आँख की काँची ।
किचिन—एक औरत भूत ।
किछार—किनारा ।
किनछरिया—किनारा ।
किरौंची—वह वैलगाडी, जिस पर अनाज-भूसा आदि लादा जाता है। वह भैंसा गाडी, जिस पर डोम कूडा ढोकर ले जाते हैं ।
किरिंग—सूर्य की किरण ।
किरिया करम—नित्यकर्म ।
किरिया—कसम ।
किल्ली—कॉंटी ।
कीनना—खरीदना ।
कीया—(हि० सिंघोरा) सिंदूर रखने की छोटी डिविया ।
कीरी—एक कोडा, जो चावल मे पाया जाता है ।

कुंडा—(हिं कणा)। चावल का मद।

कुंडी—पानी पटाने का बर्तन। काठ द्वारा पानी खींचने का लोहे का बर्तन जिसका सिरा गोल-चौड़ा और पेंदा नुकीला-संकीर्ण होता है।

कुंभड़ा—एक जाति विशेष।

कुंदी—एक मिठाई।

कुंद—एक फूल।

कुंदा—लकड़ी का टुकड़ा।

कुकरौंधा—एक जड़ी।

कुक्कुर—कुत्ता।

कुगाह—बेठौर।

कुचा—चटनी।

कुचकुच—गहरे रंग का। यह प्रायः काले रंग के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है।

कुची—पोतने का एक उपकरण।

कुजात—जाति से बहिष्कृत।

कुटनी—झगड़ा लगाने वाली।

कुट्टा—पुआल की काटी हुई छोटी महीन टुकड़ी।

कुठुआ—कूँथ हुआ।

कुठाँव—कुठौर। मर्म स्थल।

कुड़वहिना—(१) हैंगा में बाईं ओर में रहने वाला बैल। (२) मेंह के पास घूमने वाले समूह का सबसे छोटा और दुबला बैल।

कुड़ी—(हिं भाग) हिस्सा।

कुदरम—एक पौधा।

कुदार—कुदाल।

कुनमुनाना—कुरकुराना। बकना। हप करना।

कुनरी—एक सब्जी।

कुपुथ—छेद।

कुप्पा—चमड़े का बर्तन जिससे पानी भरा जाता है।

कुप्पी—टिन का बना हुआ बर्तन जिससे तेल भरा जाता है।

कुरथी—एक प्रकार की घास।

कुरसेत—जोता हुआ वह खेत जिसमें कुछ दिनों से हल नहीं चलाया गया हो।

कुल्हर—एक लंबा डंडा जिसके मुँह पर अनाज उलटने और बटोरने के लिये काठ का बना औजार लगा होता है। लकड़ी का बना एक औजार, जिससे मिट्टी को समतल किया जाता है।

कुल्हिया—१ हिं लड़कों की छोटी टोपी। २ हिं कुल्हड़।

कुसही केराव—एक साथ उपजाया जौ और केराव का मिश्रण।

कुहासा—कुहासा।

कूँड़ी—पानी पटाने का बर्तन।

कूड़ा कूड़कूट—कूँड़ा।

कूरी—जोतने के पहले पूजा के लिये निकाला हुआ मिट्टी का एक अंश। राशि। ढेर।

केआरी—क्यारी।

केदा—हिं जिद्दना।

केड़ी—अँगूठे और अँगुली के बीच की जगह।

केतारी—ऊख।

केसा—वैजन्ती का फूल।

केरा—केला।

केसौर—मिश्रीकन्द।

केसौरिया—बस्ती की सबसे अधिक उपजाऊ जमीन।

केसौर—मिश्रीकन्द।

केँचिया—केंची के आकार का।

कोंही—कली।

कोंहियाना—कली लगना।

कोंहरौरी—बेसन की बरी।

कयौँचा—मेंड़ की घास को उतारने का एक औजार।

कोइया—एक छोटा-काला कीडा ।
कोइला बाबा—एक देवता का नाम ।
कोचला—लता मे होने वाला एक कड़वा फल । एक प्रकार का साग ।
कोपानी—छप्पर का सिरा ।
कोठी—अनाज संग्रह करने का खजाना ।
कोठिला—छोटी कोठी ।
कोड़ा—चाबुक ।
कोढ़ी—कामचोर ।
कोथ—खट्टा ।
कोदइ—एक अन्न ।
कोनी—हि० कोना ।
कोनासी—कोना पर का ठाठ ।
कोनिया—वह स्थान, जहाँ कोने पर दो ठाठ मिलते हैं ।
कोपीन—लगोट ।
कोर—१ हि० किनारा । २ हि० नया ।
कोरहाग—चिता । कुढन ।
कोरई
कोरो } —ठाठ मे लगा रहनेवाला बाँस ।
कोराई—दाल का ऊपरी छिलका ।
कोलसूप—बांस का बना एक प्रकार का सूप ।
कोलसार—वह स्थान, जहाँ ऊख का रस पेर कर, गुड बनाया जाता है ।
कोसला—खजाना ।
कोहबर—पति-पत्नी का प्रथम मिलन-स्थल ।
कोहा—(हि० पतिला) सकरे मुँह की मिट्टी की हाँडी ।
कोहागल—शोकयुक्त । रूठा । खिन्न ।
कौअल—(हि० कैंची) कैंची की शकल मे बने हुए दो लम्बे बाँस, जो घर की छत के आधार-रूप मे स्थित रहते हैं ।
कौआ झपान
कौआ लुकान } —गेहूँ का बढा हुआ पौधा, जो कौआ को ढाँप लेता है ।
कौआ नेहान—हल्का स्नान ।
कौआ हँकनी—कागा हँकाने वाली ।
कौआ बाँझ—काग । फूट सरया ।
कौनी—एक प्रकार का दाना ।
कौर—ग्रास ।
कौरी—(हि० पगुरी) । पागुर । जुगाली ।

ख

खँखड़ी—बिना दाना पडा हुआ अनाज । सारहीन अनाज ।
खगाहा—गढने वाला ।
खघारल—धोया हुआ ।
खंड—घर का पिछला भाग, जिसमे जानवर रखे जाते हैं ।
खडसार—शक्कर बनाने का कारखाना ।
खंडा—घर या खेती की सामग्री ।
खॅड़हू—हि० आहर अथवा क्यारी का खड ।
खॅड़ल—एक प्रकार का छोटा गड्ढा ।
खधा—बहुत-सा छोटा-बडा खेत का समूह जो खास-खास नाम से जाना जाता है ।
खती—लोहे का एक औजार, जिससे जमीन को खना जाता है ।
खखनल—(हि० आतुर) तरसा हुआ ।
खखोरन—हाडी या मिट्टी की कडाही से खिखोर कर निकाला जाने वाला पदार्थ ।
खगरा—ताड का सूखा पत्ता ।
खगरी—ताडो का झुरमुट ।
खजाना—धूरा पर लगी भारी लकडी ।
खचुली—टोकरी ।
खटखट—(हि० आवाज) । चिढचिड़ा । सूखा ।

खटपट—झगड़ा ।
खड्डा—गड्ढा ।
खत्ता—खेत का हिस्सा ।
खतियान— जमीन से संबंधित एक कागज ।
खतियामा—कागज-बही मिलना ।
खदुक—कर्ज लेनेवाला ।
खपरी—भूजा भूजने का मिट्टी का बर्तन ।
खपरोइया—किसी फल का कड़ा छिलका (जैसे बेल का ।
खपरौर—खपरा मिला हुआ ।
खपखप—हि० बहुत कीड़ा पड़ा हुआ ।
खपरौंढ़ी—एक मिट्टी का बर्तन जिसके द्वारा शिशु के जन्म होने पर गंदी चीजें फेंकी जाती है ।
खबौनी—पकवान ।
खमाव—१ जानवरों का उठाना ।
२ पानी देने पर कोड़ना ।
खमेड़—घनिष्ठ सम्पर्क ।
खमौनी—पकवान ।
खमीरा—खमीर उठाया हुआ—(तम्बाकू आदि) ।
खर—तृण । खेर ।
खरजितिया—जितिया पर्व ।
ख खरिया—एक सवारी ।
खरचाखी—खेरचाखी । जामुन पंपट आदि चापने का एक यंत्र ।
खरभूसा—एक घास ।
खरकूस—सूख कर सटा हुआ ।
खरपा—चप्पल ।
खरहर—बिना बिछावन का ।
खरहरा—घोड़े को रगड़ने के लिये बना लोहे का पदार्थ ।
खरहोमा—मिठाई रखने के लिये सूखे पत्ते का पात्र ।
खरये } —सूखी जमीन में समय के पहले
खरयेह } की जानेवाली धान की बोआई ।
खराद—खरादने वाला यंत्र ।

खरा—क्षार (पानी) । क्षारयुक्त (पानी) ।
खरिका—तिनका जिससे दाँत खोदते हैं ।
खगिहन—बेहन ।
खरिहान—खलिहान ।
खलकोइया—छिलका ।
खलड़ी—खाल ।
खल्ली—तेल निकाले हुए तेलहन की सिट्ठी ।
खसरा—पटवारी की खेत-बही जिसमें खेत का ब्योरा लिखा रहता है ।
खखिया—मसालेदार भुना चना ।
खाहरख—पत्ता या कोई अन्य चीज जो अपने स्थान से हट गई है ।
खाँगल—वह जानवर जो एक कीटाणु विशेष से पीड़ित है ।
खाँच—लकड़ी में काटा हुआ गड्ढा ।
खाँटी—शुद्ध
खाँड़—पानी के धारा से बाँध के टूटने की जगह ।
खाता—पटवारियों की खेत-संबंधी बही ।
खाप—अनाज बटोरने का उपकरण ।
खाम—खराब ।
खाभा—खिलावा ।
खार—लगता । बाँध के नीचे पानी के गिरने से बना गड्ढा ।
खिया—(हि अच्छा) । भुलाया नहीं ।
खिमौरी } —हि पुपका या छोटा रूप ।
खिरौरी }
खिसियाल—खिसा हुआ ।
खिरसा—तुरंत बियाई गाय के दूध का फेनुस ।
खिसकना—(हि ठहियाना) खिसकना । भुलना ।
खिसचन्द—एक बहाना ।
खीस—बियाई गाय का पहला दुहान ।
गाय के अन्दर का बीज ।

खुक्खे—हि॰ खाली ।

खुटान्घर—घरमूँहा । खूँटे के ही पास मंडराने वाला जानवर ।

खुट्टा—ढेंकी का वह स्तभ, जिस पर वह टिकी रहती है । जानवरों को वाघने का लकडी या वांस का स्तभ, जो जमीन मे गडा रहता है । खूंटा ।

खुटिला—हि॰ कोंप । कान का एक आभूषण ।

खुदनी—हि॰ खोदनी ।

खुद्दी—अनाज का छोटा टुकडा । कण ।

खुनुस—गुस्सा ।

खुभिया } खुभिया } लाई वनाने का दाना ।

खुरनी—हि॰ खोदनी । आग खोदने की छड ।

खुरहा—गाय की एक वीमारी ।

खुरखुन—रौंदा हुआ ।

खुरचन—खुरचकर निकाली गई वस्तु ।

खुरजी—किवाड का भाग ।

खुरमा—छुहाडा ।

खुरखुराहा—(हि॰ तुनुक) ठस ।

खूँट—कपडे का एक किनारा ।

खूर—जानवर के पैर का निचला हिस्सा ।

खेंदा } खेंदो } ऊपर चढने के लिये दीवार आदि मे वना गड्ढा ।

खेंधरा } खेंनरा } विछावन ।

खेखरा—खोलड ।

खेखसा—एक तरकारी ।

खेदी—(हि॰ खुड्ढी) । सीढ़ी ।

खेत-पथार—खेत आदि ।

खेप } खेवा } (हि॰ मरातिव) वार । पारा ।

खेवाल—कच्चे ईंटे की लगी छल्ली ।

खैनी—तम्वाकू । पीनी ।

खैर—एक लकडी । पान के साथ खाया जाने वाला कत्था ।

खैहन—(हि॰ खाने का अन्न) । रैयत को भोजन के लिये दिया हुआ अनाज ।

खोंइचा } खोंइछा } स्त्रियो की विदाई के समय उनकी गोद मे दिया गया चावल या अन्य भेंट । गोद भरना ।

खोंखना—खांसना ।

खोंगहा—गडने वाला ।

खोंच—चौंकी आदि मे वाहर निकला हुआ हिस्सा, जिसमे फँस कर कपडे फटते हैं ।

खोँटना—टुगना ।

खोँटनी—खोटने वाली ।

खोंढ—ऐव ।

खोंढा—पहाडा ।

खोंधा—हि॰ खोंता ।

खोआ—दूध का वना मावा ।

खोइया—खोआ या खूभी का वना दाना ।

खोगीर—घोडे का साज । व्यर्थ की चीज ।

खोजड़ा—नामर्द ।

खोनचा—फेरी कर वेचनेवाले का डगरना ।

खोना—(हि॰ दोना) पत्ते का वना दोना ।

खोपसन—उलाहना । ताना । वात की ठोकर ।

खोम—बुरा मानना । अपशकुन समझना ।

खोरहा—जानवरो की वीमारी ।

खोरनाठो } खोरमाठ } खोरनी } बाम पोतने वाली छड़ ।

खोराकी—खाने के लिये प्राप्त पसे या अनाज ।

खोरा—हि मटका कूड़ा ।

खोरी—हि छोटी थाली ।

खोसड़ खोखला ।

खोका—अनाज वगरह पसटने की छोटी पन्नी । खाने वाला ।

खौराहा—हि अभागा ।

ग

गँहथी—मिट्टी कोड़ने का लोहे का भारी औजार ।

गँवर्मा—मालिक । एक ही गाँव का रहने वाला ।

गँण्ठ—(हि) पौना ।

गगन—दुर्लभ ।

गंगल } गगला } गगली } एक प्रकार का गोल-मोल पत्थर जिससे चूना बनाया जाता है ।

गंगढाहा } गगटिआहा } गंपटयुक्त ।

गगाह—गंगाजली ।

गगा नेहान—गंगा-स्नान ।

गचन—मर्दना ।

गँकुरी—साँप का जहर मारकर उठने की क्रिया ।

गटेरी—सन का काता हुआ गुच्छा ।

गँड़सी—कुट्टी काटने का औजार ।

गवतरा—(सं) धायवाला ।

गब्ब—(हि) भाप ।

गगरा—पानी रखने का कलसा ।

गच—रोड़ा-सुरखी से दृढ़ किया हुआ मकान का सहन ।

गछिया—बगीचा ।

गजपत्ता—एक प्रकार का धान ।

गजबाक } गजबाग } हाथी को भोंकने का वज्र ।

गजर-बजर—मिला-जुला अनाज ।

गजनौटा—साड़ी का पीछे का हिस्सा ।

गज-बज—(हि)मिला-जुला ।

गजरौटा } गजरौटी } गाजर की पत्तियाँ और डंठल ।

गठ-पड़—(हि) मेलमिलाप ।

गट्ठा—कलाई ।

गट्ठा बेहगवा—बहुत बिगड़ा हुआ ।

गड़मेसा—लाठा के पीछे भार देने के लिये बनी कील, जिस पर पत्थर रक्खा जाता है ।

गड़गड़ा—हुक्का ।

गड़ुआ—पका हुआ ।

गतरे-गतरे—अंग-अंग । जगह । (सं) गात्र ।

गदाल—मचला । पंगा ।

गदपँडआ } गदपुरना } —पुनर्नवा । एक प्रकार की पत्तियोंवाली घास ।

गदरायल—फल या अन्न का पुष्ट रूप । मटर-चना आदि के पौधों में दानों का पुष्ट रूप । गोलाया ।

गनगनाना—गूँजना । शरीर-सिहर उठना । शरीर का कंपित हो उठना ।

गनौरा—कूड़ा-करकट ।

गपर-गपर—(हि) जल्दी खाना ।

गबरी—गड्ढा ।
गभरू—(हि०) गवरू (फा०) खूबरू दूल्हा । पति । सीधा । भोलाभाला ।
गमछा—(हि०) अगोछा ।
गमलक—हि०) जान गया ।
गरकी | पानी से गल जाने वाली फसल
गलकी | या जमीन ।
गरद्मानी—(हि०) कनाई । जानवरो के गर्दन की रस्सी ।
गरना—पानी चूना ।
गरदा—धूल ।
गरदानना—मानना । आदर करना ।
गरब खिल्ला—वडेरी की लकडी को जोडने का खिल्ला ।
गरल गरई—गडी हुई गरई मछली । छिपा धन रखनेवाला ।
गरह—विपत्ति ।
गराँगट—(हि०) कंकर ।
गरार—१. (हि०) गरियार । २ ढीठ ।
गलजोती—जानवरो के गले की रस्सी या पट्टी ।
गलथल—मनुष्यो की आवाज ।
गलसटका—(हि०) टीक । गले मे पहनने का आभूषण । जवागोटा ।
गलमोछा—गाल तक मूँछवाला ।
गलफी—पानी की वजह से सडा हुआ पौधा ।
गलल—गला हुआ ।
गल्ला—अनाज ।
गवत—गोत । जानवर का चारा ।
गवतचोर—चारा चुरानेवाला जानवर ।
गन्हायल—दूषित । सडा हुआ ।
गाँज—ढेर ।
गाँघी—एक कीडा ।
गाछ—वृक्ष ।
गाछी—वीज का पौधा ।
गाजइत—खुश होता हुआ ।
गाद—तेल के नीचे बैठनेवाला मैल ।
गादा—मटर का हरा दाना ।
गाभिन—गर्भयुक्त जानवर ।
गारा—मसाला, जिससे घर वनाया जाता है ।
गारन—(हि०) छोआ ।
गालसेंकी—विवाह की एक रस्म ।
गालू—(हि०) भूठा सिट्टू । जवान का तेज ।
गाही—पाँच की एक गाही होती है ।
गियारी—(हि०) गरदन ।
गिरगिरा—(हि०) छोटा जाल ।
गिरमिट—एक औजार ।
गिलावा—गीली मिट्टी । गारा ।
गिल्ली—अगूठे और अगुली के बीच की जगह ।
गिलौरी—पान का वीडा ।
गीत उठाना—गीत आरभ करना ।
गींधल—गूधा हुआ ।
गीरो-गांठ—गिरवी का व्यापार ।
गुजरी—एक जाति विशेष की स्त्री ।
गुगुल—एक काँटेदार वृक्ष, जिसका गोद सुगध के लिये जलाया जाता है ।
गुड्डी—पतग ।
गुड़की—मिट्टी का छोटा वर्तन ।
गुडगुडी—हुक्का ।
गुड़मिट्टी—व्यर्थ । वेकार ।
गुदरी—चीथडा ।
गुदनी—(हि०) तनिक-सा ।
गुदाल—हल्ला । शोर ।
गुदारा—फसल काटने की मजदूरी ।
गुनना—किसी के गुण को समझना । विचार करना ।
गुन—गुण । नाव की रस्सी । डोरी ।

गुवदी } —लड़कों द्वारा खोला गया
गुवची } छोटा गड्ढा ।

गुवची पिछाव—बच्चों का एक खेल जिसमें गड्ढे में गोली को डाला जाता है ।

गुम्मा—पूछने से उत्तर नहीं देनेवाला । एक चिड़ी ।

गुरहत्थी—विवाह का एक रस्म जिसमें मेंसुर जेवर चढ़ाता है ।

गुरही—छ प रखना । चुरची रखना ।

गुरुकढ़ाह—श्रावण में होनेवाला एक पर्व जिसमें लोग गुलगुला या पेड़ा बनाते हैं और गुरु से कान में मंत्र लेते हैं ।

गुरुच
गुरुच } एक लता जो औषधि के काम
गुरीच } आती है ।

गुरौंधा—परिठ ।

गुलफा—बड़ी फांक । एक तरह का घाव ।

गुल्ला—ऊख का टुकड़ा ।

गुल्ली—लकड़ी का टुकड़ा ।

गुल्लौरा—गुलगुला ।

गूँज—लोहे की नुकीली कील ।

गूड़ा—चावल का टुकड़ा (राँची)

गेंठ—गाँठ (सं) ग्रन्थि ।

गेंठ जोड़न—दम्पति के दो वस्त्रों को मिला कर ग्रन्थि करने की क्रिया ।

गेँड़ारी—(हि) गँड़ारी ।

गेँड़ा—खेत पर मेंड़ ।

गेँदरा—(हि) गदरी । गोंदरा ।

गेठरी—गठरी ।

गेड़ुआ—टेंटी तथा अकवाल । घड़े के नीचे रखने की इंडुरी । बिड़वा ।

गेदागेदी—हि छोटे-छोटे । बच्चों के लिये व्यवहृत ।

गेल्हा—कपड़े में चुनट देने का एक उपकरण ।

गेँता—(हि बेंती) । मिट्टी खोदने का औजार, कुदाल ।

गेमा—गाला ।

गोंदी—जेवर में लगी घुमनी जो छोटे छोटे गोल दाने की शक्ल की होती है ।

गोन—बाहिर से निकाल कर अलग रक्खा मिट्टी का ढोंका ।

गोआम—(हि पानी बांधने के लिये मोहार) । बांधने के लिये आदमियों का झुंड ।

गोखुआ—कान का एक आभूषण ।

गोजी—छोटा डंडा । कदीला और जाठ को जोड़ने वाली लकड़ी ।

गोझलौटा—पार्श्व की साड़ी ।

गोटा—(हि गोटा) । बीज । साड़ी का बेल ।

गोटायल—दाना भरा हुआ ।

गोटी—चेचक ।

गोठौर—(हि गोइठे का घर) । गोमय घर ।

गोड़ धौरी—हि ढेकी दबाने का पड़ा ।

गोड़—पैर ।

गोरू—गाय आदि जानवर ।

गोरखा-पिछा—जोंक ।

गोहार—हल्ला । शोर ।

गोरसिंघा—चरवाहा ।

गोरा—(हि गाढ़ी का पीला हुआ दूध) गाढ़ी पानी की बनी स्याही ।

गोलखा—सौनिया घास । (हि तरकी) कर्णफूल ।

गोलहथ—माँडी युक्त भात। (हि० गीला भात)।
गोलगाल—मोटा। चिकनाया।
गौआ-गोहार—हल्ला-गुल्ला।
गौँत
गौँती
गौत } —चारा
गोर गट्ठ—सोच विचार।
गौरैया—एक पक्षी।

घ

घघरा—महिलाओ के पहनने का लहगा।
घटिहन
घठिहन } सस्ता अनाज। जो मटर आदि।
वटना—(हि०) भात का चलौना।
घटरा—(हि०) मालपूआ।
घट्ठा—१ हि० मकई का दर्रा।
२. शरीर के अग मे घर्षण से वना चिह्न।
घठाह—थेथर।
घड़िया—धातु गलाने के लिये मिट्टी का वर्तन।
घन्नल—घना।
घमलउर लगाना—हल्ला-गुल्ला करना।
घरकुना—घरौंदा।
घरनई—पानी मे छहला कर चढने का एक यत्र।
घरिया—एक छोटी चुकिया, जिसे शरीर मे लगा कर चमाइन विकृत खून निकालती है।
घसुई—घिसी हुई। घसुई रोटी। घी घस कर वनायी गई रोटी।
घसर-घसर—तुरत। जल्दी।
घाघ—धूर्त। किसानो का एक कवि।
घानी—तेल पेरने के लिये तेलहन की वनाई हुई कुट्टी।
घाम—धूप। पसीना।
घिउरा—तोरई।
घिढारी—विवाह मे घी ढारने की रस्म।
घिनामन—घृणास्पद।
घुकरी—(हि०) मुकरी। सिकुड-मुकुड।
घुग्घा
घूँघा } (हि०) घूँघट।
घुचघुच—गहरा। घुचघुच अधेरा।
घुच्चा—गुच्छा।
घुट्टुर-घुट्टुर—घोट करके। कवूतर की आवाज।
घुंडी—गोल वटन।
घुमारी—चक्कर।
घुरूमना—आँख मे घूमना।
घुर के—लौट कर। फिर कर।
घुरची—रस्सी। सुतली, धागा आदि मे पडी हुई गाँठ।
घुरचिला—(हि० गुरचीला)। उलझा हुआ। प्रपंची।
घुसकुट्टी—घुसुक करके चलना।
घून—एक प्रकार का कीडा, जो अनाज आदि मे लगता है।
घूरा—अँगीठी।
घेंच—गरदन।
घैला—घडा।
घोंघा—१ एक जीव, जो जल मे रहता है।
२. ताड के पत्ते का वना हुआ छाता जो वर्षा से वचने के लिये वनाया जाता है।
घोंच—छोटी गर्दनवाला।
घोंटी—घस कर तैयार की हुई वच्चो की दवा।
घोघना—थुथना।
घोघनाही—रूठने-फूलनेवाली।

घोपरा—बस्ती के समीप की वह नीची और उपजाऊ जमीन जिसमें बस्ती का पानी बह कर गिरता है।

घोटाई—चिकनाहट।

घोड़मूहा—(हि टोड़ा) छप्पर को गिरने से बचाने के लिये घोड़े के मुंह ऐसा बना लकड़ी का सहारा। कौसन।

घोड़िया—एक कीड़ा।

घोड़कैयाँ—बच्चों को पीठ पर चढ़ाना।

घोनसार—चूल्हा। भनसार।

घोनसारी—भनसारी। भूँजा भूनने का स्थान।

घोर—(हि) मट्ठा।

घौद—(हि) गौद। फल के गुच्छों का समूह।

च

चंगा—स्वस्थ अच्छा।

चंग होना—तंग होना।

चंगेरी—बड़ी टोकरी।

चंठ—चालाक धूर्त।

चंडाल—चंडाल रोग।

चंडूल—चहूल, मूर्ख।

चंदा—चन्द्रमा।

चंदिया—खोपड़ी सिर का मध्य भाग।

चंदोवा—चाँदनी का वितान।

चंपत—गायब।

चइत—चैत मास।

चउक—चौक।

चउतरा—चबूतरा।

चकचकाना—चौंधियाना। आश्चर्यचकित होना।

चकत्ता—शरीर के किसी भाग पर पड़ा हुआ धब्बा।

चकपकाना—विस्मित होकर चारों ओर देखना।

चकमक—चमकना। एक पत्थर विशेष जिसपर चोट मारने से आग निकलने लगती है।

चकमा—धोखा। भुलावा।

चकती—चौकोर छोटा टुकड़ा।

चकरी—चक्की।

चकला—रोटी बेलने के लिए काठ की गोल ऐंड़ीदार पाटी।

चकल्लस—मजा। स्वच्छन्द आनन्द।

चक्कर—फेरा।

चक्का—पहिया। (सं०) चक्र।

चक्की—एक पत्थर का यंत्र जिससे आटा पीसा जाता है। जाँता।

चखना—स्वाद लेना।

चखाना स्वाद से परिचित कराना।

चट—फौरन। तुरत।

चटक—चमकदमक। चमकीलापन।

चटगार—सुस्वादु।

चटचट—तड़ातड़। लगातार। चिपचिपा।

चटना—ललचाहा।

चटिया—चेला।

चटोरा—स्वाद-लोलुप।

चट्टा—चोरा।

चट्टी—चूकी ऐंड़ी की जूती।

चढ़ियार—चीड़।

चतरा—(हि) खेत का रोग।

चतुर—चालाक। धूर्त।

चतुराई—चालाकी।

चतुरइया—चतुराई।

चदरा—चादर।

चद्दर—चादर।

चनकना—चटकना।

चनकी—खूब बोलनेवाली स्त्री। कच्ची ईंट के छोटे-छोटे नुकीले टुकड़े।

चनखोर—भूखा।

चपकन—कुरता । एक प्रकार का अगरखा ।
चपकना—चिपकना । सट जाना ।
चपत—तरी । हल्का तमाचा ।
चपड़ा—कुदारी का बड़ा रूप ।
चपाक—चटपट ।
चपाट—मूर्ख ।
चपाड़—मिट्टी का फटा बड़ा टुकड़ा ।
चपेटा—तमाचा ।
चबेना—भूँजा ।
चभोरना—गोता देना । डुबाना ।
चमचमाना—चमकना ।
चमड़ा त्वचा । (स०) चर्म ।
चमड़ी—त्वचा ।
चमोटी—चमड़े का लम्बा पट्टा ।
चरक—कुष्ट का दाग ।
चरकटा—तुच्छ मनुष्य ।
चरचराना—शरीर का तनाव या रगड़ से दर्द करना ।
चरपतिया—चारपत्तियोंवाला ।
चरॉट—चारागाह ।
चरौवा—चारागाह ।
चरोई—अन्न पकाने का छोटा घड़ा ।
चलता—चलायमान । धूर्त ।
चलन—रस्मरिवाज ।
चलनी—अनाज झाड़ने की चलनी ।
चलनौस—चोकर । चालन ।
चलवैया—चलनेवाला ।
चलाक—चतुर ।
चसमा—चश्मा ।
चसका—चस्का । लत ।
चहचहाना—चहकना ।
चहबच्चा—कीचड़-पानी से भरा गढ़ा ।
चहेता—जिससे प्रेम हो । प्रेमी ।
चहेती—जिसे चाहा जाए । प्यारी ।
चाँईं—इमली का चीआँ ।
चाँक—ध्यान । सावधानी ।
चाँटा—तमाचा ।
चाँड़—(हि०) दोगला । बेटी । बाँस या टिन की बाल्टी, जिसे दो आदमी पकड़कर पानी पटाते हैं ।
चाँपी—(हि० बुदेलं०) दूध का बर्तन ।
चाँयचाँय—व्यर्थ की बकबक ।
चाउ—चावल ।
चाउर—चावल ।
चाट—लत ।
चाकी—जाँता ।
चाभना—रस चूसना ।
चाभी—धुरा के किनारे लगाने के लिए लोहे की कील या गाड़ी के पहिए के आगे लगनेवाली कील ।
चान—चाँद ।
चाम—(स०) चर्म । त्वचा ।
चाली—बाँस की बनी हुई चटाई ।
चास—(हि०) जोत । खेत का जोतना ।
चिउँटी—चींटी ।
चिक—बकर कसाई ।
चिकना—मसृण ।
चिकनई—तेल । चरबी ।
चिकनाहट—चिकनापन ।
चिकनी—साफ-सुथरी ।
चिकवा—कसाई ।
चिकरना—गला फाड़ चिल्लाना ।
चिक्कन—निर्दोष ।
चिक्कट—मैला ।
चिकसा—आँटा ।
चिटकना—चिढ़ना ।
चिटकाना—चिढ़ाना ।
चितकबरा—कबूर रंग का ।
चिढ़ुरा—बेदाना की ढेढ़ी ।
चिनगी—अग्नि का स्फुलिंग ।
चरिआयन केश-मासादि जलने से निकली गंध ।
चिलिकना—टीस के साथ दुखना ।

छकड़ा—गाड़ी ।
छगुन—छः गुणों वाला । कुछ विचारना ।
छगोटिया—छ गोटियों से खेला जानेवाला खेल ।
छछनल—तरसता । बिलकल ।
छछनाना—तरसाना । बिलखाना ।
छटपट्टी—बेचैनी ।
छट्टी—एक उत्सव ।
छठ—एक व्रत ।
छठियार—एक उत्सव ।
छतरी—छाता ।
छत्ता—खोता ।
छदाम—अधेला ।

छनकना
छनगना } —भयाकुल होना ।

छनुआ—छाना हुआ ।
छपकना—जल में कौतुक के साथ उछलते तैरना ।
छपधिया—छ डोरियों से बनी ओरदवानी ।
छमकना—शेखी के साथ चलना ।
छरहर—फरहर ।
छरहरा—पतला ।
छरियाना—नखरा पसारना ।
छड़ीला—एक औषधि ।
छलकटुइ—छाली निकाला हुआ ।
छलछलाना—आँसू आ जाना ।
छलकाना—किसी भरे हुए पात्र के द्रव पदार्थ को हिलाकर बाहर गिराना ।
छवाना—मरम्मत करवाना ।
छाँछ—मट्ठा ।
छाँद—जानवरों के पैर बाँधने की रस्सी ।
छाइमिट्टी—राखमिट्टी ।
छाई—कोयले की छाई । राख ।
छान—जानवरों के पैर बाधने की रस्सी ।
छानतोड़ना—बन्धन तोडना ।
छानी—छप्पर ।
छाल—खाल ।
छाला—फोका ।
छाली—मलाई ।
छाव—छाया । छटा । सौंदर्य ।
छाहुर—छाया ।
छिछारी—हानि । "आरी में छिछारी देके खाता में लुकाय रे ।"
छिछोंहरा—(हि०) चटोरा । चटुआ ।
छितनार—चौड़ा मुँहवाला ।
छितिर-बितिर—इधर-उधर बिखरी ।
छितराना—तितर-बितर करना ।
छिन—पल ।
छिनार—बदचलन औरत ।
छिटका—पानी का छींटा ।
छिटकिनी—(हि०) सिटकनी ।
छिपनी—छोटी थाली ।
छिपुली—तश्तरी ।
छिलनाहा—व्यर्थ बात बढाने वाला ।
छिलमिलाना—चोट से छटपटाना ।

छींका } —वस्तुओं को रखने का वह गोल जाल, जो रस्सियों से बना होता है और छत से लटका होता है ।

छींटा—धोड़ा ।
छीपा—थाली ।
छीमी—मटर की फलियाँ ।
छीरा—कपडे आदि में पडा हुआ रेंघी ।
छीलन—ओझई । व्यर्थ की बहस ।
छीहर—(हि०) पतला ।
छुच्छ—खाली ।
छुछमाहा—ओछे स्वभाव का ।
छुच्छी—नाक का आभूषण ।
छुच्छुम—क्षुद्रबुद्धि ।
छुट्टी—खुला । बन्धनहीन ।
छूँछ—खाली ।

छूछा—सादा।
छूरा—(हि) सरियाया हुआ। घोवठे का ढेर।
छेंकना—रोकना।
छेरियाना—शिशु का जिद पकड़ना।
छेव—(हि) काटना। एक झोंका।
छैंटी—टोकरी।
छोनी—ऊख निचोड़ने की मशीन जिससे रस निकलता है।
छोप—मिट्टी का छिड़ाव।
छोपी—पत्तों का बना छाता।
छोलनी—लोहे की बनी एक वस्तु, जिससे तरकारी बनायी जाती है।
छोरा—लड़का।
छोगोछिया—छः मोटियों से खेला जानेवाला खेल।

ज

जंग—मोर्चा।
जंगला—खिड़की।
जंघियो बेसायब—कन्यादान की रस्म जब कन्या को पिता की जाँघ पर बठाया जाता है।
जंजाल—झंझट। कार्यभार।
जंतरमंतर—जादू-टोना।
जँतकुट्टा—जाँता का कुटा हुआ।
जांगर—शरीर। देह। हाथ-पैर।
जई—एक प्रकार का अनाज।
जउरी—रस्सी।
जउँआँ—(हि) जुड़वा। दो बच्चों का एक साथ होना।
जकड़-मंजा—उथाल्ब।
जकडुमा—जकड़कर पकड़ना या बाँधना।
जग—यज्ञ।
जगत—कुएँ का चबूतरा।
जगमगा—चमचम।
जगमगाहट—चमचमाहट।
जगरना—रात भर जागते रह जाना।
जगरनथिया—जगरनाथ (जगन्नाथ) की का यात्री। एक प्रकार का चावल।
जगवारी—रात में जागना।
जगवरिया—पहरेदारी।
जचनिहार—परीक्षक।
जजात—अनाज। धन-दौलत।
जजाती बँटाइ—जायदाद का बँटवारा।
जट्टा—केशों में पड़ी चिपचिपी।
जटना—ठगना।
जटहा—जटहा। जटावाला। साँड़।
जटइन—जटावाला।
जतन—यत्न (सं) कोशिश।
जनमगँठी—गँठबन्धन। प्रतिबंधन।
जनमासा / जनवाँसा }—बरातियों को ठहराने की जगह।
जनाना—मालूम पड़ना।
जनि—औरत।
जनिओरी—(हि) औरत।
जनेर / जनेरा }—एक अनाज।
जन्तु—छोटा-सा। बच्चा। जन्तु।
जपनिहार—जपनेवाला।
जबर—बलवान।
जबरा—(हि) छोटी कोठी।
जमुद—जमाव दही।
जमकाठ—यम का कुदा।
जमघट—भीड़।
जमात—समूह। मंडली।
जमाल—जवान। बोली।
जमाव—जमने या जमाने का भाव।
जड़ाव—रत्नजटित।
जर्री—जानवरों का पुरवन।

जड़ी गिराना—बच्चा देने के बाद जानवरो का अचकँनी या पुरइन गिराना।
जरनी—ईर्ष्या। जलन।
जलखइ—जलपान।
जलना—द्वेष करना।
जाकड—पुराना। जीर्ण।
जाबी—(हि०) खोती।
जारन—ईंधन।
जिश्राब—(हि०) मारना।
जिउ—प्राण। जीवन।
जिनिस—वस्तु। चीज़।
जिम्मा—जवाबदेही। उत्तरदायित्व।
जिभ्भी—जीभकछनी।
जियरा—दिल।
जी—मन।
जुश्रान—जवान। तरुण।
जुश्रानी—जवानी।
जुकुर—योग्य।
जुगुत / जुगुती —युक्ति (स०) उपाय।
जुगौना—जोगानेवाला।
जुमलइ—पहुँचा।
जुरपुत्ती—एक प्रकार की शारीरिक सूजन।
जुड़ाना—तृप्त होना।
जुहा या जुश्रा—बैल के कधो पर की गोल लकड़ी।
जेयोनार—भोज। न्योता।
जेठान—कार्तिक। शुक्ल पक्ष।
जेठौत—वडा।
जेमना—खाना।
जेमाना—खिलाना।
जोँत—ज्योति (स०) आभा।
जोकड़इ—मसखरापन।
जोखना—तौलना।
जोगल—सजोया हुआ।
जोगाना—सजोना।
जोत—खेत की जुताई।
जोतिया—बैल के कधे से जुआ मे लगने वाली रस्सी।
जोती—बैल के पालो मे बांधने की रस्सी।
जोर—बल। ताकत। रस्सी।
जोरना—सुलगाना।
जोरन—(हि०) जांवत। दही जमाने के लिए जोरन।
जोहना—देखना। प्रतीक्षा करना।
जोहइ—खोजई।
जौरी—रस्सी।

झ

झँकना—ढक्कन। छुप जाने की क्रिया।
झँझुश्राना—झुंझलाना।
झँझुश्रामन—असतोषप्रद।
झँपना—ढक्कन।
झँमगर झाँसवाला।
झँझरा—झरना, जिससे बुंदिया वगैरह छाना जाता है।
झकझक—खूब साफ।
झकझोरना—पकडकर हिलाना।
झकझोरा—पानी का हिलोरा।
झख्खर—झक्की।
झखना—किसी काम को सुस्ती से करना।
झखनं—किंकर्तव्य विमूढ़ता। सुस्ती।
झखुरा—लम्बे केश।
झखुराहा—लम्बे केशवाला।
झगर—कुएं से डूबी बाल्टी को निकालने का काँटा।
झगराहा—झगडालू स्वभाव वाला।
झझकोरा—हिलोरा (पानी का)
झटकना—दुबला होना। तेजी से चलना।
झटकल—तेजी से।
झटकारना—किसी वस्तु को उसका एक छोर पकड कर झाडना।
झटसिन—तुरत। अविलम्ब।

झवास—पानी मिला पवन का झोंका।
झरेनी—वृक्ष की पत्तियोंवाली डाली।
झलकौर—घुरमहना।
झसमझप—जल्दी-जल्दी।
झसास—बरसा-बदली लगा रहना।
झपकी—पलक झपना।
झमकना—थेकी से छिलकना।
झमकाना—शौक से कोई वस्तु पहनना।
झमठगर—सघन।
झमाझम—मूसलाधार।
झमाठ—घना।
झरक—लू।
झरहराना—हवा के झोंकों से खड़-खड़ शब्द करना।
झझहर—शोरवाला।
झझाहा—बात-बात पर गुस्सानेवाला।
झहरना—रुक-रुककर बरसना।
झोंकना—झुलकना।
झौंवर—काला पड़ गया। कृष्णवर्ण।
झाँस—आँखों में आँसू ला देनेवाली तीखी गंध।
झाँसा—धोखा।
झाँई—बहाना। मुंह पर पड़ा दाग।
झखुर—मोटियार।
झाड़-फानूस—पैसवती वमरह।
झाड़ना—झिड़कना। डण्डी से मारकर गिराना।
झिंझरी—झिंझरीदार देवाल जिसमें ईंटों की खड़ी धारी ऐसी बनी हो कि दो ईंटों के बीच में छौपर रहे और ऊसरवाली दसवी धारी पाटी रहे, ईंट पट करके।
झिकड़ी—ठिकरी।
झिड़ुरी—ठिकरी।
झिटका—ठिकरी।
झिटको—ठिकरी।
झिटकना—ठगना।
झिया—चक्की में पिसने के लिए अनाज देना।
झिस्सी—जल की महीन बूंदें।
झिल्ली—झींगुर। झीना पर्दा।
झींखना—मठर-मठर काम करना।
झींगा—एक मछली।
झीन—पतला।
झुकझुक—(हि) सिकुड़ा हुआ।
झुकुर-झुकुर—किसी वस्तु का रह रहकर बहुत थोड़ा-थोड़ा दिखाई पड़ना।
झुनझुनी—पैरों में मरनानेवाली झुनझुनी
झुरसना—आग की लपटों में लगकर काला होना।
झुरायल—सूखा हुआ।
झुलफुल—गोधूलि और रात्रि के बीच का समय।
झूमर—एक प्रकार की पंक्ति-पद्धति।
झोंका—झहरा।
झोंटा—केश।
झोंटाझोंटी—वह लड़ाई, जिसमें झोंटा खींच खींच कर मार-पीट हो।
झोंकना—आग में झोंकना।
झोरना—पोतना। झाड़ना। हिलाना।
झोर—तरकारी का झोल।
झोल—कराहन। जाला।
झोल—झौर।
झोलना—पकड़कर धीमे-धीमे हिलाना।
झोलाँह—(हि) सिकुड़न।
झौंसना—लपटों में जलाना।
झौराहा—हि) भवकने वाला शिशु। रोनेवाला।

ट

टंगरी—टांग। पर।

टंगनी
टंगना } —हि बरगनी

टंट-घंट—तैयारी ।

टँड़ुआ—छोटी पहुँच ।

टऊआना—असहाय होकर इधर-उधर घूमना ।

टगना—दुर्बलता से शरीर का डोलना । झुकते हुए चलना ।

टघरना—तरल पदार्थ का शनै शनैः गिरना ।

टकौरी—तालने का लोहे का यत्र ।

टटका—ताजा ।

टनटनाना—रोग से छुटकारा पाने की क्रिया ।

टटाना—शरीर के अगो का पीडा से ऐंठना ।

टटैनी—शरीर का ऐंठना ।

टनकना—दु खना ।

टप्पर—टाट ।

टहरी—दूध दुहने का वर्तन ।

टहकार—गहरा ।

टपटप करना—घाव मे पीडा होना ।

टपकना—फल या रसादि का गिरना ।

टहलुआ } —नौकर ।
टहलू

टहाटह—गहरा ।

टरना—हटना ।

टलहा—दव । खराव ।

टसकाना—हटाना ।

टट्टी—पैखाना ।

टाँड़—उपजहीन भूमि ।

टाँसना—वर्तन का छेद वद करना ।

टाँड़ा—वह हर, जिससे रब्वी वुनी जाती है ।

टाँकी—द्रव्यो का जोड, मरम्मतादि ।

टाट-पलान—वैल लादने के लिये उसकी पीठ पर रखी जाने वाली गद्दी ।

टाट देना—पचो को निमन्त्रित करना ।

टाल—लकडी लोहा आदि विकने की जगह ।

टाटी—टाट । घिरावा ।

टिक्कड़—गाय-वैल का एक रूप-भेद ।

टिकरी—छोटी रोटी, लिट्टी ।

टिपना—दवाना । छिपाना । ले लेना ।

टिटकारी—उत्साह वर्द्धक ध्वनि ।

टिपकारी—छत्त, छप्पर आदि मे छिद्र को भरना ।

टिसना—दु खना ।

टिकाना—ठहराना ।

टिकिया—चपटी गोली । कोयले से वनी आग सुलगाने की वस्तु ।

टिकोरा—आमादि का छोटा कच्चा फल ।

टिकुली—ललाट मे साटने की विन्दी विशेष ।

टिक्कुल - नदी के वीच मे जमा किया हुआ वाला ।

टीक—चुरकी । शिखा ।

टुअर—अनाथ ।

टुकुर टुकुर—चुपचाप, एकटक ।

टुकटुप—हि० एकटक ।

टुनमुनिया—छोटा ।

टुपटुप—हि० भरा हुआ ।

टुभटुभ—जल्दी २ वोलना । टभकना ।

टुभुकना—वीच मे टपककर वोलना ।

टुहुक } —गहरा ।
टुहटुह

टुइयाँ—टोटी लगा पानी पीने का वर्तन । टोटी । टोंटीदार जलपात्र ।

टुस्सा—फुनगी ।

टूँगना—खोटना । पौधे की फुनगी तोडना । तिनका ।

टूँसा—फुनगी।
टूइ—हि सुराई। एक बर्तन।
टूमरटापर—हि अनाथ।
टेंट—फाँड़ा। कमर की धोती में पैसा रखने का स्थान।
टेंढ़ुआ—वर्षा का अवशिष्ट पानी जो छोटे रास्ते से बहकर खेत पटाता हो।
टेंगरा—मछली विशेष।
टेंढ़ा-बकुआ—बेडौल।
टेंमी—अंकुरा। दीया की टेम।
टेम—चिराग की लव को।
टेकुनी—लकड़ी का मूठ लगा सूआ।
टेटम—माथे का गोल सूजन। ऐब।
टेटिया—अकारण भगड़नेवाला।
टेड़रा—हि भुक्का। मेंढ़िया।
टेटिआह—टेढ़ा। भगड़ालू। ऐंठ करनेवाला।
टैम—समय।
टोंटी—ओहारी में लगनेवाला टोंटीदार कपड़ा।
टोइया मारना—टोना। खोजना।
टोपरा—छोटा खेत।
टोटका—टोना। दैवी प्रकोप से बचने के लिए किया गया यत्न विशेष।
टोल—लकड़ी का टुकड़ा।
टोना—छूना। जादू। लकड़ी का टुकड़ा।
टोकनी—बैल पेरने वाले बैल की आँख ढकने के लिये व्यवहृत छोटी टोकरी।
टोप—सिलाई का एक टाँका।
टोंड़ा—वृक्ष का कपड़ा नुकीला भाग जिसमें फार रहता है।
टोपरा—खेत का एक भिरा भाग।
टोहा—कामक। सुन्दर।

ठ

ठकमकाना—(हि ठगमूरी) चकित होकर होकर रुक जाना)।
ठकमुरकी—हि० हक्का बक्का।
ठस—हि सुस्त मस्त स्पष्टवादी सुसपुसाहा।
ठट्ठा—हँसी दिल्लगी।
ठनगन—हठ।
ठनका—बिजली। वज्र।
ठनकना—बजना। दुखना।
ठाँव—जगह।
ठानना—आरम्भ करना।
ठाम—भाग। ठान करना। भाग करना।
ठमकना—रुकना।
ठकक—चकित।
ठाम—जगह।
ठाढ़—खड़ा। भाड़ा।
ठिकरी—भिटका। कपड़े का छोटा टुकड़ा।
ठिठुरना—सिकुड़ना।
ठिसुआयल कनाया हुआ। सिठियाया हुआ।
ठिठकना—भय से रुक जाना।
ठिठकारी—पशुवाह वाक ध्वनि। हँसी विशेष।
ठुमकना—प्यार का रोना।
ठुमा मारना—भ्रमंघ करना। पतंग का डोर द्वारा ऊपर बढ़ाना।
ठुकुर ठुकुर—धीरे धीरे।
ठुस ठुस—फुसफुसाहा। जल्दी टूटनेवाली वस्तु।
ठूसना—भकोसना। खाना। मरना।
ठूँठ } शाखा-पत्र विहीन वृक्ष।
ठूठ } बंधहीन मनुष्य।
ठेंगा—डंडा। अंगूठा।

ठेंठ—शुद्ध ।

ठेंठा—ऐंठा हुआ पुरुष । नाटा ।

ठेंठी—ऐंठी हुई स्त्री । नाटी ।

ठेकरा—एक छोटी छडी, जिसका व्यवहार अन्न कूटने के समय अनाज-उकटने मे किया जाता है ।

ठेकाना—पता । छू देना ।

ठेकुआ—एक पकवान ।

ठेपी—सीसी-बोतल का झंपना ।

ठेहा—लकडी का वडा खूंटा, जिस पर कुट्टी काटी जाती है ।

ठोप—वूंद ।

ठोर—ओठ ।

ठोर खिचकाना—उपेक्षा करना ।

ठोहर—थोडा । सयगर नही ।

ड

डॅहना—जलना ।

डॅडेरा—छडकी । लम्वा अलग ।

डँसना—किसी कीडे का काटना ।

डँटिया—डोगी ।

डकहा—पशुओ की वीमारी ।

डगरा—गृहस्थी का एक सामान। गोलाकार वाँस का पात्र ।

डगरिन—चमइन ।

डम्हक
डम्धकल } पका हुआ फलादि ।

डफल—फुला हुआ ।

डवडवायल—लोर-वोर ।

डफुआना—गुस्सा से फुफकारना ।

डमारा—गोवर का सूखा भाग ।

डभकल—सीझा हुआ ।

डभका—हि० ताजा । कुएँ या नदी का लाया ताजा पानी ।

डमका—हि० ऊँची जमीन ।

डमरू—हि० शेर का वच्चा ।

डमारा—(हि० विनुआ कडा) सूखा गोवर, जो जगल से चुनकार लाया जाता है ।

डहजर—हि० डाही ।

डलिया—दौरी । छोटी डाल ।

डमाडोल—अस्थिर ।

डॉसना—काटना ।

डावर—एक वीघा से लेकर दस वारह वीघा तक का एक खेत ।

डाली—फल-फूल की भेंट । शाखा ।

डाढी—दही का सिखोरना ।

डार—डाल ।

डिल्ला—किवाड का भाग विशेप ।

डीह—एक प्रकार के खेत की जमीन ।

डुँडा—हि० अकेला ।

डुब्भा—वडा कटोरा ।

डुवकुनिया लेना—डुवकी मारना ।

डुवाव—डुवने भर पानी ।

डेंवढी—धनी वर्ग का गृहद्वार ।

डेंओंढ—वोली छोडना । हँसी-दिल्लगी ।

डेंओढ़ लगना—भूख लगना ।

डेंओढ़ा—डेढ़वार । एकाधिकवार ।

डेंगाना—पीटना ।

डेग—पैर की चाल ।

डेगाडेगी—शिशु का डेग वढाना ।

डेली—बेंत, वाँस, तार आदि की वनी मौनी ।

डोंभरा—(हि० डवरा) छोटा गड्ढा, जो वरसात मे अधिक दिन तक पानी मे डूवा रहे ।

डोंडी—मछली वझाने का एक प्रकार का गोल थैला । (डोडा—पु०)

डोंगा—गौना के वाद लडकी की विदाई ।

डोंगी—छोटी नाव ।

डोरी—रस्सी ।

डोढ़ी—धिधिका।
डोमनी—(रोपनी-डोमनी) पौधों का रोपना।
डोमनी—डोमिन। किवाड़ को चौखट में जड़ने का यंत्र विशेष (हथकड़ डोमनी)
डौंगी—छोटी नाव।
डौड़ी लगना—चक्कर आना।

ढ

ढनढनाना—हि खटकना। बर्तन का खाली होना।
ढरुआ—साँचे में ढारा हुआ।
ढसराभस—हि बदरावा बबपका फल।
ढपल—ढाँपा हुआ।
ढाँसना—जानवरों की खाँसी।
ढाबस—बड़ा मेढ़क।
ढाड़—चौंटा। चप्पड़। मुक्का।
ढाबा—घर से एकदम छोटा खुला मैदान।
ढाहू—भारी बर्तन जिस पर मिट्टी पड़ती है।
ढिलुआ—हिंडोला।
ढिबरा—ऊँची जगह।
ढिबरी—ढिबरी।
ढीठ—अनुचित साहसी। धृष्ट।
ढोंढा—गर्भ।
ढोंढाही—बड़ा पेट वाली।
ढुढ़िया पसारना—घर की चीजों को पसारकर खोजना। ढूँढना।
ढुनमुनाना—किसी वस्तु का लुढ़कना।
ढुकना—घुसना।
ढुरढुर—चिकन। चिकना।
ढूंस—
ढूंसा—जानवरों द्वारा सींग से आक्रमण।
ढूंसना—ठसना।
ढूह
ढूहा—ढेर। टीला। भीटा।
ढेकुली—पानी पटाने का यंत्र। (ढेकुला—पु०)
ढेंकी—अनाज कूटने का यंत्र।
ढेकवाँस—ढेकवांस। ढेला फेंकने की रस्सी विशेष।
ढेरा—सुतली काटने की फिरकी। मिट्टी कंकड़ आदि का टुकड़ा।
ढेबुआ—पैसा।
ढोंगाह—मूर्ख। गुरकनेवाला।
ढोनी—हि डाकी। फल आदि की मट।
ढोलहा—ढोल पीटकर घोषणा करने का कार्य।
ढोली—दो सौ पान के पत्तों की गड्डी।
ढोका—पनादि रखने की बांस की बनी पिटारी।
ढोलना—गले में पहनने का जन्तर।
ढोर—मवेशी।

त

तकड़—दही का मट्ठा।
तकरार—झगड़ा।
तकरारी—झगड़ालू।
तगड़ी—पगहा।
तख्ता—काठ की पट्टी।
तँगियाइ—हठ। धृष्टिता।
तखनी—उस समय।
तड़के—एकदम भोरे। (भूरदम तड़के)
तरकी—कर्ण का आभूषण।
तड़कना—आम आदि के पेड़ का अचानक फट जाना।
तड़फड़—शीघ्र।
तगादा—मांग।
तनि—थोड़ा।
तनीगो—थोड़ा सा।
तपावन—(हि तर्पण)। देवता पितर आदि के नाम पर जलादि गिराना।
तरना—एक जाति विशेष।

सतारना—अगो मे मोच आने पर गर्म जलादि से धोना। सहलाना।

तमतमाना—गुस्सा होना।

तवा—रोटी पकाने का लोहे का छितनार पात्र।

तमसगीर—तमाशा देखनेवाला।

तमसाहा—गुस्सैल। क्रोधी।

तले—नीचे।

तनल—तना हुआ।

तरवा—पदतल। "तरवा के लहर कपार चढ़ना" अति क्रोधित होना।

तरहरा—जमीन के अन्दर का गड्ढा।

तसमई—खीर।

तसर—एक प्रकार का रेशम।

तसला—पात्र विशेष।

तह्दरज—एक दम नया।

तह्स-नह्स—छिन्न-भिन्न।

तरहत्थी—हथेली।

तरघन्ना—तार का बगीचा।

तरह्टिया—नीची जमीन।

तरबतर—भीगा।

तरकुन—तार का कोपल।

तह्रेतह—गतरे-गतरे।

तरियानी—भीतर का निचला भाग।

तरेगन—तारागण।

तरास—पिआस। प्यास।

तरुआ—तालू।

तमेढ़ा—भात बनाने का बडा पात्र।

ताकड़—कमी।

तामी—बड़ा जलपात्र।

ताला-ऊपरी—नीचे ऊपर।

तावड़तोड़—लगातार। जल्द जल्द।

तितकी—चिनगारी। अगारी।

तिरना—खीचना।

तिलवा—तिलो का लड्डू।

तिलकूट—तिल का मिष्टान्न विशेष।

तिनपइ—तीन पाव का घटखारा या नाप का पात्र।

तिरमिराना—तिलमिलाना।

तिरपट—तिरछा।

तिरघाँक—तिरछा।

तिनमुहानी—तीन ओर से मिलने वाली सडक।

तितिम्मा—बखेडा।

तिलौरी—तिलयुक्त बरी।

तीअन—हि० तरकारी।

तीर—खीच।

तीले तीले—बार-बार।

तीसिऔरी—तीसीयुक्त बरी।

तीज—एक पर्व।

तुतई—सहनाई। बाजा।

तुरी—बार।

तंतुला—बैलगाडी का एक अंश।

तेतर—तीन कन्या के बाद उत्पन्न लड़का।

तेतरी—तीन लड़का के बाद उत्पन्न लड़की।

तेवइया—स्त्री।

तेपहर—तीसरा पहर।

तेहरा—तिगुना।

तेगुनी—तीन बार ऐंठी हुई रस्सी—डोरी आदि।

तेलचट्ट—अधिक मैला।

तेलहा—तेल मे पका। तेलही (स्त्री०)

तेलिया—रग विशेष। काला। सूम।

तेसरी—तृतीय।

तेलहंडा—तेल रखने का मिट्टी का बर्तन।

तोड़ा—रुपया रखने की थैली आदि।

तोड़ी—राई। तेलहन।

तोतराहा—तुतलाकर बोलनेवाला।

तौंसना—गर्मी की लू लगना।

तौली—तेल निकालने का गोलाकार लौह पात्र।

तौलाइ—तौलने की मजदूरी।

तौन—वह। सो।

थ

थउआ—स्फूर्तिहीन ।

थक्कल—थका हुआ ।

थकुचना—चोट देकर मारना ।

थकैनी—थकान ।

थन—जानवरों का स्तन ।

थनैल } स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला
थनैला } फोड़ा ।

थम्ह } केले का थड़ । स्तम्भ ।
थंम }

थप्पड़—चाँटा । थाप ।

थपड़ाना—थप्पड़ से मारना ।

थपुआ—थाप कर बनाया हुआ खपड़ा ईंट आदि ।

थम्हाना } हाथ में देना ।
थमाना }

थरमसाना—हतोत्साहित होना ।

थाक—ढेरी । समूह ।

थान—कपड़ा का परिमाण विशेष । स्थान ।

थापना—स्थापित करना ।

थापी—जमीन पीटने की मुंगरी ।

थारी—थाली । खाने का पात्र विशेष ।

थाला—पेड़ पौधों की जड़ के चारों ओर की मिट्टी ।

थिर—स्थिर ।

थिराना—जल को स्थिर करना ।

थुक्कम—फजीहत } प्रतिष्ठा भंग ।
थुक्का—फजीहत } तिरस्कार ।

थुम्मी—खोठगन । सहारा के लिए लगाई गई लकड़ी ।

थुरना—मारना । कूटना ।

थुलथुल—अधिक स्थूल । मोटा ।

थूहा—ढेर । धूहा ।

थेथर—निर्लज्ज । घठाहा ।

थेथर दलेली—बेहयापन । हठवादिता ।

थोथा—खाली । खोखला । कुंठित । भद्दा ।

थोथुना—मुंह का अगला भाग ।

थोपना—किसी के सिर पर अपराध मढ़ना ।

थौंसना—पूर्ण हतोत्साहित होना ।

द

दतुआ—निकला हुआ दाँत वाला ।

दंद—फिकिर ।

दउनि—अनाजों की दौनी ।

दउगना—दौड़ना ।

दक्खिनाहा—दक्षिण का । दक्षिण का हवा विशेष ।

दगदग—हृदयकम्प । घबड़ाहट ।

दगदगी—हृदय की धड़कन ।

दछिना—दक्षिणा ।

ददिहाल—दादा का घर ।

दनदन—जल्द जल्द ।

दनदनायल—दनदन शब्द करता हुआ ।

दन्ने—तरफ ।

दमिआयल—कीड़ा लगा अनाज ।

दपदप—चमका । गोरा ।

दबकना—छिपना ।

दबाव—दबाना । चाँप ।

दमकड़—दाम टूट (कम) जाने पर नहीं बिका हुआ पशु ।

दमकला—पानी खींचने का यंत्र विशेष ।

दमड़ी—पैसे का आठवाँ भाग ।

दमाही—अनाज को डंठल से अलग करने के लिये बैलों द्वारा उसे कुचलने की क्रिया ।

दमाहा—दम्मा की बीमारी वाला । (दमाही-स्त्री)

दमचोर—ठीक आवाज नहीं करने वाला । (हुक्का) ।

दमसाम—दम साधनेवाला ।

दम धरना—रुक जाना।
दरब—धातु।
दरबा—पक्षियो का खोडहर (घर)।
दरस-परस—भेंट मुलाकात।
दरस—दर्शन।
दरकल—चनका हुआ। फूटा हुआ।
दरसनी हुंडी—एक हुंडी, जिसका भुगतान तुरत करना होता है।
दरमाहा—मासिक वेतन।
दरार—फांट।
दरेची—छोटी खिडकी।
दलकना—डोलना।
दलदल—कीचड से भरा पूरा भूभाग।
दलपुरी—दाल भरी पूरी।
दलपिट्ठी—दालयुक्त बनी पिट्ठी।
दसगजा—दसगज वाला।
दसहरा—विजयादशमी।
दसाह, दसवाँ—मृतक श्राद्ध की तिथि विशेष।
दह—जलाशय। जलपूर्ण गढ़ा।
दादर—दरका हुआ। नकटा। फूटा हुआ।
दाना—जानवरो-पक्षियो को दिया जाने वाला अनाज।
दाना-पानी—परवरिश। जीवन-निर्वाह।
दाहा—तजिया।
दिंदिआयल—वेग से।
दिअरि—दीआ।
दिन गर—अधिक दिन का। अधिक अवस्था का।
दियरी—छोटा दीआ।
दिवट, दियट—चिराग रखने का छोटा स्तभ।
दीठ—कुदृष्टि।
दीनी—अनाज काटने की मजदूरी।
दीदा—नेत्र का सम्पूर्ण भीतरी अश।
दीरेची—ताखा आदि।
दीदा निकलना—क्रोध करना।
दुद्धि, दुधिआ—दूध का पानी। दूध से बनी।
दुधपीवा, दुधमुँहा—दूध पीनेवाला बच्चा।
दुपहरिआ—दोपहर। एक फूल।
दुबर-पातर—दुर्बल और पतला।
दुमुहियाँ—बडा चतुर। सर्प विशेष। दो मुंह वाला।
दुलरुआ, दुलरौता—दुलार से पालित।
दुलदुल—ताजिया का एक प्रकार।
दुसना—दोष लगाना। निन्दा करना।
दुहाई—दुध दुहने की मजदूरी।
देखार होना—भेद खुलना।
देखनौक—देखने योग्य।
देमान—दीवान।
देहरी—द्वार।
देवघरा—देवस्थान।
देवास—देवताओं के उपलक्ष्य मे भक्तों (ओझा) द्वारा किया गया कृत्य विशेष।
दोंगा—गौने के बाद की विदाई।
दोकनिया—दुकान का।
दोखार—दोबारा खेत की जोताई।
दोगाह, दोगाहा—दो सिचाई-यन्त्र के एक साथ चलने का कार्य (दोगाही-स्त्री०)
दोजिहा—गुरुभिनी। गर्भिणी।
दोदरा—कीडा दश का सूजन।
दोदना—मुकरना।
दोना—पत्तो का बना खोना।
दोपलिया—दोपल्ला का।
दोबर—दुगना (दोबर न तो गोबर)
दोबाहा—दूसरी बार (दोबारा) विवाहित।

दोमट—वह मिट्टी जिसमें बालू-रेत का मिश्रण हो।
दोखगी—धान विशेष। दोखनी।
दोरस—दोमट। बालू मिली मिट्टी।
दोरस्सा—दो धातुओं का मिला हुआ सिल।
दोसर—द्वितीय।
दोहर—एक प्रकार की दोहरी चादर।
दोहरि—दुबारा कम्बल को रखने का कार्य।
दोहाई—पुकार।
दोहारि—दरवाजा।
दौगना—दौड़ना।
दौनी—अनाजों को डंठल से अलग करने की क्रिया।
दौरा—टोकरा।

ध

धधौरा—बड़ी ज्वाला।
धँसना—मिट्टी का बड़ा लोंदा गिरना।
धकधकी—हृदय की घबराहट।
धौगल—दौड़ा हुआ।
धक्कमधक्का / धक्कमधुक्का — भारी भीड़ जहाँ ठेलम ठेल होता हो।
धड़कनी—हृदय की धड़कन।
धड़धड़ / धड़ाधड़ — शीघ्र। लगातार।
धड़कनी का बाहर गिरना—अभिशाप। एक गाली।
धड़ाक धड़ाक—बन्दूक आदि की आवाज।
धड़ाम—ऊँचे से किसी के कूदने या गिरने का शब्द।
धड़फड़ावल—जल्दी में।
धधकना—भड़कना।
धनकारना—फुफकारना।
धनकटनी—धान की कटनी।
धनकुट्टी—धान की कुटाई।
धनकुटनी—धान कूटनेवाली।
धनखेती—धान की खेती।
धनतेरस—कार्तिक त्रयोदशी का पर्व।
धनगार / धनहर — धान वाली खेती।
धनहा—धान वाला खेत।
धनरोपनी—धान रोपनेवाली।
धनी—पति। स्वामी। स्त्री। सम्पन्न।
धपना—मारना।
धपाड़—अपाड़ से छोटा। ढेला से बड़ा मिट्टी का टुकड़ा।
धमधम—एक आवाज।
धमकुचकी / धमाचौकड़ी — दौर धूप।
धमधमाना—पीटना। एक आवाज।
धमधूसर—मोटा। बेडौल (व्यक्ति)।
धमक—गन्ध। महक।
धमार—एक गीत। हँसी-खेल।
धरन—छप्पर की कड़ी रखने की लम्बी लकड़ी।
धरमधक्का—धर्म के नाम पर धक्का। धक्कम-धक्का। व्यर्थ का कष्ट।
धरौंद / धराऊ — रखाऊ। विशेष अवसर पर निकाली जानेवाली वस्तु।
धसना—कीचड़ में घुसना।
धाकड़—काफी मोटा शरीर वाला।
धानी—हरी। रंग विशेष।
धाप—दूरी की एक नाप।
धाबा—ढेव का बीता हुआ टोकरा।
धारा—एक बार का तौल। पाँच सेर का भार।
धाह—ताप। गर्मी।

घिधौर—जमीन का वह भाग, जहाँ वनबैर, काँटा आदि उपजा हो।
घिरकार—धिक्कार।
घिराना—चेताना।
धीआ—बेटी।
धीआ-पुत्ता—बालबच्चा।
धीपल—गरम।
धुइयाँ—धूआँ।
धुंधुर—धुमैल।
धुक्कड़—धूलभरी आँधी।
धुकधुक जलना—मद-मद जलना।
धुकधुकी—हृदय की गति। सन्देह।
धुकमुक—मुकरने की क्रिया। हिचक।
धुतकारना—दुतकारना।
धुथहू—तुतहू बाजा।
धुथूरमुहा—उदासमुख। रोना। (धुथूरमुही स्त्री०)
धुनेठना—केंहुनी से मारना। रूई धुनना।
धुनधान—तोडताड। पीट पाट।
धूर—जानवर।
धूरा—गाडी के पहिया का लौह दन्ड।
धेन—तुरत की बिआई गाय।
धौछा—खराब।
धौंधा—लोदा।
धोअन—धोवन।
धोआ—धोआ हुआ। कोरा नहीं।
धोई—धोआ हुआ दलहन।
धोकड़ा—थैला। (धोकडी—स्त्री०)
धौगना—दौडना।
धौगल—दौडा हुआ।
धौल जमाना—चाँटा लगाना।
धौंस जमाना—प्रभाव जमाना।

न

नँगा-बुचा—निर्धन।
नइहर—मायका। स्त्री का पितृ-गृह।
नउआ, नउवा—नाई। ठाकुर। हजाम।
नओरतन—नव (नौ) सख्या से युक्त। नौ रतन। नवरत्न।
नकटा—(नकटी स्त्री०) कटी हुई नाक वाला। दादर।
नकटी—नाक की मैल।
नक्कू—बडी नाकवाला। अपने को बडा समझनेवाला।
नकबजौनी—नकियाही। नाक बजानेवाली। नाक बजाकर रोने वाली।
नकलाहा—नकल करनेवाला।
नखरा-तिल्ला—नाज। बहानेबाजी।
नखास—जानवरो के बिकने का पेठिया।
नगीच—नजदीक।
नजरी—नजर। टोना।
नथ, नथिआ, नथुनी—नाक का एक आभूषण।
नधना—पशुओ के बोझ का बधन।
नधना-नाधना—पशुओ के नधना (बधन) को बाधना। किसी कार्य को आरभ करना।
नट्टिन—नट जाति की स्त्री।
नड़ोचड़ो—नोच खसोट। अशान्ति।
नदारत, नदारथ—मौजूद नहीं होना (सकल पदारथ, एक पट्टी नदारथ)
ननदोसि—ननद का पति।
ननिआसास—पति की नानी।
नन्हका—बेटा।
नन्हकी—बेटी।
नन्हुआ, ननुआ—छोटा लड़का।
नपना—नापने की चीज।
नफर, नफ्फर—नौकर।
नबोज या नबोझ—दुर्बल, छोटा नया

नीपल—(लीपा हुआ) लीपी हुई जमीन ।
नीमन—उत्तम । श्रेष्ठ ।
नुखुस—रेढ़ । टेढ । छेड ।
नुकाना—लुकाना ।
नूनूँ—लडका ।
नून—नमक ।
नूना—नमकयुक्त ।
नेंबो—नीम्बू ।
नेश्रार—द्विरागमन की तिथि निश्चित कराने की भेंट ।
नेओता—निमन्त्रण ।
नेओता पेहानी—निमन्त्रणादि ।
नेउर—नेवला ।
नेओतहारी—निमन्त्रित व्यक्ति । (नेओतहारिन—स्त्री०) ।
नेग—विवाहादि मे सवासिन नाऊ आदि को दान देने की प्रथा ।
नेगी दस्तूरी ।
नेठो—माथा पर रखने का गोल घिरुआ । गेंडुरी ।
नेमटेम—व्रत-नियम का आडम्बर ।
नोंचा—गोडइती का नेग ।
नोख—अनोखा । चोखा । तेज ।
नोन—नमक ।
नोनगर—अधिक नमक से युक्त ।
नोनचट—नोनी लगी (वस्तु) ।
नोनछाह—लवणयुक्त ।
नोनिया—नोनी लगा । एक जाति । एक साग ।
नोनिश्राह—नोनी लगा ।
नोनी—एक साग । दीवाल का एक रोग ।
नौश्रा—नाई ।
नौन—नह । नख ।

प

पॅखगर—पखवाला ।
पछी—पक्षी ।
पंद्रहियन—पन्द्रह दिन के लगभग ।
परगा—आरी । मागी । घेरा ।
पंसगा—तराजू मे तौल की कमी ।
पइन—पानी के बहाव का नाला ।
पइयाँ—पैर ।
पइला—काठ का पात्र विशेष । नापने का एक पात्र ।
पइलना—सूप से हिलोरना ।
पइंचना—सूप मे फटकना ।
पइसल—घुसा हुआ ।
पउगर मिट्टी—वलुआही मिट्टी ।
पओनिया—आश्रित जन ।
पक्का—गारा ईटा का मकान या कोठा । दृढ । मजबूत ।
पक्की—पूरी कचौडी का भोजन ।
पकठायल—कठोर । कडा । धँसराया हुआ ।
पख—पक्ष ।
पखारना—धोना ।
पगार—ओट का दीवार । घिरावा ।
पचकनवाँ—पाँच छटाक की नाप या तौल ।
पचनोना—पाँच रग का नमक ।
पचकल—दवी हुई (कोई वस्तु) । पचका हुआ ।
पच्चर देना—ऊपर से किल्ली देकर कसना । दृढ करना ।
पचपचाना—पच-पच करके थूक फेंकना ।
पचपची लगना—थूक फेंकने की क्रिया का जारी होना ।
पचौट—आगदाहन । कुडदहिना । फेरा । हथौआ ।
पचभत्तरि—पाँच पति वाली ।
पचमेर—पाँच रग का या प्रकार का ।
पचरंगा—पाँच प्रकार का ।
पच्ची—पच्चर ।
पच्छी—चिडई । चिरगुन । चिड़िया ।
पटदिया—झटपट ।

पटसे—सुरंग ।
पटपेहर—चौखट के ऊपर की पटरी ।
पटना—खेत पटना । सिंचना ।
पटरी—मेड़ । बैलगाड़ी के आगे-पीछे वाली पटरी ।
पटस—भींपा । सिंचाई किया हुआ खेत ।
पड़ुस करना—सोने में मिला करना ।
पटियाना—मिलना ।
पट्टी—तरफ । पेटी ।
पट्ठा—पहलवान । मजबूत । दृढ़ ।
पटुका—वस्त्र विशेष ।
पटोर—वस्त्र विशेष । कपड़ा ।
पटौर—पिरना ।
पठौनी—बिदाई ।
पठरू / पठिया —बकरी का बच्चा ।
पछोरना—अन्न आदि सूप फटकाकर बीनना ।
पढ़ुआ—पढ़नेवाला । विद्यार्थी ।
पढ़ना-गुनना—अध्ययन । मनन ।
पतिया—पत्ता । चिट्ठी विशेष ।
पतिला / पतीला —मिट्टी का एक बर्तन । (पतली—स्त्री०)
पतियाना—विश्वास करना ।
पतुरिया—वेश्या । वेस्या ।
पतौरा—अरुई बेसनादि का पकुआ विशेष ।
पथिया—टोकरी ।
पथियाना—उपलें ईंटादि पाथना ।
पन—जीव वध । बस्ती ।
पनडेहा—पानी का रास्ता ।
पनखोकर—पानी खाकर कमजोर ।
पनसार—खेतों पर पानी डालने की क्रिया ।
पनसोखा—इन्द्रधनुष ।
पनारा—नाली ।
पनिहथा—पानी मिला भात ।
पय—दोष । ऐब ।
पयाहा—दोष युक्त । (पयाही स्त्री)

परछन / परिछन —स्वागत का एक विशिष्ट कृत्य ।
परखे—दृष्टांत द्वारा कथन ।
परखे मारना—व्यंग्य कसना ।
परन—प्रण ।
परस—ताड़ की न सूखित गुठली ।
परतीत—विश्वास ।
परथन—रोटी बेलने के लिये आटा का अंश ।
परनाती—नाती का शिशु ।
परपोता—पोते का शिशु ।
परवरिस—पालन-पोषण ।
परबैतिन / परबैती —व्रतादि व्रत करनेवाली स्त्री ।
परवाना—आज्ञा-पत्र ।
परमागी—आज्ञा ।
परसाद—पुनः प्रसाद खाद्य वस्तु ।
परसौत—प्रसूत का रोग ।
परसौती—बच्चा देनेवाली जच्चा ।
पराव—बड़ी नाली ।
परास्चित—प्रायश्चित ।
परान—प्राण ।
परिकमा—अभ्यस्त होना ।
परिया—वह जमीन जहाँ ईंट पाटी जाय ।
परिपाठा—कुँए के आर-पार रखी जाने वाली लकड़ी जिस पर पैर रख पानी खींचा जाता है ।
पलंगरी—पलंग ।
पलखत—अवसर ।
पलथा मारना—उलट जाना ।
पलथी मारना—पैर मोड़ कर बैठना ।
पलटनिया—पलटी मारना ।
पलटाना—लौटाना ।
पर पलटावा—रिश्ता टूटने पर पुनः सम्बन्ध बना लेना ।
पलवनिया—पालथी मारना ।

पलरा—तराजू का पल्ला ।
पसम—एक प्रकार का वस्त्र ।
पसाना—तरल द्रव गिराना (जैसे माडादि ।)
पसनी—खुरपी ।
पसीमना—पानी का लधार ।
पसीजना—दयार्द्र होना ।
पसेवा—पानी निकलना ।
पसौना—पसाने मे काम आनेवाला कपडा ।
पहिलौठी—पहली बार बिआई ।
पहिरावा—पोशाक ।
पहिरोपना—रोपन का पहिला दिन ।
पाँख—पंख ।
पाँच पचीस—सवा सौ ।
पाँजा—कटनी के अनाजो का बोझा ।
पाख—पक्ष ।
पाठी—बकरी का बच्चा ।
पातर—दुबला-पतला ।
पाथर बुनना—धान के खेत मे बिना जोते-कोडे रब्बी लगाना ।
पारन—व्रत मे उपवास के बाद का पहला भोजन ।
पालो—बैल के कधे पर वाला जुआ ।
पिअर—पीत ।
पिअरी—रोग विशेष ।
पिआव—एक मिठाई ।
पिच्छुल / विच्छुल—काई के कारण फिसलन ।
पिछला—पीछेवाला ।
पिछाड़—जानवर के पिछला पैर बाधने की रस्सी ।
पिछुआरा—घर का पिछला भाग ।
पिट्ठा—पकवान ।
पिठियाठोक—पीछे से तुरन्त (जाना) ।
पिड़ुकिया—मिष्टान्न विशेष ।
पिढ़िया—बैठने की छोटी पटरी ।
पितमरू—सहनशील । वह व्यक्ति, जिसकी भूख मर गयी हो ।
पितरपच्छ—आश्विन कृष्ण-पक्ष ।
पितराइन होना—पीतल का अश किसी द्रव्य मे आना ।
पितपिताना—गुस्सा होना ।
पिपनी—पलक ।
पिपरी—चींटी ।
पिरकी—पान की पीक ।
पिराना—दुखना ।
पिरदाइन—हँसुआ ।
पिलुआ—कीड़ा । मूआदि ।
पिलपिलाहा—डरपोक ।
पिसिया-घसिया—पीसना-कूटना ।
पिसौनी—पीसने का कार्य्य ।
पींड—आहर का घेरा ।
पीनी—पीने का तम्बाकू । खैनी । पिउनी ।
पीरवा—दुख । पीड़ा ।
पुकटायल—अधपका । गदराना ।
पुछार—मान ।
पुतखौकी—एक गाली । बेटा को खाने वाली ।
पुतहू—पुत्र-वधू ।
पुत्ता—चूल्हा के मुह का ऊपरी अश ।
पुत्ती—कदादि का छोटा गोल अश ।
पुनियाँ—पूर्णमासी ।
पुरखन / पुरखा—पूर्वज ।
पुरजी—कागज की टुकडी ।
पुरबे—धान बोने के लिए दूसरी बार हल चलाने की क्रिया ।
पुरुख—पुरुष ।
पुरुवा—पूरब की हवा ।
पुरौता—रस्म (नेग) के समय अनाज द्रव्यादि का दान ।
पूँज—पीज । गाँज । नेवारी का भडार ।

पैटकुनिया—पेट के बल।
पैठारा—बांस की पौठी। (पेटारो स्त्री)
पैठाना—भेजना।
पैठिया—बाजार।
पैवस होना / पेइस होना —तरल द्रव्य का सीपना।
पैहास—बच्चे के पीने पर जानवर के स्तन में दूध उतरना।
पैक—ताजिया (मुहर्रम) के दिन में इमाम साहब की सवारी बनना।
पैहनी—काठ का यंत्र जिससे समाई बनाई जाती है।
पैमाल—हैरान। परेशान।
पैर—मैहूटा के नीचे बैलों के लिए बिछायी फसल।
पैरा—बछिया बल।
पोआ—सांप का बच्चा।
पोकहा—बर, पीपल पाकिड़ आदि का फल।
पोखरा—तालाब। वर्षा के जल से भरा गड्ढा।
पोचारा—चूना की पुताई।
पोटरी—छोटी पोटली।
पोधानी—पैठाना।
पोरा—पुआल। धान का डंठल।
पोला—जूते का भाग।
पोसाओं—पालतू।
पौवी—पेठारी।
पौओमिया / पओमिया / पवनिया —आश्रित जन (नाई-धोबी पवंड़िया आदि।)

फ

फइल—विस्तृत। फैला हुआ।
फक्कड़—मस्त फकीर।
फकफकी—हृदय में कमजोरी लगाना।
फक्की—मूर्ख।
फगुआ—होली। एक गीत।
फगुनहट—फागुन का समय।
फजहति / फजिहत —बेइज्जत।
फटकन—फटकने से निकली हुई वस्तु।
फटकना—साफ करना। धूप से काम करना।
फटकारल—फटका हुआ।
फटाक / फटाकदम / फटाकदे —झट से। तुरन्त।
फटफट करना / फुटफुट करना —आडम्बरपूर्ण भाषण।
फटकदलाली—अनुचित मिथ्या भाषण।
फट्ठा—(फट्टी) बांस की बड़ी फराठी। बांस का फाड़ा हुआ खण्ड।
फटौल / फटोल्हा —दूध का फटा हुआ अंश।
फड़आ—फाड़ा हुआ।
फतिंगा—भुनगा। कीड़ा।
फरका—मिरकी। मछली पकड़ने का बड़ा।
फर—फल।
फरना—फलना।
फरद—प्रत्येक पल
फलना / फलनवा —अमुक
फरफराना—मुलमुल का भाषण।
फरमान—राजाज्ञा-पत्र।
फरसा—शस्त्र विशेष।
फरहर—फुर्तीला। मौका नहीं।
फराठी—बांस की छड़ी।
फरियाना—तय करना।

फलकना— फल जाना ।
फलकल—फुलका हुआ ।
फाँक—फलादि का खण्ड ।
फाँका—खाली । उपवास ।
फाँकी—झाँई । गोता देना ।
फाँट—दो वस्तुओं के बीच खाली जगह ।
फाँडा—टेंट ।
फाँफड़—दरार । खाली जगह ।
फान—स्थूलता, चौडाई आदि का मान ।
फाड़ / फार —हल का लोहा, जो हल के आगे लगा रहता है ।
फाहा—रूई आदि का गोल अंश ।
फिचकारल—खूब फीचा हुआ ।
फिन—फिर ।
फिफकारी—कँपस-कँपस कर रोना ।
फिफियाना—घबराहट से दौड धूप करना ।
फिरंग—खखोरने का लौह खण्ड ।
फिरता—पैसादि का छूट-रूप मे देना ।
फिसफास—बूँदा बादी । पानी का टपकना ।
फींचना—कपड़ा को धोना या साफ करना ।
फुच्ची—छोटा बाल ।
फुज्जल या फूजल—लता वृक्षादि मे पत्ता निकला हुआ ।
फुटहा—भूजने से फूटा हुआ बूँट । फूटा ।
फुटानी—घमड ।
फुबलुंगी—फुनगी ।
फुदना— तागे का झालर ।
फुनगी—सर्वोच्च अग्रभाग ।
फुफकार / फुफकारी —साँप, पशु आदि के मुँह या नाक के नथनों से बलपूर्वक वायु के बाहर निकलने से उत्पन्न शब्द । क्रोध ।

फुफनी— कमर के मध्य मे साडी की चुनट खोसने का स्थान ।
फुरकल—फलका हुआ । मुँह मे चबाकर साँस के जोर से थूकी हुई (वस्तु) ।
फुरफुरायल—जल्दी ।
फुलल—फूला हुआ । खिला हुआ ।
फुलका— आटा उबालकर बनाई गई रोटी ।
फुलकी—एक प्रकार की निमकी ।
फुल्ला—आँख का रोग (फुल्ली—स्त्री.) ।
फुलेल—तेल विशेष ।
फुसुर-फुसुर—बुद-बुद कर बोलना ।
फूहर—वह व्यक्ति, जिससे काम न हो सके ।
फूही—झीसी । पानी की बूँदें ।
फूसर—दब । निकृष्ट ।
फूसर-फासर—गंदा-सदा ।
फेंट—मिश्रण ।
फेंटना— मिलाना । किसी बात को बार बार बोलना ।
फेंटा—मुरेठा ।
फेंटो—सूखा-गोबर ।
फेड़—पेड ।
फेदायल—थका । गुठली पड़ी हुई ।
फेन—फिर ।
फेन—झाग । फेंटना ।
फेर— घुमाव चक्कर ।
फेरा—आगदाहन । कुडदहिना । पचौट । हथौआ । चक्कर परेशानी ।
फेरी— घुमाव ।
फोंक—खाली । खोखला ।
फोंफी—नली ।
फोकचा—फफोला । एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।
फोकराइन—एक अप्रिय गंध ।
फोरन—तरकारी छौंकने मे व्यवहृत जीरा-मेथी आदि पदार्थ ।
फौदारी—फोजदारी ।

बनुसार—धान की मोरी रोपने की समाप्ति ।

बनौरी—नकल बनाना । मेल करना ।

बपखौकी—एक गाली । बाप को खानेवाली ।

बमकना—अचानक लहरना । गुस्सा होना ।

बरई—जाति विशेष । पान बेचनेवाला ।

बरखा—वर्षा ।

बरसी—वार्षिक श्राद्ध ।

बरछा—अस्त्र विशेष । (बरछी—स्त्री०)

बरजात—बदमाश ।

बरती—वह, जो व्रत रहे ।

बरदा—जानवर ।

बरदाना—पशुओं को जोडा खिलाना ।

बरहगुना—कठौती के आकार का गोल पेंदा वाला पीतल का पात्र ।

बरहदरी—एक प्रकार की पालकी । यान विशेष ।

बहरूपिया—मनोरञ्जनार्थ भेष बदल-बदल कर रुपया कमानेवाला ।

बरहमासा—एक प्रकार का लोकप्रिय गीत ।

बरहसिंघा—सींगवाला हरिण विशेष ।

बरहा—कूडी मोटादि खींचने की रस्सी ।

बरादरी—यान विशेष ।

बरिआत—बारात ।

बरिआर—जबरदस्त । मजबूत ।

बरिआरी—बलपूर्वक ।

बरीस—बच्छर । वर्षा ।

बरौंची—सोटनी । गाय की पूंछ के केश से बनाई हुई सोटनी, जिसमे रस्सी आदि सोंटी जाती है (चिकनी की जाती है) ।

बलुई—एक कीडा, जो अनाज के बाल मे पडता है ।

बलुक—बल्कि ।

बसता—कपडा की थैली, जिसमे पोथी कागजादि बांधा जाता है ।

बसना—मिट्टी का जलपात्र । (बिसनी-स्त्री०)

बसहा—जटावाला बैल ।

बसियाना—बासी भोजन खाना ।

बहका—सीकड लगाने के लिये चौकी मे लगी लोहे की अगूठी ।

बहतौनी—कोल्हू मे तेल पेराने की मजदूरी ।

बहराना—बाहर जाना ।

बहारन—बटोरा हुआ कूडा ।

बहिला—न बिआनेवाली (गायादि पशु) ।

बहुरिया—वधू ।

बाँक—भूषण विशेष ।

बाँकी—मिर्च के पौधों मे लगने वाला रोग ।

बाँट—बखरा-हिस्सा । बटवारा ।

बाँझ—बध्या ।

बाँस-बरेढी—धान्य विशेष । छप्पर छौनी ।

बाँसफूल—धान्य विशेष ।

बाँसी—हर में लगी, रस्सी चुनने के लिये बांस की फोंफी ।

बाइ—वायु विकार ।

बाइली—अन्य व्यक्ति ।

बाकल—छाल ।

बागर—फार के ऊपर का बाँस ।

बाछा—बछरू । (बाछी स्त्री०)

बाजी—बैल की चुनौती । बारे मे (सम्बन्ध मे) ।

बाजू—एक आभूषण ।

बाजूबन्द—एक आभूषण ।

बाडी—घर ।

बाता—किवाड के पीछे ठोका जानेवाला लकडी का डंटा ।

बादुर—पक्षी विशेष ।

बाध—गाव के चारो ओर की जोती हुई जमीन ।

बाना—पहिरावा । भेष । अस्त्र विशेष ।

बानी—राख ।

[बाप]पुत—बाप और पूत ।

बापा—बाप । बाबा ।
बापा-खौकी—बाप को खानेवाली ।
बाबाजी—देवता । ब्राह्मण । बुद्ध ।
बामी—मछली विशेष ।
बारना—परहेज करना ।
बारा—बड़ा के बेसन का पकवान जो व्रत में किया जाता है ।
बारिक—ज्योंनार में परोसने वाले जन ।
बारी—पारी ।
बालापुरुष—नदी से आकर बिछाई हुई बालू ।
बासमती—एक प्रकार का उत्तम चावल ।
बासीमुंह—बिना कुछ खाये ।
बिंडा—मुट्ठा । पत्तादिका मंडल । खूंटी का पानी बालने का बोल्मन ।
बिआह—ब्याह ।
बिआहुआ—ब्याहा पति ।
बिआहुती—पुरुष की ब्याही । बिवाह का ।
बिख—विष ।
बिख बगलना—अकथनीय कथन करना ।

बिखधर / बिखगर —विषधर । जहरीला ।

बिखहा—विषवाला ।
बिगहा—जमीन की एक माप ।
बिगाड़—बैर ।
बिचकामा—उपेक्षा करना ।
बिचा—बीजा ।
बिचावर—बीपार्जों को बांधनेवाली रस्सी ।
बिचाली—पुआल ।
बिचाली—बीच की बंसखट्टी ।
बिछुरनी—कपड़ा बुनाई के बाद उसका धुलाया जाना ।
बिछिया—एक बेवर । बोरवमानी की रस्सी ।
बिजाहठ—पुरुषों की बांह का आभूषण ।
बिजे उत्सव में भोजन आरंभ करने की बुलाहट ।
बिजौठा—औरतों की बांह का आभूषण ।
बिजुन—निकट । समीप ।
बिड़वा—इंडुरी घड़े के नीचे रखने की इंडुरी । बिरवा ।
बिड़ार—बीज बोने लायक खेत ।
बित्तामर—छोटा ।
बितनमा—बित्ता भर का । बौना ।
बिहृत—बेइज्जत । नतीजा ।
बिधुनना—बीज को बरबाद करना । नोंच नोच करना ।
बिरवाई—छप्पर की नाली ।
बिरहा—पुरुष द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत ।
बिलटना—बुरी दशा होना ।
बिलमना—देर करना ।
बिलमाना—देर करके रोकना ।
बिलाइकंद—कद् कंद ।
बिलैया—कैवाड़ लगाने की सिटकिनी ।
बिसखोपरा—बुर्ज ।
बिसटी—कोपीन ।
बिसरना—भूलना ।
बिसराम—बिश्राम ।
बिसाइन—अप्रिय गंध ।
बिसुकना—जानवरों का दूध देना बंद होना ।
बिसुकल—दूध न देने वाली गायादि पशु) ।

बिसुआ / बिसुआइन } गंध संबन्धि ।

बिहून—विहीन ।
बिहूबी—एक गाली ।
बिहनौकी—सुबह ।
बिहान—भोर । आनेवाला कल ।
बिहुँअमा—एक हंसी विशेष ।
बीअर—बैर । बिल । ।
बीआ—बीज ।
बीआ—मुश्किल ।

बीझ—घून ।
बीझल—घुना हुआ ।
बीट—विष्टा । लकडी की पतली-गोल आकृति की वनी वस्तु ।
बीरी—वचका । पतौडा ।
बीरो—दवा ।
बीहन—बीज ।
बुकना—चूर्ण करना । मारना ।
बुकनी—मिर्चाई मसालादि का चूर्ण । पिसी हुई वस्तु ।
बुका फाडकर रोना—हृदय फाडकर रोना।
बुचा—कनकट्टा ।
बुट्टी काढना—कपडे पर तागा से चित्र काढ़ना ।
बुड़बक—ज्ञान शून्य ।
बुडना—डूबना । नष्ट होना ।
बुढ़ारी—वार्द्धक्य । बुढ़ापा ।
बुत—डूबा हुआ । चूर । तेजहीन (रग) ।
बुतरु—वच्चा ।
बुतल—बुझा हुआ ।
बुत्ता—झाई । धोखा । शक्ति ।
बुत्तादेना—धोखा देना । झाई देना ।
बुलना—चलना ।
बुलाकी—नाक का आभूषण ।
बूझल—बूझा हुआ । समझा हुआ ।
बूट—अन्न विशेष ।
बूटी—औषधि ।
बूनना—बीज बोना ।
बेंट—मूठ ।
बेंड़ा—किवाड की किल्ली ।
बेंड़ी—हाथ पाँव बाँधने की सिकडी ।
बेंग—मेढक ।
बेख—मिल्कियत । जमीन्दारी ।
बेग—थैला ।
बेगार—आश्रित मजदूर । कमिया ।
बेगारी—बेगार मे ली गई मेहनत । विना मन का काम ।
बेगैरत—बेइज्जत ।
बेजाए—अनुचित । नाजायज ।
बेजान—विना जान का ।
बेटी-बेचवा—बेटी को रुपया लेकर व्याहनेवाला ।
बेढ़ब—बेडौल ।
बेपरद—निर्लज्ज ।
बेतुक—बेमेल ।
बेनिया—वह पाटी, जो आगे किवाड मे दो पल्लो को रोकने के लिये लगाई जाती है । पखा ।
बेपानी—बेइज्जत ।
बेपारी—व्यापारी ।
बेवसाय—व्यवसाय ।
बेवा—विधवा ।
बेभंड—भद्दा । वुरा । असुन्दर ।
बेमार—बीमार ।
बेयार—हवा ।
बेयारफटना—बेवाई फटना । अनुभव होना ।
बेलुरा—बेवकूफ ।
बेस—अच्छा ।
बेसवा—वेश्या ।
बेसाहना—खरीदना । धारण करना ।
बेसुध—बेहोश । सज्ञाहीन ।
बेहाल—व्यग्र ।
बैगनी—रग विशेप । बैगन का पतौडा ।
बैठारू—विना काम का ।
बैदगिरी—वैद्य का रोजगार ।
बैना—मिष्टान या पकवान, जो शुभ कृत्यो के अवसर पर बाँटा जाता है ।
बैमान—स्वार्थवश कर्त्तव्य को त्यागनेवाला । ईमानदार नही ।
बैमानी—[illegible]

भगिन पुतोह—भगीना की वधू ।
भगिनसान—भाग्यवान । भगिना वाला ।
भगिनी—भांजी ।
भचभगा—ढूहा ।
भटकना—इधर उधर घूमना ।
भटको
भटकोई } —एक पौधा, जिसमे छोटा-गोल-मीठा फल लगता है ।
भट्ठा—ईंटों का पजावा ।
भतखई—भात खाने का व्यवहार ।
भतार—पति ।
भतीजा—भाई का लड़का । (भतीजी स्त्री०)
भदई—भादो मे होनेवाला अनाज ।
भदरा—अपशकुन । एक नक्षत्र ।
भदराहा—मनहूस ।
भदवा—भादो । पचका । ज्योतिष के अनुसार दिन का एक योग ।
भदेश—बुरा देश । विदेश ।
भनकना—कहना । बहुत मक्खी लगना । चुगली करना ।
भनभनाना—गूंज के साथ बहुत मक्खी लगना । भन भन शब्द करना ।
भनभनी—बुरा लगना ।
भनरभनर—बुद-बुद शिकायत करना ।
भनसा—रसोई घर ।
भनसिया—रसोइया ।
भफाना—उबालना । भाफ निकलना ।
भभकना—आग की लपट का जोर से ऊपर उठना ।
भभकल—भभका हुआ ।
भभरा—गीले आंटे या बेसन से बनी हुई पूड़ी विशेष । उलटा । छिलका । बचका । पतौरा ।
भभा के हँसना—ठहाका मार कर हंसना ।
भभूती—राख । भस्म ।
भरता—सब्जी को पीसकर तैयार किया हुआ व्यञ्जन ।
भरती—नियुक्ति ।
भरभर—बेलग । व्यर्थ ।
भरभराना—बिना लाग की चीज का एक-एक कर गिरना ।
भरमना—भटकना ।
भरसक—शक्ति भर ।
भलुक—बल्कि ।
भल्ले—खूब ।
भलेजी भले—खेलने का एक बोल विशेष ।
भाँग—एक नशीली बूटी ।
भांगल—टूटा हुआ (फूटल भांगल) बरतन
भांजना—किसी अस्त्र का घुमाना । व्यर्थ की शूखी दिखलाना ।
भांजी—चुगली । बाधा डालनेवाली बात ।
भाँटा—बैंगन का एक प्रकार ।
भाँट—विदूषक । गाय का एक रोग ।
भाँड़ा—बरतन ।
भाँड़ी—मिट्टी का बड़ा मटका ।
भाँयभाँय—निर्जनता की ध्वनि विशेष ।
भाँयभाँय करना—रोना । सूना ।
भाउली—वह जमीन, जिसकी उपज मालिक और रयत आधा आधा बाँटते हैं ।
भाठा भिड़ाना—सयोग बैठाना ।
भाड़—भूंजा भूनने की भट्ठी ।
भाड़ा—किराया । मकान बनाने मे काम करने का मचान ।
भादो—बरसात का एक महीना ।
भाभा—चावल की टूटी कन्नी या बुकना ।
भिंगाना—भिगाना ।
भिट्ठा—वह जमीन, जिस पर धान न होकर दूसरा अनाज हो ।
भिठारा—चौमास । रब्बी के लिये सुरक्षित खेत ।
भितरिया—परदेवाला ।
भिनकना—मक्खी लगना ।
भिनभिनाना—घृणा करना ।
भिनसरवा
भिनसार } —भोर
भिन्नाना—खिजलाना । सिर चकराना ।

मउनी—एक प्रकार की टोकरी।
मकइ—अन्न विशेष।
मकर करना—नकरा काढ़ना। काम से जी चुराना।
मकरचांदनी—बादलों मे छपी हुई चांदनी, जो दिन का भ्रम उत्पन्न करे।
मकरा—कीड़ा विशेष। (मकरी—स्त्री०)
मकरात—मकरसंक्रान्ति के बाद का दिन।
मकरी—लाठा के नीचे की लकड़ी।
मकुनी—एक प्रकार के छोटे आकार की जाति का हाथी।
मकोला—पानी मे हल्का भिगाया हुआ गउत का भूना।
मखना—जानवरों का पालखाना।
मगज—मस्तिष्क।
मगरमच्छ—एक जानवर। कंजूस।
मगहर—एक देश विशेष। मगह।
मगही—मगह की भाषा। मगह मे उत्पन्न होनेवाले अन्न पुष्प फलादि।
मचमचाना – मचमच करना।
मचान—ऊँचे पर बांधा हुआ बैठने या वस्तुओं के रखने का स्थान।
मचिया—बैठने की छोटी चौकोर बिनी हुई वस्तु, जिस पर महिलाएँ बैठती हैं।
मछरखौका—मछली खाने वाला।
मछरदानी—मच्छर को रोकनेवाली जाली।
मजगूत—दृढ़। मजबूत।
मजन—मेलन।
मञ्जन—दंत मंजन।
मजीरा—वाद्य यंत्र।
मजूर, मजूरा—मजदूरा।
मटका, मट्ठका—मिट्टी का बड़ा बरतन। (मटकी—स्त्री०)
मटपर—आग निकालने का मिट्टी का पात्र।
मटकोर—विवाह के पूर्व मिट्टी कोढ़ने का एक रस्म।
मटिआना—मकर करना। मिट्टी लगाना। काम से जी चुराना।
मटिआ तेल—किरासन तेल।
मटिगर—मिट्टी से युक्त।
मटियामेट—मिट्टी मे मिलाकर बरबाद करना।
मट्ठक—मुकुट। माथे पर का एक पहिरावा (मट्ठकी—स्त्री०)
मट्ठा—तक्र।
मठमगरा—विवाह के समय का एक रस्म।
मठमहनी—मट्ठा महने की मथनी।
मड़ई—ओसारा।
मड़कना—टूटना।
मड़का—रखवारी करनेवाली झोपड़ी।
मड़मड़ाना—मड़मड़ शब्द करना।
मड़वा—विवाह का मण्डप।
मड़सटका—मड़गर भात। मरभञ्जू भात।
मड़ुआ—निकृष्ट जाति का एक अन्न।
मढ़ना—चमड़ा लगाना। जिल्द लगाना। मोच को मलकर ठीक करना।
मतवरी—रईसी। अमीरी।
मथानी—महने का डंटा विशेष।
मधुमाछी—मधुमक्खी।
मधुरी—धीरे-धीरे।
मधेसिया—मध्यदेशीय। एक जाति विशेष।
मनगर—मनसे। प्रसन्न चित्त।
मनमोटाओ—मनमुटाव। विरोध।
मनमनायल—मनोयोग पूर्वक। इच्छा से।
मनसुवा—उत्साह। स्फूर्ति।
मनरा—पहिया के बीच की गोल खोखली लकड़ी।
मनिआर, मनिआरा—मणिवाला सांप।

मनुषदेवा—एक देवता विशेष ।
मनेमने—मन ही मन ।
ममहर—मामा का घर ।
ममिया सास—पति की मामी ।
मरकुटाह—पिनौना । दुबला ।
मरखाह—मारनेहार । मारनेवाला (जानवर) ।

मरखोरा / मरखोरी — एक शकुनसूचिका । उपेक्षा ध्वनि ।

मरछिमार—वह स्त्री जिसका बच्चा बराबर मर जाता हो ।
मरदे—मर्दों को सम्बोधन करने की ध्वनि ।
मरमूठ—हठ ।
मरहन्न—मरा अन्न ।

मरिच / मरिचाई —मिर्च ।

मरुआयल—मुरझाया हुआ । मसुआया हुआ ।
मरेछ—एक प्रकार का निकृष्ट अन्न ।
मसखा—बाँसी के ऊपर लगी मक्खियों जैसी सुन्दर लकड़ी जिसमें रस्सी बाँधी जाती है ।
मस्हिया—कसोसिया । मसिया ।
मसीहा—एक प्रकार का मीठा पकवान ।
मसकना—फटना ।
मसकल—मसका हुआ ।
मसफूरा—दाँत के पीछे का चमड़ेदार अंग ।

मसहरी / मुसहरी —एक विशेष प्रकार का बड़ा पलंग ।

मसागत—कष्ट ।
मसान—श्मशान ।
मसास—पेट में बाँधी हुई रोकड़ी ।
ममाखची—मधान होनेवाला ।
मसुआमा—धान साबी आदि का सूखना ।
मसोमात—(मोहमात) विधवा । दुरी ।

महग—महँगा ।
महँगरी—महँगी । वस्तुओं का ठीक दाम में बिकना ।
महतों—कुछ जातियों की उपाधि ।
महमह करना—सुगन्ध करना । अच्छी गंध फैलना ।
महरा—कहार । बोझ ढोनेवाला ।
महाउथ—महावत ।
महाजनी—लेन देन का काम ।
महावर—आलता ।
महादे—महादेव ।
महाफा—पालकी । यान विशेष । डोली ।
माइ—लड़की । बच्ची ।
मांग—सिर के बीच केश के पास का अंश ।
माँगन—मुखिया । सरदार ।
माँजना—मसलना ।
माँजर—मंजरी ।
माँझिल—मंझला । बड़ा छोटा के बीच का ।
माँड़—भात का पसावन ।
माँड़ी—माड़ से लेप किया हुआ (वस्त्र) ।
माउग—स्त्री । पत्नी ।

माछ / माछी —मछली ।

माजूफल—एक औषधि का फल ।
माम्हा—छिपाया के ऊपर की लकड़ी ।
माट—मीठा रोट । बड़ा पकवान ।

माटि / माटी —मिट्टी ।

माठा—भुना हुआ चीना ।
मातल—मद चढ़ा हुआ । मत्त हुआ ।
मातदिल—न गर्म न ठंढा ।
मातबर—धनिक । रईस ।
मातबरी—रईसी ।

मातल—डूबा हुआ। नशा मे चूर।
माथा—सिर।
माथा झुकाना—प्रतिष्ठा करना। नमस्कार करना।
मान्दर, मन्दरा, मानर—ढोल के आकार का बाजा।
मानुस, मानुख—मनुष्य।
माय—माँ।
माल—धन।
मालकाना, मालिकाना—मालिक का।
माल-जाल—गाय बैल। पशु धन।
मास—मिल्कियत। मास।
मासूल—भाडा।
माहुर—विष।
मिंझायल—बुता हुआ।
मिंझराना—मिलाना।
मिंझरावन—कई प्रकार का मिला हुआ अन्न।
मिआद—अवधि।
मिचकारना—माज माज कर फीचना।
मिट्ठा—मधुर। सुस्त।
मिनती—हाथ जोडना। निवेदन।
मिनहा—मोजरा।
मिरकुटाह—दुबला। घिनौना।
मिरगछाला—मृगचर्म।
मिरगी—एक रोग। फरका।
मिरजइ—अंगाच्छादन। एक पहिरावा।
मिलान—मेल। तुलना। भेंट।
मिलुआ—मिश्रित।
मिसरी—चीनी का एक-रूपान्तर।
मिसिर—ब्राह्मण की एक जाति (मिसराइन-स्त्री)।
मिस्सी—दात मे लगाने का चूर्ण।
मीठा—सुस्त। मीठी वस्तु।
मीत—मित्र।
मुँगड़ा—(मु गडी-स्त्री०) खूँटादि ठोकने का काठ का हथौडा।
मुँह आना—मुँह फरना। एक रोग।
मुँहचूर—धान जब कि थोडा ही पीटा गया हो।
मुँहगर—वाचाल। मुँहवाला।
मुँहचोर—बोलने मे सकोच करनेवाला।
मुंहछुट—निर्लज्ज। बकबादी।
मुंहजोर—तेज मुँह का।
मुँहदुब्बर—दीन। कमजोर। सकोची।
मुँहदेखी—दूसरे का मुंह देखकर।
मुँहदेखौनी—मुँह दिखाई।
मुँहफट—निर्लज्ज।
मुँहमून्दा—जिसका मुंह मुन्दा हुआ हो।
मुँहामुँही—झगडा। बकवाद।
मुँहलगुआ—मुँहलगा बोलनेवाला।
मुँहलुकान—तडके। भोर।
मुअल—मरा हुआ।
मुआर—धान, जो पकने के पूर्व सूख जाता है।
मुक्का—मुट्ठी।
मुक्कामुक्की—परस्पर मार पीट।
मुकमास, मुकवास—मोहरी। जानवरो के मुँह के चारो ओर ऊपर बाँधी गई रस्सी।
मुखपात—कपडे का बढिया मुँह पर का हिस्सा।
मुखिया—प्रधान।
मुगदर—मूग की मिठाई। पहलवानो के भाजने की मु गडी।
मुट्ठी—मुष्टि।
मुट्ठी मे—वश मे।
मुठिया—मुट्ठी के आकार का। मुट्ठी भर अनाज का प्रति दिन ...

मुड़न—मुण्डन संस्कार।
मुड़ल—मुड़ा हुआ।
मुड़ी—मुण्ड।
मुड़वारी—सिरहाना। मुंडेरा। वह पार्श्व जिधर किसी पदार्थ का सिरा हो।
मुतना—अधिक मूत्रत्यागी। (मुतनी-स्त्री)
मुनगा—सहिजन। एक पेड़ की सब्जी।
मुमना—बन्द करना।
मुमवाना—बन्द करवाना।
मुरछना—लोहे की गर्म नोंक को पानी में बुझाना।
मुरघटी—श्मशान।
मुरदा—शव।
मुरदार—कमजोर।
मुरदारी—लाश का बेपाख।
मुरी—सिर। मूड़ी।
मुसरा—मूसल। कटहलादि के भीतर की कड़ी वस्तु।
मुसहर—जाति विशेष।
मुसहरा—मासिक शुल्क।
मुसहरी—बड़ा पलंग।

मुसकना }
मुसकाना } —हँसना।

मूड़न }
मूड़ना } —मुण्डन संस्कार।

मूड़ी—मुण्ड। माथा।
मूत—पेशाब। मूत्र।
मूनना—बंद करना।
मूस—चूहा।

मूसर } कटहल के बीच की कड़ी वस्तु।
मूसरा } मूसल।

मूर—मूलधन।
मेआन—तलवार की खोली।
मेआना—एक प्रकार की डोली।
मेटाना—मिटाना। हटाना।
मेमना—बकरी का बच्चा।
मेमियाना—बकरी की बोली। मैं-मैं करना।
मेरछुन—कपास में मिश्रित छाँटने योग्य निकृष्ट कण।
मेराना—बरहम में चावल या दाल डालना।
मेही—महीन।
मेही मिसीर—चालाक। चिकना।
मैया—माता।
मैलुआ—मक्का। कंजूस।
मैलहन—तेल घी आदि का जमा हुआ मैल अंश।
मैलचाहा—गंदा वेश। कुटिल।
मैलहा—कंजूस। गंदा रहनेवाला।
मैखुआ—मेख मेख पर कंजूसी करनेवाला।
मोकरी—निमित की हुई जमीन।
मोगल—मुसलमान की एक जाति।
मोच—अंग का मुरकना।
मोछ—मूँछ।
मोछामोछी—विरोध। बकवास।
मोजरा—मिलान। नाच विशेष।
मोट—एकसाथ (मोट रकम)। पानी खींचने की चमड़े की बाल्टी।
मोटका—(मोटकी-स्त्री) मोटाया हुआ व्यक्ति।
मोटरी—गठरी।
मोटाई—स्थूलता।
मोटामोटी—लगभग। अन्दाजन।
मोटिया—गठरी ढोनेवाला।
मोटियाँ—जुलाहे का बुना वस्त्र विशेष।
मोढ़ा—काठ का स्टूल।
मोतीचूर—लड्डू।
मोथा—एक घास।
मोकाशिम—अधित।

मोम—मधुमक्खी के छत्ते से बनायी हुई वस्तु। घी।
मोमजामा—गाढा-मोटा कपडा विशेष।
मोरहन—उन अनाजो की पहली फसल, जो दो बार फसल देते हैं।
मोरान—पानी पटाने मे करहा खोलने और बद करने का स्थान।
मोरी—पौधो को उखाड कर दुबारा लगाने के पूर्व का पौधा।
मोलमोलाई—मोलजोल।
मोलाना—क्रय विक्रय की प्रारम्भिक क्रिया। दामसाठ करना।

मोहनमाला, मोहरमाला—मूगा युक्त मोने की माला।

मोसकिल—कठिन।
मोस्तैद—तत्पर।
मौकूफ—बरखास्त। निष्कासित।
मौगा—स्त्रैण। माउग। स्त्री जैसा व्यवहार करनेवाला।
मौगमेहरा—स्त्रैण। मौगडा।
मौनी—टोकरी।
मौसी—माता की बहिन।
मौरुसी—खानदानी।

य

यजमान—यज्ञादि कर्त्ता।
यज्ञ—स० याग।
यतन—स० प्रयास।
यम—यमराज।
यव—स० जओ।
या—अथवा।
याने—अर्थात्।
येही—यही।
योंहूँ—ऐसे ही।

र

रगनिहार—रगनेवाला।
रगरेज—वस्त्रो को रगनेवाला।
रंगसाज—रग का काम करनेवाला।

रँड़खेप, रँडखेपा—वैधव्य का जीवन (बिताना)।

रंदा, रन्ना—बढही का एक औजार, जिससे काठ को चिकना किया जाता है।

रंधुआ—सिकाया हुआ।
रइनि—रात।
रउटि—तम्बू।
रउदा—धूप।
रकम—रुपया। अन्न। माल।
रकसा—रिक्शा।

रखवार, रखवारा—रक्षक।

रगतोड़ना—नस मे आघात पहुँचाना।
रगेदना—खदेरना। पीछा करना।
रगेरग—नस-नस मे।
रजपूत—क्षत्रिय। राजा का लडका।
रजाई—दोलाई।
रड़हा—राड के योग्य।
रतिगर—रात रहते।
रतोवा—दही मे पकायी हुई सब्जी।
रतौन्धी—आँख का एक रोग।
रपट—अधिक दौड। रिपोर्ट।
रवाइस—आतिशबाजी।
रवानी—तेजी। रफ्तार। गति।
रमानी—कहारो की एक जाति।
रमुनिया—रगून का (चावल)।
रसनचौकी—वाद्य विशेष।
रसना—भीगना। पेहम होना।
रस्सा या रस्सी—डोरी।
रसरी—डोरी।

रसरी लगाना—फंसरी लगाना। फाँसी लगाना।
रहट—पानी पटाने का मालियों का एक यंत्र।
राँगा—एक धातु।
राँड़ } —विधवा। मगरालू।
राँड़ी }
राँड़ी-बेटमारी—एक गाली। गाली गलौज।
राँधा—पकाया हुआ।
राकस—एक वस्तु विशेष।
रासी—हाथ में बाँधने का तागा विशेष।
राज—मकान बनानेवाला मिस्त्री।
राजपाट—राज्य।
राढ़—निम्न वर्ग के लोग।
राढ़मोढ़—निम्न श्रेणी का।
रातबिरात—डरावनी रात्रि।
रातारात—रात ही रात। रात्रि में ही।
रिंगाना—खेत में दौड़ाना।
रिआया—प्रजा।
रिमा झिमाकर—किसी प्रकार।
रिकाब—घोड़े पर चढ़ने का पायदान।
रिधाना—बोलने में गले की आवाज में रुक जाना।
रिआसा—एक गाली।
रिझा—वर्तनादि का तेल घी से चिकना होना।
रिवाना—अभ्यस्त होना।
रिब रिब—तिक्त स्वाद।
रिम रिमी—तिक्त स्वाद का अनुभव होना।
रीछ—भालू।
रीझना—प्रसन्न होना। आसक्त होना।
रीझल—आसक्त।
रीठा—एक फल जो कपड़ा धोने के काम में आता है।
रीन—कर्ज।
रील—तागे की अंटी।
रीस—क्रोध।
रीसखीस—क्रोध।
रुकना—ठहरना।
रुख—स्वभाव। तरफ।
रुखानी—बढ़ई का एक खुरपी जैसा औजार।
रुखी—गिलहरी।
रुचिगर—स्वादिष्ट।
रुधना—रुकावट। घेरना। बंद करना।
रुधना-रुँधना—रुकावट गाम्ना। अर्थहीन काम।
रुनझुन—झनकार।
रुपौसा—रुपहला।
रुमाली—लोटा। रुमाल जैसा।
रुसना—अप्रसन्न होना।
रुसनी—रूठनेवाली। (रुसना—पु)
रुसी—माथे की मैल।
रुखा-सूखी—रोखा-फीका
रुमा—कर्ज।
रूख—पेड़। ईख। केतारी।
रूखा-सूखा—बिना तेल घी मलाई मीठादि के (भोजन)।
रूपा—बढ़िया चाँदी।
रेंगनी—कंटकारी। एक काँटेदार पौधा।
रेंगा—बच्चा।
रेंगाना—खेत में दौड़ाना हैरान करना।
रेंड़—एक बड़ा पौधा जिसके बीज से तेल निकाला जाता है।
रेगनी—कंटकारी। एक कंटीला पौधा जो औषधि के काम में आता है।
रेघ—स्वर।
रेघा—निशान। चिह्न।
रेघाना—स्वर को अनुयुक्त करना।
रेत—बलुआही मिट्टी।
रेतना—रगड़ना।

रेती—किसी वस्तु को रगडने का लोहे का औजार।
रेवाज—रीति।
रेस—ईर्ष्या। डाह।
रेसम—वस्त्र विशेष।
रेसाही—ईर्ष्यालु स्त्री।
रेसा-डाही—द्वेष।
रेह—एक प्रकार की मिट्टी, जिसमे क्षार मिला रहता है।
रेहल—काठ का छोटा-चौडा स्तभ, जिस पर रख कर बडी पुस्तक पढी जाती है।
रेहड़ा—एक विशेष प्रकार की जमीन, जिसमे धान नही होता।

रइन, रैन—लडाई

रैअती—रैयत का।

रैनि, रैनिया—रात।

रोंगटा—रोम।
रोआव—प्रभाव। तेज।
रोक—घिरावा।
रोक-टोक—अवरोध।
रोख—रुख।

रोगहा, रोगाहा—रोगी।

रोगन—तेल-घी आदि।
रोज—नित्य।
रोट—रोटी जैसा बना मीठा पकवान।
रोड़ा—ढेले का छोटा टुकडा। (रोड़ी—स्त्री०)
रोज—नित्य
रोजगार—व्यापार।
रोजहा—मजदूरी। प्रतिदिन का।
रोनी-धोनी—रोने वाली।

रोपन, रोपा—धान रोपने का कार्य।

रोपनी—धान रोपनेवाली। रोपन-कार्य।
रोबदाब—प्रभाव।
रोमन-धोमन—रोना-धोना।
रोस—क्रोध।

रोसकद्दी, रोसगद्दी—विदाई।

रोसाहा, रोसाही—क्रोधी।

रौदा—धूप।
रोहनिया—रोहणी नक्षत्र का।
रोहू—एक प्रकार की मछली।
रौ—गति। चाल। वेग।
रौदा—धूप।
रौदायल—धूप से आया हुआ।
रौदियार—धूप से युक्त।
रौनक—तेज। रग।

ल

लंग—पैर का लंगडापन।
लंग मारना—पैर का लगडाना।
लंगट फाट—सिफला। झूठा दिखावा करनेवाला।

लंगटा, लंगटाहा—बदमाश। निम्न वर्ग का। (लगटी-लगटाही—स्त्री०)।

लगड़ाना—एक पैर से लगडाकर चलना।
लगड़ा—एक पैर से हीन (लगडी—स्त्री०)
लंगोटा—काछा।
लंगोटी—कोपीन।
लंभ—दूसरे के खेत मे पशु को हकाने का कार्य।
लउँडी—दाई।
लउकना—सूझना।

लदफदायल—पूर्ण गर्भावस्था मे ।

लदफुद
लदबुद } —फलफूल से पूरा ।

लदभदायल—पशु आदि का गर्भ पूरा होना ।

लधधध—जल्द बिआनेवाली ।

लपक—तेजी से (दौडना) ।

लपकना—झपट कर चलना ।

लपटना—किसी के शरीर मे चिपटना ।

लपसी—आटे आदि का पकाया हुआ घोल ।

लफन्दर—वदमाश ।

लफाना—हाथ वढाना ।

लबना—मिट्टी का लम्बा वर्तन । (लवनी—स्त्री०)

लबड़ा—झूठा । (लवडी—स्त्री०)

लबलब—जल्द-जल्द (वोलना) ।

लबर-लबर—विना समझे जल्द जल्द करना ।

लबलबायल—किनारे तक भरा हुआ (वर्तन-नदी आदि)

लबलबही
लबलबाही } किसी कार्य मे विना समझे वूझे अग्रसर होने वाली ।

लबार—चोर-लबार वर्ग का । निम्न ।

लमका—लम्बा वाला ।

लमकी—लम्बा आकार वाली ।

लरजर—गोतिया-नैया । रिश्तेदार ।

लरतांगर—चगभग । अस्त व्यस्त ।

लरबर—ढीला ।

लरहा—जिसके मुँह से अधिक लार चलता हो । (लरही—स्त्री०)

ललकल—हुलसा हुआ । उत्कण्ठित ।

ललकना—इच्छा रखना । ललचना ।

ललका—उत्साहित । लालवाला । लाल रंग का ।

ललबबुआ—दुलारा । वच्चो को प्यार की पुकार ।

लसगर—लस से युक्त ।

लसलस—शुष्क नही । चिपकने वाला ।

लसया—पेड से निकलने वाला रस (गोद) ।

लस्सी—घाव आदि की छूत ।

लसियाना—लग-लस होना । खराव होना ।

लहना—तकाजा । वकिऔटा ।

लहरना—जलना ।

लहर वरना—झिलमिली लगना । आवेगयुक्त क्रोध होना ।

लहकल—गर्म । धीपा हुआ ।

लहठी—लाख (लाह) की चूडी ।

लहबर—चोगा ।

लहरल—खूब लहकता हुआ ।

लहसन—शरीर मे एक प्रकार का दाग ।

लहसना—खुशी होना ।

लहास—लाश ।

लहसल—प्रसन्न चित ।

लहसुनिया—लहसुन जैसा ।

लहुक—लेना ।

लहुरा—प्यारा । छोटा । लहुरी—स्त्री० ।

लहेरी—घुमरावदार । एक जाति ।

लहेरिया—घुमरावदार ।

लांगड—लगडा ।

लाँघ—किसी वस्तु का डेग के भीतर पडना ।

लांघना—किसी वस्तु को पार कर डेग वढाना ।

लाग—लगाव । अनुचित सम्वन्ध (लाग-फाँस)

लाग लगना—लगाव लगना ।

लाट—एक खम्भा विशेप ।

लाठा—पानी पटाने का वास ।

लाठालाठी—लाठा और लाठी ।

लाठी लठौअल—लाठी द्वारा मार पीट ।

लावा धान होना—गुस्सा से तमतमाना ।

लावा—अन्न की फूटी हुई दशा ।

लावा धक्का—सम्वन्ध । रिश्ता-नाता ।

लाव लस्कर—सम्वन्धी जन ।

लार—मुँह का पतला द्रव ।

खासदेस—खूब बाक ।
खाही—पेड़ (पीपलादि) में लगनेवाले कीड़े का लगना । एक कीड़ा विशेष जो मद को खराब कर देता है ।
खिखाना—ले आना ।
खिआवा—घुगाहट ।
खिखन्त—लिखने का । लिखा हुआ ।
खिखुआ—लिखनेवाला ।
खिपखिप—चुकडा । कृश ।
खिट्टी—आटे की मोटी रोटी ।
खिलकस—लकता हुआ । तरसा हुआ ।
खिरहुआ—हाथ का अग्र भाग ।
खिरहुआ खुयोना—हाथ का अग्र भाग बोरना । किसी काम में पड़ जाना ।
खीक—निर्धारित पतली राह ।
खीख—माथे का पू ।
खीद—पशुओं का मल ।
खीलकण्ठ—नीले रंग का कण्ठ और पर वाला एक पक्षी विशेष ।
खीखासाभा—चोट के कारण पड़ा लाल काला दाग ।
खुड़ा—चंडा । कपड़े का गोल पटा चिटा चिथड़ा ।
खुंडियाना—लुंडी बनाकर लपेटना ।
खुआठी
खुकाठी } आग की जलती हुई लकड़ी ।
खुधाह—छिपा हुआ ।
खुचक्कड़—बदमाश । लफंगा ।
खुचंगाड़—लुच्चा । बदमाश । लम्पट ।
उचक्का ।
खुपा—धोखा देनेवाला । (लुच्ची—स्त्री)
खुबी—बौनी । एक फल ।
खुपछुप करना—एक आवाज ।
खुभना—किसी चीज पर टूटना ।
खुदकना—लुढ़कना ।

खुची-पुची—चिपट जाना ।
खुदुर-खुदुर—मधुरी चाल ।
खुधधुध—फलफूल से भरा पूरा ।
खुरखुर करना—कुछ न कुछ काम करना ।
खुरगर—बुद्धिवाला ।
खुरधुर—मक्कार ।
खुरखुर—ढीलढालवाला ।
खुलुआना—किसी वस्तु के लिए ललचना या अतृप्त रह जाना ।
खुलुआयल—अतृप्त ।
खुमू—बकरी का बच्चा ।
खुहखुह—खूब कोमल पत्तों से युक्त ।
खूंझ—हाथ पैर से हीन ।
खूक—गर्मी की लू ।
खूकवारी—डंटे में बाँधी हुई मशाल ।
खूक लगना—गर्मी से आक्रान्त होना ।
खूर—मशाल । ज्ञान ।
खूरबुध—बुद्धि । ज्ञान ।
खूलखुत्थू करना—किसी को मूर्ख बनाना ।
खेंड़
खेड़ा } —लेंडी । लींदी । विष्ठा ।
खेंड़ियाना—जानवरों के पेट में बच्चा मर जाना ।
खेंड़ी—जानवरों की बेमारी ।
खेटावल—गंदा ।
खेई—आटे का पकाया घोल ।
खेड़ियायल—मरा हुआ बच्चा वाला जानवर ।
खेदा—पेंदा । पेट ।
खेदाह—अधिक बड़ा लेदावाला ।
खेप
खेपन } —मोला द्रव जिससे लीपने का कार्य होता है ।
खेवा—गीली भूमि में रोपण-कार्य । वर्तन के पेंदे का लेप ।
खेवा लगाना—एक प्रकार से बीज बपाना । वर्तन पर लेपन करना ।

लेवार } —दीवार पर मिट्टी का छोप लगाना ।
लेवाड }

लेवारनो—दीवाल को मिट्टी से चिकना करना ।

लेवाल—माल खरीदने वाला ।

लेरू—गाय का बच्चा ।

लेहू—रक्त । खून ।

लेहुक—लो ।

लम्प } —लालटेन ।
लम्फ }

लैन—सीधी लकीर । पंक्ति ।

लैसन्स—कारवार का प्रमाण पत्र ।

लैस—हथियार युक्त । कपडा पर लगाने का फीता ।

लोंदा—गीली मिट्टी का पिंड ।

लोइया—गूंधे आटे की लोई ।

लोकना—याद कर लेना । बीच मे ही ले लेना ।

लोकदीन—वर या कन्या के साथ जानेवाली दाई ।

लोखड़—नाई का थैला, जिसमे हजामत के औजार रहते हैं ।

लोच—लचीलापन ।

लोटकी—छोटा लोटा ।

लोटन—एक कबूतर ।

लोटनी—एक सर्प की जाति का छोटा जतु ।

लोटपोट—हंसते हंसते अस्त व्यस्त हो जाना ।

लोटायल—लुघडा हुआ ।

लोढल—टूगा हुआ ।

लोढा—(लोढ़ी-स्त्री०) पत्थर का टुकडा ।

लोढना—टुगना । बीनना ।

लोथ—लाश । भारी ।

लोथराह—भारी ।

लोर—आंसू । मालपूआ का घोल । कान का निचला भाग ।

लोरिक—एक लोक नायक, जिसके नाम पर एक गाथा गीत प्रचलित है, जिसे लोरकाइन कहते हैं ।

लोरी—शिशु गीत ।

लोल—चोंच ।

लोल्हा-भोल्हा—प्यारा । दुलरुआ (बालक) ।

लोहंडा—छठ पर्व का पहला दिन ।

लोहँड़िया—इतर बिरादरी का ।

लोह्यिा—लोहा का । खोटा सिक्कादि ।

लोहराइन—मछली की गध ।

लोहलंगड—भारी । मोटा ।

लौंड़ी—दासी ।

लौआ } कद्दू ।
लौका }

लौकना—सूझना ।

स

सॅइतना—सहेजना । किसी वस्तु को सहेज-कर रखना ।

सॅउपना—सौंपना ।

सँउसे—समूचा ।

सँगारना—जमा करना ।

सॅघाती—साथी ।

सॅघे—साथ मे ।

सँजम—सयम । परहेज ।

सँझा—सध्या ।

सॅझामाई—सध्या की देवी । (अधिष्ठात्री) ।

संझिला—बडे और छोटे के बीच की सन्तान ।

संझौत } —सध्या का प्रतीक (दीपक) ।
सझौती }

संसहीन } —कम पैदगर । बरक्कत नही देने वाला ।
सखिहीन }

संसारना—मारना । किसी वस्तु को ऊपर

सकत—संकीर्ण । छोटा ।
सकना—समर्थ होना ।
सकबा } सकना —घनी आबादी से युक्त ।
सकपक—पसीना से परेशान ।
सकरात—मकर संक्रांति ।
सकसकाना—पसीना निकलना । परेशान होना । हिचकना ।
सकारना—स्वीकार करना ।
सकोरा—मिट्टी का एक कटोरा या पुरवा ।
सखरा—कच्ची रसोई (दाल भात रोटी) ।
सखरी—कच्ची रसोई । पूजा ।
सखिया-सखेहर—छोटी गाय ।
सखुआ—साल का वृक्ष या लकड़ी ।
सगबग—सराबोर ।
सगर } सगरो —सब जगह ।
सगहा } सगाहा साग वाला । साग की जाति का ।
सगही } सगाही —सगाई कर के लायी हुई ।
सगाइ—विवाह के पूर्व की एक रस्म । विधवा विवाह की एक रीति ।
सगुन—शकुन । शुभ । शुभारम्भ ।
सगुनिया—अच्छा लक्षण वाला ।
सटक—हुक्का जिसमें नरचा लगा रहता हो ।
सटका—छड़ी । छेकुनी (सटकी—स्त्री) ।
सटकार—पतला । सलीका ।
सट्टा—पेड़ में काटा लगाकर पौधा बढ़ाने की क्रिया । इकरारनामा ।
सट्टा-पट्टा—सौदा । संयोग । युक्ति ।
सट्टी—बाजार । पैठिया । मंडी ।
सड़ना—किसी चीज का सड़ना ।
सड़सी—लोहे का एक औजार ।

सड़ाइन—सड़ने की गंध ।
सतगामा—सातगाय वाला ।
सतजुग—सतयुग ।
सतधर—हल के पीछे वाले हिस्से में स्थित कील जो उसके बोझ को सम्हालती है ।
सतमतरि—एक पक्षी । सात पति वाली ।
सतपुतिया—तोरई की जाति की एक सब्जी ।
सतमासू—सात मास में पैदा होनेवाला ।
सतरखी—होशियारी । आगे से सब काम सम्हालना ।
सतुआनी—बिसुआ । मेष संक्रान्ति ।
सतुआइन—सत्तू का स्वाद ।
सत्यानास—सर्वनाश ।
सदाबरत—दूसरों के खिलाने का दान या दैनिक व्रत ।
सदाबरती—सदाबरत बाँटनेवाला ।
सनक—धुन । मस्ती ।
सनकना—पागल होना ।
सनकी—पागल । मस्त ।
सनाहा—रेशा युक्त । सन से भरा हुआ ।
सनीचर—शनिवार ।
सनीचरी—शनिवार का ।
सनेस—भेंट । उपहार ।
सपरना—निकट भविष्य में काम आरम्भ करने का चिन्तन ।
सपासप—हवा का जोर । जल्दी-जल्दी जाने की ध्वनि ।
सबई—आटे का गुण से युक्त एक पकवान ।
सबतरि—सब जगह ।
सबद—आवाज ।
सबदगर—स्वादिष्ट ।
सबाद—स्वाद ।
सबारी—यान । विविका । यान पर चढ़ने वाला व्यक्ति ।
सबासिन—वहन पूजादि के लिये मन्दिर में प्रयुक्त ।

सबुर—धैर्य । सब्र ।
समंगगर—पारिवारिक व्यक्तियो से भरा-पूरा ।
समइला—जूआ के कोने के छेद मे दी जाने वाली कील ।
समगरदा—मिलाजुला कर । एकसाथ ।
समतूल—समान । वरावर ।
समधर—हर का निचला भाग, जहाँ उसके तीनो हिस्से जुडते हैं ।
समधी—(समधिन-स्त्री०) वर या कन्या के पिता ।
समनपुरिया—श्रावन मे कन्या के ससुराल से आया हुआ वस्त्रादि का उपहार ।
समांग—पारिवारिक व्यक्ति ।
समाँठ—मूसल ।
समाहत—समर्थता ।
समाध—सम्वाद ।
समारना—संवारना ।
समिश्राना—तम्बू । रउटी ।
समूचा, **समुचा**—पूरा ।
समैला—जुआ मे दी जानेवाली कील ।
समौश्रा—ढेंकी के अग्र भाग मे लगाया जानेवाला मूसल का लोहा ।
सरकंडा—नरकट ।
सरकना—घुसकना । खिसकना ।
सरकाना—खिसकाना ।
सरका, **सरकी**—सरपत ।
सरगचादनी—आश्विन पूर्णिमा की चादनी ।
सरदर—वरावर ।
सरदिश्राह—जल्द सर्दी से पीडित होने-वाला ।
सरधा—श्रद्धा ।
सरपत—सरकडा । सिरकी ।
सरबती—शर्वत के रग का ।
सरवेटा—साले का वेटा ।
सरहँची—शाक विशेष ।
सरह—रिवाज ।
सरहज—साला की स्त्री ।
सरही—छोटा गगारट ।
सराप—शाप ।
सरापना—अभिशाप देना। अपशब्द कहना ।
सराफ—रुपया भुनाने वाला दूकानदार सोना-चादी विक्रेता ।
सरि, **सरिया**—सरपत । सिरकी । झलास ।
सरिकदारी—सरीकी । साझेदारी ।
सरिश्राती—कन्या पक्ष का आदमी, जिसके यहाँ वारात आती है ।
सरेख—वयस्क । युवक ।
सलरी—दलदल करनेवाली जमीन ।
सलसल—फूला । भीगा ।
सलूका—कुरती । वडी ।
सलोना—सुन्दर ।
सलोनो—श्रावणी पूर्णिमा का पर्व ।
सल्लेसल्ले—धीरे-धीरे ।
सवाइ—सवाया ।
सहकना—शोख होना । वहकना ।
सहजोर—मजबूत ।
सहमिलू—मिलनसार ।
सहरपनाह—नदी के दोनो ओर का वाध ।
सहे सहे—धीरे धीरे ।
सहेजना—सम्हारना ।
साँइ—स्वामी । मुसलमान फ़कीर ।
सांकर—सकीर्ण ।
सांख—एक प्रकार की मैदे की निमकी ।
सांखड़—साँप का एक प्रकार ।

साँथा—सूत का बिना बाना बैठा हुआ भाग । किसी वस्तु को ढाकने का ढक्ना ।

साँझिला—बड़े और छोटे के बीच का ।

साँट
साँटा —कोड़ा ।

साँटिया
साँटी —सटुली । छड़ी ।

साँठ गाँठ—दोस्ती । साभिप्राय मेल-मिलाप ।

साँड़—बिना बधिया किया हुआ बैल ।

साँड़—हल और पाटो को मिलानेवाला हिस्सा ।

साँसत—कष्ट ।

साइत—संयोग ।

साग—शाक ।

साज—सजावट । सामान ।

साझा—हिस्सेदारी ।

साट—ऊपर से लगा हुआ कोप । छटना ।

साठा—साठ वर्ष का ।

साठी—एक धान्य विशेष ।

साढ़—साली का पति ।

सानी—पानी में भिगोया हुआ भूसा ।

सामा—एक घास ।

सामियाना—तम्बू । रावटी ।

सामीकोना—(कोना सामी) घर का संकीर्ण कोना ।

सारू—लाल रंग ।

सावन—श्रावण ।

सावज—घोड़ जोड़े की वस्ती ।

सावें—सवाँ घास ।

सिंगरिफ—एक खनिज औषधि

सिंगारहार—हरसिंगार पुष्प ।

सिंगी—मछली विशेष ।

सिंघा—बाजा विशेष ।

सिंधोरा—सिन्दूर की डिबिया ।

सिआई—सिलाई ।

सिआर—शृगाल ।

सिकड़
सिकड़ी —जंजीर ।

सिकमी—वह खेत जिसकी उपज आधा मालिक आधा रखत लेते हैं ।

सिक्का—मुद्रा ।

सिकार—शिकार । मांस ।

सिझले—पके हुए ।

सितुआ
सितुई —एक कीड़ा विशेष का ऊपरी खोल ।

सिपर—मुहर्रम के समय बनाया जानेवाला ढाल ।

सिपाहा—गाड़ी खड़ा कर ऊपर रखने की दो लाठी ।

सिवरात—शिवरात्रि ।

सिमसिम—रिमरिम (हल्का छींटा) स्वाद । हल्का भाग ।

सिमाना—सरहद ।

सिरका—फल आदि के रस से तैयार किया गया अम्ल द्रव ।

सिरकी—सरपत ।

सिरताहा—स्वार्थी ।

सिरमानी—एक अचकन जैसी पोशाक ।

सिरायल—ठंढा ।

सिरिपंचमी—माघ शुक्ल पंचमी ।

सिरिस्ता—रिवाज । काफिल ।

सिरौर—सेवार ।

सिलपट—चिकना ।

सिलवर—एक धातु ।

सिल्ला—लकड़ी का सिलेण्ड (टुकड़ा) । (सिल्ली—स्त्री)

सिल्ली—अनाजादि का ढेर ।

सिलसिला—क्रम ।

सिलौट—पीसने का पत्थर।

सिसवन
सिसवाडी }—सीसो की वाडी।

सिसिआना—सीसी आवाज करना।
सिसोहना—निचोड कर तोडना।
सिहकना या सिहुकना—डरना।
सिहरना—रोमाञ्चित होना।
सिहरी फटना—भय हटना। अभ्यस्त होना।
सिहाना—किसी की समृद्धि पर जलना।
सिहुलो—शरीर पर एक धब्बा।
सीक—तिनका।
सीकी—पतला तिनका।
सीटना—चिकनाना। चिकनी चुपडी वात करना।
सीठी—किसी वस्तु का रस गाडने के वाद का शेपाश।
सीम—एक तरकारी।
सीसा—कांच।
सीसी—काच की वस्तु, जिसमे कुछ रखा जाय।
सीसो—वृक्ष विशेप।
सुंघनी—सू घने की वस्तु।
सुकुरगोसाई—शुक्र तारा।
सुखवन—किसी चीज को सुखाने मे उसकी कमी।
सुखौता—सब्जी आदि का सुखाया हुआ रूप।
सुगना—सुग्गा।
सुगबुगाना—हिलना डुलना।
सुघर—सुन्दर। चतुर।
सुघरिन—होशियार। चतुर नारी।
सुजना—सज्जन। भद्र।
सुजनी—खेंदरा। एक विछावन।
सुजस—सुयश।

सुझराना—सुलझाना।
सुतना—अधिक सोनेवाला। (सुतनी—स्त्री०)

सुतरी
सुतारी }—सुतली।

सुतार—वढिया सयोग। किसी काम मे अच्छा अवसर।
सुथनी—एक कद।
सुदिन—अच्छा दिन।
सुनगुन—प्रारम्भ।
सुपरी—मेटिया (Small jar)
सुपली—छोटा सूप। पैर का तलवा।
सुबुक—वहुत हल्का।
सुबरन—सोना।
सुभा—सदेह।
सुभीता—सुविधा।
सुरंग—अच्छा रग। छेद।
सुरखुरू—खैरखाह।
सुरखी—लाली। ईंटो का चूर।
सुरजाहु—विवाह के पूर्व सूर्य-पूजा।
सुरता—याद। स्मरण।
सुरफुर—चटपट।
सुरसुर—सर्दी।
सुरसुरी—सर्दी के कारण गले मे सुरसुराहट।
सुराक—छेद।
सुराख—छेद। फेर।
सुराही—मिट्टी का जल-पात्र।
सुरुकना—नाक या मुँह से पीना।
सुलफा—विना तवा रक्खे सूखा तम्वाकू चढाने की एक विधि।
सुस्ताना—आराम करना। थकान मिटाना।
सुसुआना—तीती वस्तु खाने पर सू-सू करना।
सुसुम—हल्का गर्म।
सूढ़—डक। हाथी का मुखाग्र।
सूढ़ गड़ाना—डंक मारना।

सूआ—सुग्गा।
सूद—ब्याज।
सूदी—ब्याजी। महाजनी।
सूझना—दिमाग में किसी बात का आना।
सूप—अनाज फटकने के लिये बाँस का बना छपरा।
सूल पड़ना—दस्त होना।
सूरजमुखी—एक फूल।
सेमार—पानी पर फैलने वाली घास।
सेआह—काला।
सेआहा—रोजनामचा बही। हिसाब किताब की बही।
सेआहा करना—हिसाब ठीक करना।
सेह—वही।
सेओ—वही। सेब।
सेख—मुसलमानों की एक जाति।
सेखी—शेखी। घमंड।
सेज—शय्या।
सेझियादान—मृतक श्राद्ध के अवसर पर खाट आदि का दान।
सेरही—ज्येष्ठ भंडारा।
सेवाती—स्वाती (नक्षत्र)।
सेहुला—सेहरा। मौर।
सेहो—वही।
सैंतना—जोगाना। सम्हाल कर रखना।
सैंगर—बटोरनेवाला। फेंकने वाला।
सैन—धीवरों के देवता।
सैराबी—वह जमीन जो बाढ़ जाने पर डूब जाती हो। भीगा। आर्द्र। पानी पटाने का एक स्रोत।
सोंस—पानी का एक जानवर।
सोंबा—एक स्वाद विशेष।
सोआ—एक साग विशेष।
सोझ या सोझा—सीधा।
सोझराबत—सुलझा हुआ।
सोझा—ग्रनसोख। हस्तलाघव।
सोख—शोख। छोकलेलेका।

सोखा-सोखाइन—एक देवता और उसकी स्त्री।
सोग—शोक।
सोच—चिन्ता।
सोटा—डंडा।
सोता—सोत।

सोती }
सोई } —सोना बन्द गोत।

सोफा—(कोठा-सोफा) अट्टालिका।
सोर—जड़।
सोरा—एक द्रव्य।
सोरी—जड़।
सोहगैला—सिन्दूर पात्र।
सोहनी—निकौनी।
सोहर—जात कर्म संस्कार का गीत।
सोहराई—दीवाली।
सोहरना—छोटना।
सौंप—सीप।
सौंसे या सौंसा—समूचा।
सौ—एक सौ की गिनती।
सौख—शौक।
सौगात—भेंट। उपहार।
सौत—सपत्नी।
सौतियाडाह—सौतों का द्वेष।
सौतेला—सौत का (बेटा)।
सौदागर—व्यापारी।

सौर }
सौरी } —प्रसूती गृह।

ह

हँकरना—जानवरों का चोंकरना।
हंकारिया—पुकार।
हँकारना—पुकारना।
हँकारी—पुकार।
हंगामा—बखेड़ा। पुकार।

हँड़िया—मिट्टी का गोल वर्तन ।
हँपोरना—मुह भरकर खाना ।
हँफना—श्वास वेग से लेना-छोडना ।
हँसारत—हँसी का होना । शिकायत ।
हँसी-ठट्ठा—दिल्लगी । मजाक ।
हँसी-ठठनुआ—दिल्लगीदार । मजाक करने वाला सम्बन्धी ।
हँसुआ—तरकारी काटने का लौह यंत्र ।
हँसुली—गले का एक गोल ठास आभूषण ।
हँसोतना—किसी वस्तु को जल्द जल्द इकट्ठा करना ।
हँसोरना—अधिक वस्तु हथियाना ।
हइ या हउ—है ।
हओ—किसी पशु को रोकने की ध्वनि ।
हउआ—भकोल । डरावनी वस्तु ।
हउआना—जल्द जल्द करना ।
हउआति—हडबडा कर लेना । हडबडाहट ।
हकमक—वश । अधिकार ।
हकबकी—घबडाहट ।
हकलाना—तुतलाना ।
हकहक—शरीर मे कमजोरी की अनुभूति ।
हकहकी—शरीर की कमजोरी ।
हकासल—भूखा । थका ।
हकासल-पियासल—भूखा-प्यासा ।
हगुअत—नोचनी नाम का चर्म रोग ।
हचकी—गड्ढादार (रास्ता), जिसमे पहिया फँसता हो ।
हजरिया—हजारवाला ।
हजाम—ठाकुर । नाई ।
हजारा—हजार छेदवाला । फौव्वारा ।
हट्टाकट्टा—मजबूत । दृढ ।
हठ—दुराग्रह ।
हठी—दुराग्रही ।
हड़कडकी—एक लता, जो पेड पर फैलती है ।
हड़कना—भडकना ।
हड़कम्प—हाड मे कँपकपी । आतंक ।
हड़कौड़ी—कौडी का प्रभेद ।
हड़गर—हाडवाला ।
हड़बड़—जल्दी मे ।
हडबड़ायल—जल्दी मे लगा हुआ ।
हड़बड़ी—जल्दी ।
हडमुँहा—कुरूप ।
हत
हथ —एक उपेक्षा ध्वनि ।
हत्था—केले के घउद का अंश ।
हत्थाबाँही—हाथापाई ।
हथकड़ी—हाथ बाधने की गोल कडी या जजीर ।
हथछूट—हाथ छोडनेवाला । मारनेवाला ।
हथड़ा या हथरा—जाँता पीसने के लिये बनी लकडी की कील ।
हथपैंचा—बिना लिखा-पढ़ी का ऋण ।
हथफेर—दो चार दिन के लिये लिया हुआ ऋण ।
हथलपक—हाथबढाकर चीज को लेनेवाला ।
हथिनी—हस्तिनी ।
हथिया—हस्ति नक्षत्र ।
हथियार—औजार । अस्त्र-शस्त्र ।
हथिसार—हाथी के रहने का घर ।
हथैला—ईख का रस जमा करने का वर्तन ।
हथौंकड—बैलो की रास (रस्सा) जिससे उन्हे घुमाया जाता है ।
हथौड़ा या हथौडी—ठोकने की लौह-मुगदी ।
हद—सीमा ।
हदहद—घबडाने की एक अनुभूति । अनाज सीझने की ध्वनि ।
हदबदायल—जल्दी मे घबड़ाया हुआ ।
हदबन्दी—सीमा को बाधने का कार्य ।
हदबदाहा—कोई काम मे जल्दी करनेवाला ।
हदियाना—भीरुता से घबडाना ।

हुनियाहा—भय से आक्रान्त ।
हुनहुन—रोष की ध्वनि ।
हुनहुनाना—आवाज करते हुए रोष प्रकट करना ।
हुपटना—पशुओं द्वारा पौधों को खाया जाना ।
हुपहुपाना—मुँह से आवाज करते हुए जल्दी बात करना-बोलना ।
हुथियाना—किसी वस्तु को अपने अधिकार में कर लेना ।
हुबकना—दाँत से लेने के लिये झपटना ।
हुबहुमिए—पेटभुखिए । हुबकने की दशा में । पेट के बल से ।
हुबगाव—समझ बूझ । विवेक । इच्छा ।

हबर हबर
हबर हबर —जल्दी-जल्दी ।

हबेली—मकान किला । महल ।
हम—अभिमान । उत्तमपुरुष का सर्वनाम ।
हर—कृषि का मुख्य यन्त्र ।
हरकत—बाधा ।
हरकना—भरकना । सूखना ।
हरकारा—डौकाहा । दूत ।
हरखाहु—चंचल स्त्री ।
हरताल—एक पीला खनिज पदार्थ ।
हरदम—सदा । हमेशा ।
हरदिमाहू—हल्दी युक्त ।
हरदिमाइन—अधिक हल्दी से लिपटा हुआ ।
हरदी चढ़ाना—विवाह की एक मंगल विधि ।
हरवाहा—हल चलानेवाला ।
हरवाही—हल चलाने का कार्य ।
हरमजदगी—शरारत । बदमाशी ।
हरमजादा—एक गाली ।
हरमोस—मोटा । मजबूत ।
हराठा—काम से जल्द नहीं थकनेवाला । सुकुमार नहीं ।

हराम—परेशान । हैरान ।
हरानी—परेशानी । हैरानी ।
हरारत—थकावट ।
हरासल—थका ।

हराहरी
हाराहरी —सौतन ।

हरिअर—हरा ।
हरिअर कचूर—खूब गहरा हरा ।
हरिअरी—हरी घास या अनाज का पौधा जो चारा के योग्य हो ।

हरिस
हरीस —हल में लगी पाटी जो पालो से बाँधी जाती है ।

हलखोर—मल साफ करनेवाली एक जाति ।
हलगर—हल्ला योग्य ।
हलचल—आन्दोलन ।
हलचली—आन्दोलन की गति ।
हलफल—कार्य में सहायता ।
हलबल—हलचली ।
हलबलिया—कार्य में सहायता पहुँचानेवाला ।
हलुक—हौला । हलका ।
हहरना—भैरवा से हृदय का प्रकम्पित होना । जी छोटा होना ।
हहास—जोर की आँखों की आवाज । किसी की समृद्धि पर ललकर बोलना ।
हाँकना—जानवर या गाड़ी को चलाना ।
हाँ हाँ—स्वीकृति की ध्वनि ।
हाँड़ी—मिट्टी का गोल बर्तन ।
हा हा—पश्चाताप की ध्वनि ।
हाय हाय—पश्चाताप की ध्वनि ।
हाकिम—राज्यकर्मचारी । मालिक ।
हाजिर—मौजूद ।
हाजिरी—मौजूदगी ।
हाट—बाजार ।
हाड़-गोड़—हड्डी पुड़ी ।
हाड़-माँस—हड्डी और मांस ।

हाता—घिराया।
हाथाबाँही—हाथापाई।
हाबडाप—प्रभाव जमाने के लिये वागाडम्बर का प्रदर्शन।
हाबरदूबर—कमजोर।
हापाडाबा—बच्चों के पेट का एक रोग।
हावादार—हवायुक्त। हवादार।
हाबिर—होशियार। जाबिर।
हार—माला।
हाल—जमीन की नमी।
हाली—जल्दी।
हाहिल—प्राप्त।
हाहाकार—घबडाहट की ध्वनि। आतंक।
हाहिवहना—जोर की आंधी बहना।
हिकमत—कारीगरी।
हिकमती—कारीगर।
हिछा—इच्छा।
हिफाजत—रक्षा।
हिरामन—एक प्रकार का तोता।
हिलकोरना—पानी जैसी वस्तु को चलाना।
हिलसा—मछली विशेष।
हिलिमिलि मिलजुलकर।
हिसाबी—हिसाब रखनेवाला।
हींग—एक पेंड का गोंद, जो औषधि के काम मे आता है।
हींछना—दूसरे की समृद्धि पर जलना। अपने दुःख को वारवार व्यजित-करना।
हीर—मुख्य। दृढ भाग।
हुँकारना—भय युक्त जोर की ध्वनि।
हुँकारी भरना—हाँ हाँ करना।
हुआहुआ—गीदड की बोली।
हुकना—किसी चीज के लिये बकना या कलपना।
हुकरना—हूँ हूँ आवाज करना।
हुकारी—हाँ हाँ करना। श्रोता का एक शकुनतकिया।
हुकहुक—थोडा-थोडा प्राण रहने की ध्वनि।
हुकहुकी—अल्प प्राण का सकेत।
हुक्का—तम्बाकू पीने का यंत्र।
हुचुक्का—जोर से धक्का।
हुड्ड—ढोंगी। मल्हड।
हुडकाह—मरखड। मारने वाला। छेड़-खानी करनेवाला।
हुड़ार—शृगाल। एक जगली जानवर।
हुकहुकाना—थोडा-थोडा प्राण रहने का सकेत मिलना।
हुकबुक—हडबडी।
हुज्जत—झगडा।
हुज्जतिआह—झगडालू।
हुदुक्का मारना—मुट्ठी बाधकर अगूठे से धीरे से चोट पहुँचाना। भीतरमार।
हुमड़ना—घुमडना।
हुमाद—होम।
हुमचना—पैरो के बल से दवाव देना।
हुरदुंग—हलचल युक्त शैतानी।
हुरदुंगी—हल्ला करने वाला।
हुरींमारना—घूसा मारना।
हुरपेटना—किसी चीज के लिए वार-वार तंग करना।
हुरहुर, हुलहुल—हुलचुली। विना काम का काम।
हुरहुरी—विना काम के काम का भाव।
हुराठ—केहुनाठ।
हुराठा—काम करने के लिये हुरपेटना।
हुराड—सियार।
हुलकना—झांकना।
हुलकी—झांकी।
हुल्लड—हल्ला।
हुलसना—उल्लसित होना।

हुलास—उल्लास ।
हुहुआना—जाड़े के कारण हु-हु की ध्वनि करना ।
हूरना—हूँसना । हूरकर मारना ।
हूराहूरी—मारामारी करना ।
हूल—वमन । हूलने की क्रिया या भाव ।
हेंगा—चौकी जिससे जोती हुई जमीन चिकनाई जाती है ।
हेंठे—नीचे ।
हेठार—अकेला ।
हेरना—देखना ।
हेराना—भुलाना ।
हेरफेर—बदला-बदली ।
हेलना—प्रवेश करना । पानी में तैरना ।
हेलमेल—मेल-जोल ।
हेहर—पेमर ।
हैकल—एक आभूषण ।
हो—पुकार की ध्वनि ।
हो हो करना—जोर से दूर गये व्यक्ति को पुकारना ।
होम—यज्ञ ।
होरी या होली—एक पर्व या गीत ।
होसगर—चतुर । सयाना ।
होशीयारी—चालाकी ।
हौ करना—पशु को रोकना ।
हो हो—ठहराने की ध्वनि ।
हौंकना—पंखा झलना ।
हौदा—हाथी की पीठ पर रखी जानेवाली शिविका ।

शुद्धिपत्र

उपोद्घात

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	ग्रियसन	ग्रियर्सन	१५	२१	वगला	बंगला
४	११	बेद्	वेद	१७	२१	सूचनाऍं	सूचनाएँ

मगही व्याकरण

पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
१	१६	—	मुँ	५७	८	सदेहाय	सदेहाथ
१३	१	नद्दा	नदी	५७	१६	केतार्थ	संकेतार्थ
१५,१६,२१, २२,२५,२८,		आपा०	अपा०	६२	पादटि०	माना है	मानते है
				६३	५	क	के
३७	२१	उद्दश्यपूर्ति	उद्देश्यपूर्ति	६४	१४	केतार्थ	संकेतार्थ
४१	११	आज्ञाय	आज्ञार्थ	६६	२१	सभा	सभा
४३	पादटि०	ग्रियसन	ग्रियर्सन	८५	१६	बाधा दिया	बाधा दी
४५	४	भव्यवन्‌	भविष्यत्				

शब्दकोश

पृ०	स्तम	पं०	अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	स्तभ	पं०	अशुद्ध	शुद्ध
३	१	२५	ऊँची हो	ऊँचा हो	२५	१	६	तालने	तौलने
७	२	१७	टापी	टोपी	२६	१	२६	व्यावहृत	व्यवहृत
६	१	६	कसली	कसैली	२६	१	३६	कामल	कोमल
१०	१	४	शिरा	सिरा	२७	१	२६	फुला	फूला
१०	१	२४	चाई	चाईं	२७	१	३४	कुए	कुएँ
११	१	१३	कोना	कोने	२८	१	१६	खासी	खाँसी
१२	१	१४	हे	हैं	२९	२	३१	लड़का	लड़कों
१२	२	३४	का कील	की कील	३०	१	१८	कपड़ा	कपड़े
१६	१	८	का	की	३१	२	१५	दुध दुहने	दूध दूहने
१८	२	८	ऍड़ीदार	एड़ीदार	३१	२	२५	दुकान	दूकान
१९	२	१२	कै	के	३१	२	३३	दो पल्ला	दो पल्ले
१९	१	१६	कुष्ट	कुष्ठ	३२	२	३१	का तौल	की तौल
२१	२	१६	सिटकनी	सिटकिनी	३५	२	२०	का	की